Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आतिश की शायरी

मातृ भाषा मन्दिर प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

आतश की शायरी

Aatash Ki Shaeri
Shaeeri

अनुवादक

"दुपद"

Durupad.

Sh. Ghulam Mohamad & Sons.
Book-Sellers, Publishers & Stationers
Govt., Order Suppliers,
Maisuma Bazar, SRINAGAR KASHMIR.

SPS
891.431 D 96 AA
23268

प्रकाशक

मातृ-भाषा-मन्दिर, इलाहाबाद

M. M. Mandir

प्रथम संस्करण] Allahabad. [मूल्य २)

Rs 2/-.

1959

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक
हर्षवर्द्धन शुक्ल
व्यवस्थापक
मातृ-भाषा-मन्दिर, इलाहाबाद-३

Acc. No 23968
Cost Rs. 2.00
Date 13.3.64

Sri Partap Singh Library Srinagar

89

मुद्रक
पन्नालाल सोनकर
राष्ट्रीय मुद्रणालय,
१ सम्मेलन मार्ग इलाहाबाद-३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो शब्द

उदू कविता की लखनऊ परिपाटी में ख्वाजा हैदरअली आतश का एक विशेष स्थान है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं की कविताओं का संग्रह है। आतश लखनऊ के रहने वाले थे उनके पिता ख्वाजा अली बख्श दिल्ली के रहने वाले थे। परन्तु वह दिल्ली से फैजाबाद आये और वहीं आतश का जन्म हुआ।

स्वभाव से ही आतश आन-बान के आदमी थे खानदान में सभी सिपाही थे और इसीलिये कभी किसी के सामने सिर झुकाना या हाथ पसारना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकल समझते थे। मनुष्य के नैतिक उत्थान पर बहुत जोर देते थे और स्वयं फ़क़ीरों की तरह जीवन व्यतीत करते थे। यही बातें उनकी कविताओं में हर जगह स्पष्ट है कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

दो न्यामते मेरी हैं मैं हूँ फ़क़ीर मस्त।
एक नान खुश्क़ एक प्याला शराब का॥
बरंग साया गुज़र शाह राहे हस्ती से।
किसी के दोश का आतश जनाजा बार न हो॥

ईश्वर चिन्तन और इसी के उपदेश उनकी कविताओं में बहुधा दिखाई देते हैं।

अंधेर है न होवे अगर दिल में रोशनी।
आतश चिराग़ कौन से घर में नहीं जला॥

कविताओं की अपनी शैली के बारे में लिखते हैं:—

मकीं हर मानिये रोशन मकां हर बेत मौज़ूं है।
ग़ज़ल कहते नहीं हम चन्द घर आबाद करते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनुष्य के चरित्र निर्माण पर आतश बहुत अधिक जोर देते हैं। लिखा है :—

गुफ्तगूये अहले ग़फ़लत की हक़ीक़त कुछ नहीं।
ख्वाब में चिल्लाये हर चन्द आदमी खामोश है॥

तरह-तरह के चुलबुले, कोमल, अर्थ पूर्ण भाव किस आसानी से और कितने आकर्षक ढंग से कह जाते हैं इसके नमूने देखिये:—

× × ×

ए तपे ग़म गोर में ले चल जवानी में मुझे।
दोपहर है मौसमे गर्मा में वक्त आराम का॥

कितनी कोमल कल्पना थी। वाह!

और देखिये।

आये भी लोग बैठे भी उठ भी खड़े हुये।
मैं जा ही ढूढ़ता तेरी महफ़िल में रह गया॥

× × ×

एक शब बुलबुले बेताब के जागे न नसीब।
पहलुये गुल में कभी ख़ार ने सोने न दिया॥

× × ×

बड़ा शोर सुनते थे पहलू में दिल का।
जो चीरा तो एक क़तरये खूं न निकला॥

× × ×

दूर करवाया पसीने ने नक़ाबे गुल अज़ार।
क़तरये शबनम भी दीवारे चमन जाने लगे॥

× × ×

आशा है पाठकगण आतश की शायरी का विशेष रूप से आनन्द उठावेंगे!

वर्ष प्रतिपदा
प्रयाग

द्रुपद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय-सूची

भाग १

हुबाब आसा मैं दम भरता हूँ	१	चमन में शब को जब	२३
हुस्नपरी इक जलवये मस्तानाहै	२	रंज व राहत का मेरे	
मुहब्बत का तेरी बन्दा हरएक	३	आलूदा बे गुनाहों के खूँ से	२३
ए जुनूँ दश्ते अदमके कूच का	४	ईसा से नाला दरदे दिल	२४
चाँदनी में जब तुझे याद ए	५	कूचये यार में किस रोज़	
मेरी आँखों के आगे आयेगा	६	पीरी ने करे रास्त को	२५
दिल छुटके जाँ से गोर की	७	कीजिए बर्क़ तजल्ली	२५
सुन तो सही जहाँ में है	८	ऐसी वहशत नहीं दिल को	२६
वहशत आगीं है फ़साना मेरी	९	कहीं छुट भी सके आलाइशे	२६
रात को मैंने मुझे यार ने	१०	रुख़ व जुल्फ़ पर जान	२७
ग़म नहीं गो ए फलक़ रुतबा	११	गोश ज़द जिसके तुम्हारी	२८
तोड़कर तारे निगह का	१२	बुलबुल को साज़बार	२९
हश्र को भी देखने का	१३	तेरी जुल्फ़ों ने बल खाया	३०
कोई इश्क में मुझसे	१४	मर गये पर न असर	३०
करम किया जो सनम ने	१४	गुल से जो सामना तेरे	३१
दिल शहीदे रहे दामां	१५	तेरी मस्ताना आँखों की	३२
ख़याल आया जो इश्क़े जुल्फ़	१५	सूफ़ियों को वज्द में	३२
भड़काया था यह कैसा	१६	बलाये जान मुझे हर एक	३३
मैंने उरियाँ तुझे ए रश्के	१७	जुल्म से अपने पशेमां	३४
बर्क़े खिरमन था कभी नाला	१७	बाग़ में मैं बुलबुलों को	३४
आशियाना हो गया अपना	१८	दिलशबे फ़ुरकत में है	३५
जो क़नाअत के मज़े से	१८	शौक अगर कूचये महबूब	३५
उसके कूचे में मसीहा	१९	खत से उस रुख़ का	३६
है जब से दस्ते यार	२०	बेहतर दिखाई दे कहीं	३६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोया ज़ुबान शमा जो	३७	तुझसा कोई ज़माने में	५१
नज़र आता है मुझे अपना	३७	खुदा बख्शे सनम यह कहके	५२
फस्ले गुल है लूटिये	३८	मुमकिन नहीं है दूसरा	५३
हिज्र से कब जाते हैं	३८	चश्मे मस्ताना की गरदिशसे	५४
क्या समझ कर रौंदते हैं	३९	तेरी खुश चश्मी का	५४
ख़ाक हो जाती है जलकर	४०	इसशश जहत में खूब	५५
सुबह तक चलती है	४०	शरफ़ बख़्शा गुहर को	५६
रात भर जलता है यह	४१	हमेशा तलवे खुजलाय।	५७
ग़ैरते महर रश्के माह	४१	छोड़िये तौबा को कीजे	५७
वहशी थे बूये गुल	४२	दोस्त ही जब दुश्मने जां	५८
उठ गये वस्ल शब	४२	शफ़ा मरीज़े मुहब्बत	५८
जोश वहशत में जो हों	४३	न सुना था सो वह	५९
चमन में रहने दे	४३	तेरे सिवा कोई तरकीब	६०
जहां व कार जहां से	४४	मारा है बख़्त ने मुझे	६०
इश्के क़मर का किस्सा	४४	साफ हो हर चन्द	६१
तुम जो जा निकले नसीमे	४४	दिले बेताब को फ़रियाद	६१
बदन सा शहर नहीं दिलसा	४५	जोर व जफ़ाये यार से	६२
बर्क़ को उस पर अबस	४६	ठोकरें यार के मुर्दों को	६२
हुआ था उसको ऐसा लुत्फ़	४६	हवस न्यामत की बादे	६३
शराब बेखुदी ऐसी	४७	फ़कीरी सलतनत है	६३
मेरी जिद से हुआ है	४७	निकलती किस तरह है	६४
आशना मानो से	४७	रहनुमा यादे इलाही का	६५
अजल आ वरना अब	४८	देखा है सुबू को जो धरे	६५
बुतों के गेसुओ मिज़गा	४९	पास दिल रखता है मंज़ूर नज़र	६६
तसव्वर से किसी के मैंने	५०	मयख़ानये उल्फ़त में नहीं	६६
चांद से मुँह का तेरे	५०	मंज़िले मकसूद का सौदा	६७
दिल की कदूरतें अगर	५०	खुदा याद आ गया मुझको	६७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूर करवाया पसीने ने ६८
कूचये दिलवर ७०
शौक़े वसलत में हैं शुग़ले ७१
कब तक वह ज़ुल्फ़ देती है ७३
कौन से दिल में ७४
रंग जो कुछ भी चाहें ७६
वक़्त फ़ुर्सत को ग़नीमत ७७
ये पर मुझे फ़लक ने किया ७८
रफ़्तगां का भी ख़्याल ७९
असर रखती मये गुलगूँ ८०
काम हिम्मत से जवां ८१
अल्ला री रोशनी ८२
कभी जो जज़्ब मुहब्बत ८३
हमेशा झाड़ते हैं ८४
एड़ियों तक तेरी चोटी ८५
गुल क़बा पर हो ८६
सामना जब इस मसीहा ८७
गुल से अफ़ज़ मेरी ८८
हाल दिल होते हैं हसरत ८९
चली है ऐसी ज़माना ९०
मंज़िले गोर अब मुझे ९१
ए सनम महर व वफ़ा ९२
रूये खुरशीद से ९३
दूर इतना भी बस ए मंज़िले ९५
बरंगे गुंचये पज़ मुर्दा ९६
मुर्दमे दीदा रहे ९७
शान व शिकोह ने ९८
आबे शमशीर दवा ९९
कौनसा बाल है उस ज़ुल्फ़ १००
दीवाना इक परी का है १०१
तेरी अबरूये पयवस्ता का १०२
दिल को घर उस गुल की १०३
यह वसीयत न मेरी १०४
ख़ाक होने से दरे दिलदार १०५
मुर्ग़े दिल को हदफ़े १०६
ज़ाहिर है यह ऐयार १०७
चमन में जाके किन १०८
शबे फुरकत में १०९
वाक़िफ़ हुई ख़िज़ां ११०
ख़िरमने उम्र जले १११
ए सनम जिसने तुझे ११३
बेखुद है यार दौलते ११४
ख़्वाहां तेरे हर रंग में ११५
यह किस रश्के मसीहा ११६
जरस के साथ दिल ११७
ज़ेरे ज़मीं भी चैन की ११८
बाज़ार दहर में तेरी १२०
लख़ते जिगर को क्योंकर १२१
मौत को समझे रहे १२२
नौजवानी की पीरी १२३
आंख आईना से तुमने १२४
नाफ़हमी अपनी पर्दा है १२५
जो कुछ अज़ाब ज़ेरे १२६
रहता है फ़िक्र ताज़ा १२७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निगहते गुल से मुझे	१२८	रुख हो खते रुखसार से	१४१
हज़ार तरह से साबित है	१२६	हरते शादी नहीं जाने ग़म	१४३
न्याज़ मन्द न होता तो	१३०	परदये ग़फलत उठा	१४४
हुस्न से दुनिया में दिल को	१३०	गुन को क़बा ने लाले	१४५
इश्क का आईनये दिल	१३१	बाज़ार दहर में न रही	१४६
खुदा ने बर्क़ तजल्ली	१३१	असीर लुत्फ व करम	१४६
बखा के ख्वान का अपने	१३२	क़दम से बढ़ चले	१४७
गज़ल जो हमसे वह महबूब	१३२	इक हाल पर कभी	१४७
ख़राब फिरते थे आलम	१३३	फ़र्शे गल बुलबुल की नीयत	१४८
तू रोशनीये आलम	१३३	दिल बहुत तंग रहा	१४६
सामने जो पड़ गया	१३४	ज़ख्ने दिल से तेरी फुरक़त	१४६
इश्क के सौदे से पहले	१३४	चमनिस्ता की गई	१५०
इक साल में दस दिन भी	१३५	ज़बीं साई को संगे	१५१
वस्फ़ कीजे जो तेरी	१३६	अनाबे लब का अपने	१५१
तेरी जो याद ए दिल ख्वाह	१३६	दो दिन की ज़िन्दगी	१५२
न तो भूखे हुए थे हम	१३७	बहार आई मुरादे चमन	१५३
लबे शीरीं तक उनके	१३८	तंग आकर जिस्म को एरूह	१५३
एक से एक है तमाशा रंग	१३८	यह सदा आती है	१५४
मुहब्बत कौड़ियों के हो	१३६	मगर उसको फ़रेबे	१५४
आरज़ू है मुझे सिजदे	१३६	जां बख्श लब के इश्क में	१५६
हम फ़क़ीरों को है दीवार	१४०	दहन पर हैं उनके गुमां	१५७
बहारे लाला व गुल से	१४१	सांप का जहर वहगेसू है	१५८
रहा करता है दर्द इकरात	१४१	हवाये दौर मये खुशगवार	१५६
खुरशीद हश्र से है सीना	१४२	तलाशेयार में क्या ढूँढ़िये	१६०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आतश की शायरी

भाग १

हुबाब आसा[१] मैं दम भरता[२] हूँ तेरी आशनाई[३] का।
निहायत ग़म है इस क़तरे[४] को दरिया की जुदाई का॥
असीर[५] अय दोस्त तेरे आशिक़ व माशूक़ दोनों हैं।
गिरफ़्तार आहिनी[६] ज़ंजीर का यह वह तिलाई[७] का॥
ताल्लुक़[८] रूह[९] से मुझको जसद[१०] का नागवारा[११] है।
ज़माने में चलन है चार दिन की आशनाई[१२] का॥
फ़िराक़े यार में मर मर के आख़िर जिन्दगानी की।
रहा सदमा हमेशा रूह और क़ालिब[१३] की जुदाई का॥
हुई मंजूर मोहताजी[१४] न तुझको अपने सायिल[१५] की।
बनाया कासये सर[१६] बाज़गूं[१७] कासा गदाई[१८] का॥
नज़र आती हैं हरसू[१९] सूरतें ही सूरतें मुझको।
कोई आयना ख़ाना[२०] कार-ख़ाना है ख़ुदाई का॥
निकल अय जान तन से ता विसाले यार हो हासिल[२१]।
चमन की सैर है अंजाम बुल बुल को रिहाई[२२] का॥

---

(१) बुलबुले की तरह (२) प्रशंसा करता हूँ (३) मित्रता (४) बूंद (५) बन्दी (६) लोंहै की (७) सोंने की (८) संबंध (९) आत्मा (१०) शरीर (११) असहाय (१२) मित्रता (१३) शरीर (१४) निर्भर होंना (१५) भिक्षुक (१६) खोंपड़ी रूपी प्याला (१७) उल्टा (१८) भिक्षुकों का प्याला (१९) चारों ओर (२०) शीशे का घर (२१) प्राप्त (२२) छुटकारा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरोसा आह पर हरगिज़ नहीं ए यार आशिक़ को।
शिकार अब तक कहीं देखा नहीं तीरे हवाई[1] का॥
नहीं मिटती है पत्थर की लकीर अहबाब[2] कहते हैं।
रहेगा पाय बुत[3] पर नक़्शा[4] अपनी जिबहसाई[5] का॥
शिकस्ते ख़ातिरे अहबाब[6] होती है दुरुस्त इससे।
तवज्जह[7] में तेरे ए यार असर है मोमियाई[8] का॥
दिल अपना आइना से साफ़ इश्क़े पाक[9] रखता है।
तमाशा देखता है हुस्न इसमें ख़ुद नुमाई[10] का॥
कफ़े अफ़सोस[11] मलवाती है तेरी पाक दामानी[12]।
पिन्हा कर शाहिदे असमत[13] को जामा पारसाई[14] का॥
नहीं देखा है लेकिन तुझको पहचाना है आतश ने।
बजा[15] है ए सनम जो तुझको दावा है ख़ुदाई का॥

× × ×

हुस्न परी इक जलवये मस्ताना[16] है उसका।
हुशियार वही है कि जो दीवाना है उसका॥
गुल आते हैं हस्ती में अदम से हमा तन गोश[17]।
बुलबुल का यह नाला नहीं अफ़साना है उसका॥
गिरियां[18] है अगर शमा तो सर धुनता है शोला[19]।
मालूम हुआ सोख़ता[20] परवाना है उसका॥
वह शोख़ निहां[21] गंज[22] के मानिन्द है इसमें।
मामूरये आलम[23] जो है वीराना है उसका॥

---

(१) हवा में चलने वाला तीर (२) मित्र (३) प्रेमिका का पांव (४) चिन्ह (५) माथा रगड़ना (६) मित्रों का हृदय दुखना (७) ध्यान (८) अच्छा करना (९) पवित्र प्रेम (१०) अपने को देखना (११) पछतावे का हाथ (१२) पवित्रता (१३) इज़्जत पर जान देने वाले (१४) पवित्रता की पोशाक (१५) ठीक (१६) मस्त दृश्य (१७) सारा शरीर कान की तरह (१८) रोना (१९) आग की लपट (२०) जला हुआ (२१) छिपा हुआ (२२) खंजाना (२३) संसार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो चश्म[1] कि हैरान हुई आईना है उसका।
जो सीना कि सद चाक[2] हुआ शाना[3] है उसका॥
दिल क़स्र शहंशाह[4] है वह शोख़ इसमें शहंशाह।
अरसा[5] यह दो आलम[6] का ज़िलो ख़ाना[7] है उसका॥
वह याद है उसकी कि भुला दे दो जहां को।
हालत को करे ग़ैर[8] वह याराना[9] है उसका॥
यूसुफ़ नहीं जो हाथ लगे चंद दरम[10] से।
क़ीमत जो दो आलम की है बयाना[11] है उसका॥
आवारगीये निकहते गुल[12] का है यह इशारा।
जामा[13] से जो बाहर है वह दीवाना है उसका॥
यह हाल हुआ उसके फ़क़ीरों से हवेदा[14]।
आलूदये दुनिया[15] जो है बेगाना[16] है उसका॥
शुकरानये साक़ीये अज़ल[17] करता है आतश।
लबरेज़ मये शौक़[18] से पैमाना[19] है उसका॥

× × ×

मुहब्बत का तेरी बन्दा[20] हर इक को ए सनम पाया।
बराबर गरदने शाह व गदा[21] दोनों को ख़म[22] पाया॥
बरंगे शमा[23] जिसने दिल जलाया तेरी दूरी[24] में।
तो उसने मंज़िले मक़सूद[25] को जेरे क़दम[26] पाया॥

---

(१) आँख (२) सौ जगह से फटा (३) कंधा (४) राजा का महल (५) फैलाव (६) दोनों दुनिया (७) बैठक (८) भिन्न (९) मित्रता (१०) पैसे (११) पेशगी (१२) फूल की सुगंध का आवारापन (१३) अपनेपन (१४) प्रकट (१५) संसार से लिप्त (१६) पराया (१७) ईश्वर को धन्यवाद (१८) प्रेम की मदिरा से भरा (१९) प्याला (२०) नौकर (२१) फ़क़ीर (२२) झुका (२३) दीपक की तरह (२४) विरह में (२५) लक्ष्य (२६) पैरों के नीचे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हज़ारों हसरतें[१] जावेंगी मेरे साथ दुनिया से।
शरार[२] व बर्क़[३] से भी अरसये हस्ती[४] को कम पाया॥
सिवाये रंज कुछ हासिल नहीं है इस ख़राबे[५] में।
ग़नीमत जान जो आराम तूने कोई दम[६] पाया॥
नज़र आया तमाशाये जहां[७] जब बंद की आंखें।
सफ़ाये क़्लब[८] से पहलू में हमने जामे जम[९] पाया॥
जलाया और मारा हुस्न की नैरंग साज़ी[१०] ने।
कभी बर्क़े ग़ज़ब[११] उसको कभी अब्रे करम[१२] पाया॥
फ़िराक़[१३]अंजाम[१४]काम[१५]आग़ाज़[१६]वसलत[१७]का बिलाशक है।
बहुत रोया मैं रूह व तन को जब मुश्ताक़[१८] हम पाया॥
हर इक जौहर[१९] में उसका नक़्श पाये रफ़्तगां[२०] समझा।
दमे शमशीर क़ातिल[२१] जादये राहें अदम[२२] पाया॥
हुआ हरगिज़ न ख़ते शौक़[२३] का सामां दुरूस्त आतश।
सियाही हो गई नायाब अगर हमने क़लम पाया॥

× × ×

ए जुनूं दश्ते अदम[२४] के कूच[२५] का सामां किया।
जिस्म के जामे[२६] को मैंने चाक ता दामां[२७] किया॥

---

(१) इच्छायें (२) चिंनगारी (३) बिजली (४) जीवन का मैदान (५) संसार (६) क्षण (७) संसार की दशा (८) हृदय की शुद्धि (९) जमशेद बादशाह का प्याला (१०) विभिन्नता (११) क्रोधी बिजली (१२) दया रूपी बादल (१३) दुख (१४) फल (१५) प्रेम (१६) आरम्भ (१७) मिलन (१८) इच्छुक (१९) चमक (२०) मरे लोगों का पद चिह्न (२१) प्रेमिका के तलवार की धार (२२) परलोक का रास्ता (२३) प्रेम पत्र (२४) परलोक का जङ्गल (२५) यात्रा (२६) कपड़ा (२७) नीचे तक फाड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नालये जांकाह[१] ने पत्थर को पानी कर दिया।
मुर्ग़ व माही[२] को दिले बेताब[३] ने गिरियां[४] किया॥
शाम से ता सुबह[५] नींद आई न तुझ बिन एक दम।
आग नालों ने लगाई अश्क[६] ने तूफ़ां किया॥
ऐ फ़लक[७] मरहून एहसां[८] तू न तेरा मैं हुआ।
शुक्र है मुझको .खुदा ने बे सर व सामां[९] किया॥
आदमी क्या वह न समझे जो सख़ुन[१०] की क़द्र को।
नुत्क़[११] ने हैवां से मुश्ते ख़ाक[१२] को इंसां किया॥
आतशे दिल ख़स्ता[१३] तेरा या इलाही कुछ न था।
क़तरये नाचीज़[१४] को दरियाये बे पायां[१५] किया॥

× × ×

चांदनी में जब तुझे याद ए महे तावां[१६] किया।
रात भर अख़्तर शुमारी[१७] ने मुझे हैरां किया॥
शाम से ढूंढ़ा किया ज़ंजीर फांसी के लिये।
सुबह तक मैंने ख़याले गेसूये पेचां[१८] किया॥
दस्त व बाज़ू[१९] के तसव्वर में हुआ आतश मैं कत्ल।
पाय बोसी[२०] की हवस ने ख़ाक से यकसां[२१] किया॥

× × ×

गुबारे राह[२२] होकर चश्मे मरदुम[२३] में महल[२४] पाया।
निहाले ख़ाकसारी[२५] को लगाकर हमने फल पाया॥

---

(१) हृदय विदसक विलाप (२) पक्षी व मछली (३) बेचैन दिल (४) आंसू बहाना (५) सुबह तक (६) आंसू (७) आकाश (८) कृतज्ञ (९) बेघर वार (१०) वात (११) वोलने की शक्ति (१२) मिट्टी का ढ़ेर (१३) टूटा हुआ दिल (१४) महत्वहीन बूंद (१५) अथाह (१६) चमकता चांद (१७) तारे गिनना (१८) उलझे वाल (१९) हाथ (२०) पांव चूमना (२१) मिलजाना (२२) राह की धूल (२३) आदमी की आँख (२४) स्थान (२५) नम्रता का पेड़।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कशाकश दम[१] की मारे आस्तीं[२] का काम करती है।
दिले बेताब को पहलू में इक गुर्ग[३] बग़ल पाया॥
घड़ी भर रोके कूये यार[४] में ये ज़ंग दिल[५] खोया।
कि कपड़ा जैसे मुफ़लिस[६] ने खड़े घाट आके कलपाया[७]॥
शबे फ़ुरक़त[८] से उम्र रफ़्ता[९] गुज़री बेक़रारी में।
तेरी इमदाद[१०] से आराम हम ने ए अजल[११] पाया॥
शिकस्ता दिल[१२] न हो इंसां एवज़[१३] हरशै[१४] का मिलता है।
मुआ[१५] फ़रज़न्द[१६] अगर तो दाग़े दिल नेमुल बदल[१७] पाया॥
न जाना था चमन की सैर को हमरह रक़ीबों[१८] के।
दिले आशिक़ के तोड़े से भला क्या तुमने फल पाया॥
ग़जब है मंज़िले हस्ती[१९] में आसाइश तलब[२०] होना।
हुजूमे ख्वाब[२१] से रहरु[२२] ने है आख़िर ख़लल[२३] पाया॥
हरारत होती है सरदार से अफ़ज़ूं[२४] सिपाही में।
ज्यादातर मिज़ाजे यार से .ज़ुल्फ़ों में बल पाया॥
हमेशा जोशे गिरियां[२५] से रहा पानी में ए आतश।
कभी ताज़ा न लेकिन अपने दिल का यह कंबल पाया॥

× × ×

मेरी आँखों के आगे आयगा क्या जोश में दरिया।
हमेशा सूरते साहिल[२६] है यां आग़ोश[२७] में दरिया॥

---

(१) सांस की खींचा तानी (२) आस्तीं का सांप (३) भेड़िया (४) प्रेमिका की गली (५) दिल का गन्दापन (६) गरीब (७) धोना (८) विरह की रात (९) बीती हुई उम्र (१०) मदद (११) मौत (१२) टूटा हुआ दिल (१३) बदला (१४) चीज (१५) मरा (१६) बेटा (१७) अच्छा बदला (१८) शत्रुओं के साथ (१९) जीवन (२०) आराम का इच्छुक (२१) कल्पनाओं की अधिकता (२२) राही (२३) विघ्न (२४) ज्यादा (२५) आंसुओं की अधिकता (२६) किनारे की तरह (२७) गोद में।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकाला चाहे ए ग़व्वाज़[1] तो जल्द अब निकाल इसको।
खुदा जाने कि क्या फूंके सदफ़[2] के गोश[3] में दरिया॥
ख़मोशी और गोयाई[4] मेरी इक इक से बेहतर है।
सकूनत[5] में यह क़तरा है गुहर[6] तो जोश में दरिया॥
सरक जाये जो रूये चश्म तर[7] से गोशा दामन[8] का।
न देखा हो किसी ने ऐसा अपने होश में दरिया॥
किया जो ज़बत गिरिया तो किया दरिया को कूज़े[9] में।
कभी दिल खोल कर रोया तो आया जोश में दरिया॥
अगर मोती न बनते क़तराहाये अब्र नेसां[10] से।
तो हल्क़ा[11] डालता आतश सदफ़ के गोश में दरिया॥

× × ×

दिल छुट के जां से गोर[12] की मंज़िल में रह गया।
कैसा रफ़ीक़[13] साथ से मुश्किल में रह गया॥
आये भी लोग बैठे भी उठ भी खड़े हुए।
मैं जा ही ढूँढ़ता तेरी महफ़िल में रह गया॥
आज़ादी से ज़्यादा असीरी[14] में लुत्फ़ है।
दिल मुर्गे रूह[15] का क़फ़से गिल[16] में रह गया॥
सबक़त[17] जो ज़िन्दगी में सिकन्दर ने की तो क्या।
ए ख़िज्र[18] पीछे मर्ग की मंज़िल[19] में रह गया॥
आतश को दस्त व तेग़[20] से मुमकिन हुआ न ज़ख्म।
बेचारा मरके हसरते क़ातिल में रह गया॥

× × ×

(१) गोताखोर (२) मोती (३) कान (४) बोलना (५) खामोशी (६) मोती (७) भीगी आँख (८) कपड़े का किनारा (९) कटोरा (१०) स्वाती की बूँदें (११) घेरा (१२) क़ब्र (१३) मित्र (१४) क़ैद (१५) प्राण पखेरू (१६) मिट्टी का पिंजरा (१७) विजय (१८) एक पैग़म्बर का नाम (१९) मृत्यु का स्थान (२०) हाथ व तलवार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन तो सही जहां में है तेरा फ़साना[१] क्या ।
कहती है तुझको ख़ल्के ख़ुदा[२] ग़ायबाना[३] क्या ॥
क्या क्या उलझता है तेरी ज़ुल्फ़ों के तार से ।
बख़िया तलब[४] है सीनये सद चाक शाना[५] क्या ॥

ज़र्रे ज़मीं[६] से आता है जो गुल[७] सो ज़र बकफ़[८] ।
क़ारूं ने रास्ते में लुटाया ख़ज़ाना क्या ॥
उड़ता है शौक़े राहते मंजिल[९] से अस्पे उम्र[१०] ।
महमेज़[११] कहते हैंगे किसे ताज़ियाना[१२] क्या ॥
जीना सबा[१३] का ढ़ूंढ़ती है अपनी मुश्ते ख़ाक[१४] ।
बामे बलन्द यार[१५] का है आस्ताना[१६] क्या ॥

चारों तरफ़ से सूरते जाना[१७] हो जलवागर[१८] ।
दिल साफ़ हो तेरा तो है आइना ख़ाना क्या ॥
सय्याद[१९] असीरे दामे रगे गुल[२०] है अंदलीब[२१] ।
दिखला रहा है छुपके उसे दाम व दाना[२२] क्या ॥

तबल व अलम[२३] न पास है अपने न मुल्क व माल ।
हमसे ख़िलाफ़ होके करेगा ज़माना क्या ॥
आती है किस तरह से मेरी क़ब्ज़े रूह[२४] को ।
देखं तो मौत ढ़ूंढ़ रही है बहाना क्या ॥

---

(१) कहानी (२) ईश्वर की प्रजा (३) पीठ पीछे (४) सिलाई के योग्य (५) कंघे के दांते जो फटे हुए हृदय के समान है (६) धरती के नीचे (७) फूल (८) हाथ में सोना लिये (९) जिन्दगी में आराम की इच्छा (१०) उम्र का घोड़ा (११) एड़ (१२) कोड़ा (१३) हवा की सीढ़ी (१४) मुट्ठी भर मिट्टी (१५) प्रेमिका की ऊंची छत (१६) चौखट (१७) प्रेमिका की सूरत (१८) चमकना (१९) बहेलिया (२०) फूल की नसों के जाल का बन्दी (२१) बुलबुल (२२) जाल व दाना (२३) झंडा व हथियार (२४) प्राणांत ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सय्याद गुल अज़ार[1] दिखाता है सब्ज़ बाग़[2]।
बुलबुल क़फ़स में याद करे आशियाना[3] क्या ॥
तिरछी निगह से तायरे दिल[4] हो चुका शिकार।
जब तीर कज[5] पड़ेगा उड़ेगा निशाना क्या ॥
यूं मुदई[9] हसद[10] से नदे दाद[11] तो न दे।
आतश ग़ज़ल यह तूने कही आशिक़ाना क्या ॥

× × ×

वहशत आगीं[12] है फ़साना मेरी रूसवाई[13] का।
आशिक़े ज़ार[14] हूँ इक आहूये सहराई[15] का ॥
पांव ज़िन्दां[16] से न निकला तेरे सौदाई[17] का।
दाग़ दिल ही में रहा लालये सहराई[18] का ॥
ध्यान रहता है क़दे यार की रानाई[19] का।
सामना रोज़ है यां आफ़ते बालाई[20] का ॥
कोह ग़म[21] मिस्ल परे काह[22] उठा लेता हूँ।
नातवानी[23] में भी आलम है तवानाई[24] का ॥
कौन सा दिल है नहीं जिसमें खुदा की मंज़िल।
शिकवा[25] किस मुंह से करूं मैं बुते रानाई[26] का ॥

---

(१) सुन्दर प्रेमिका (२) धोका देना (३) घोंसला (४) हृदय का पक्षी (५) टेढ़ा (६) विचित्र बात (७) दुखी हृदय (८) मेहमान अर्थात प्राण (६) प्रतिद्वन्दी (१०) जलन (११) प्रशंसा (१२) पागल बनाने वाला (१३) बदनामी (१४) दुखी प्रेमी (१५) जङ्गली हिरन अर्थात प्रेमिका (१६) क़ैदख़ाना (१७) प्रेमी (१८) जङ्गली फूल (१६) सुन्दरता (२०) ऊपर से आने वाली मुसीबत (२१) दुख का पहाड़ (२२) घास (२३) कमजोरी (२४) शक्ति (२५) शिकायत (२६) प्रेमिका का सौंदर्य !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मर्द दरवेश[1] हूँ तकिया[2] है: तवक्कुल[3] मेरा।
ख़र्च हर रोज है यां आमदे बालाई[4] का॥
ज़िन्दगानी ने मुझे मुर्दा बना रखा है।
मलकुल मौत[5] से सायल[6] हूँ मसीहाई[7] का॥
किस तरह से दिले वहशी[8] का मैं कहना मानूं।
कोई क़ायल नहीं दीवाने की दानाई[9] का॥
यही ज़ंजीर के नाले से सदा[10] आती है।
क़ैद ख़ाने में बुरा हाल है सौदाई का॥
बाद शायर के हो मशहूर कलामे शायर[11]।
शोहरा[12] अलबत्ता कि हो मुर्दा की गो याई[13] का॥
शहर में क़ाफ़िया पैमाई[14] बहुत की आतश।
अब इरादा है मेरा बादिया पैमाई[15] का॥

× × ×

रात को मैंने मुझे यार ने सोने न दिया।
रात भर तालये बेदार[16] ने सोने न दिया॥
ख़ाक पर संग दरं यार[17] ने सोने न दिया।
धूप में सायये दीवार[18] ने सोने न दिया॥
एक शब बुलबुले बेताब[19] के जागे न नसीब[20]।
पहलूये गुल[21] में कभी ख़ार[22] ने सोने न दिया॥

---

(१) साधु (२) भरोसा (३) संतोष (४) ईश्वर की दी हुई आयु (५) यमराज (६) प्रश्न करने वाला (७) चिकित्सा (८) पागल (६) बुद्धिमानी (१०) आवाज (११) कवि की रचना (१२) प्रसिद्धि (१३) बोलना (१४) कविता करना (१५) जङ्गल २ घूमना (१६) जागे हुए भाग्य (१७) प्रेमिका के दरवाजे के पत्थर (१८) दीवार की छांह (१६) बेचैन (२०) भाग्य (२१) फूल के पास (२२) कांटा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब लगी आँख कराहा यह कि बदख़्वाब[1] किया।
नींद भर कर दिले बीमार ने सोने न दिया॥
दर्दे सर शाम से उस जुल्फ़ के सौदे[2] में रहा।
सुबह तक मुझको शबे तार[3] ने सोने न दिया॥
रात भर की दिले बेताब ने बातें मुझसे।
रंज व मेहनत के गिरफ़्तार ने सोने न दिया॥
सैल गिरिया[4] से मेरे नींद उड़ीं मर्दुम[5] की।
फ़िक्र बाम व दर व दीवार[6] ने सोने न दिया॥
बाग़ आलम[7] में रहीं ख़्वाब की मुश्ताक़[8] आँखें।
गरमिये आतशे गुलज़ार[9] ने सोने न दिया॥
सच है ग़मख़्वारिये बीमार[10] अज़ाबे जां[11] है।
ता दमे मर्ग[12] दिले ज़ार[13] ने सोने न दिया॥

× × ×

ग़म नहीं गो[14] ए फ़लक रुतबा[15] है मुझको ख़ार का।
आफ़ताब[16] इक जर्द पत्ता[17] है मेरे गुलज़ार[18] का॥
जोशे गिरिया[19] ने किया है नातवां[20] इतना मुझे।
टूटना मुमकिन नहीं है आँसुओं के तार का॥
ए सनम आशिक से रूपोशी[21] नहीं लाज़िम[22] तुझे।
परदा मूसा[23] से नहीं अल्लाह को दीदार का॥

× × ×

---

(१) स्वप्न सौंदर्य को नष्ट करना (२) पागलपन (३) अंधेरी रात (४) आंसुओं की अधिकता (५) आंख (६) छत दरवाजे, दीवार (७) संसार का बगीचा (८) उत्सुक (९) बाग की आग की गरमी (१०) बीमारों से सहानुभूति (११) चित्त को दुख (१२) मरते दम तक (१३) दुखी दिल (१४) यद्यपि (१५) स्थान (१६) सूर्य (१७) पीला पत्ता (१८) बाग (१९) आंसुओं की अधिकता (२०) कमजोर (२१) मुंह छिपाना (२२) उचित (२३) एक पैगम्बर का नाम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आशना[1] गोश[2] से उस गुल के सखुन है किसका।
कुछ ज़ुबां से कहे कोई यह दहन[3] है किसका॥
शादिये मर्ग[4] से फूला मैं समाने का नहीं।
गोर[5] कहते हैं किसे नाम कफ़न है किसका॥
बाग़ आलम का हर इक गुल है ख़ुदा की क़ुदरत।
बाग़बां कौन है इसका यह चमन है किसका॥
ख़ाक में उसको मिलाऊं उसे बर्बाद करूं।
जान किसकी हे मेरी जान यह तन है किसका॥
आज ही छूटे जो छुटता यह खराबा[6] कल हो।
हम गरीबों को है क्या ग़म यह वतन है किसका॥

× × ×

तोड़ कर तारे निगह[7] का सिलसिला जाता रहा।
ख़ाक डाल आंखों में मेरी क़ाफ़ला जाता रहा॥
कौन से दिन हाथ आया मेरे दामाने यार।
कब ज़मीन व आसमां का फ़ासला जाता रहा॥
खारे सहरा[8] पर किसी ने तुहमते दुज़दी[9] न की।
पांव का मजनुं के क्या क्या आबला[10] जाता रहा॥
दोस्तों से इस क़दर सदमे हुए हैं जान पर।
दिल से दुश्मन की अदावतका[11] गिला[12] जाता रहा॥
जब उठाया पांव आतश मिस्ल आवाज़े जरस[13]।
कोसों पींछे छोड़ कर मैं क़ाफ़ला जाता रहा॥

× × ×

(१) परिचित (२) कान (३) मुंह (४) मरने की खुशी (५) कब्र (६) बुरी जगह (७) दृष्टि (८) जङ्गल का कांटा (६) चोरी का दोष (१०) फफोला (११) शत्रुता (१२) शिकायत (१३) घंटे की आवाज की तरह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हश्र[1] को भी देखने का उसके अरमां रह गया।
दिन हुआ पर आफ़ताब[2] आंखों से पिनहां रह गया॥
बंदगीये हक़[3] में भी भूला न मैं यादे सनम[4]।
तोबये मै[5] की व लेकिन दाग़े दामां रह गया॥
पासे उलफ़त[6] से जुनूं[7] में भी न कपड़े फट गये।
तौक़[8] बन कर मेरी गर्दन में गरेबां[9] रह गया॥
दोस्ती निभती नहीं हरगिज़ फ़रो माया[10] के साथ।
रूह जन्नत को गई जिस्मे गिली[11] यां रह गया॥
हुस्न में भी इज्ज़त व ज़िल्लत[12] खुदा के हाथ है।
गुल को पैराहन[13] मिला तो शोला[14] उरियां[15] रह गया॥
बस्तियां ही बस्तियां हैं गुंबदे अफ़लाक[16] में।
सैकड़ों फ़रसंग[17] मजनूं से बियाबां[18] रह गया॥
जान शीरीं[19] हो फ़िराके यार[20] से क्यों कर अज़ीज़[21]।
मर्गे साहब ख़ाना[22] है फ़ाक़ा जो मेहमां रह गया॥
कारवाने निकहते गुल[23] कर गया गुलशन से कूच।
सूरते नक़्शे क़दम[24] गुलज़ार हैरां रह गया॥
शाम हिज्र सुबह भी करके न देखा रौज़े वस्ल।
सांप को कुचला पर आतश गंज[25] पिनहां[26] रह गया॥

× × ×

(१) अंतिम दिन (२) सूरज (३) ईश्वर का पूजन (४) प्रेमिका की याद (५) शराब से इन्कार (६) प्रेम का ख्याल (७) पागलपन (८) हार (९) कपड़ा (१०) तुच्छ (११) मिट्टी का शरीर (१२) मान अपमान (१३) कपड़ा (१४) लपट (१५) नंगा (१६) आसमान (१७) कोस (१८) जंगल (१९) प्राण (२०) प्रेमिका का विरह (२१) प्रिय (२२) घर के मालिक की मौत (२३) फूल की सुगंध का क़ाफ़ला (२४) पद चिन्हों की भांति (२५) ख़ज़ाना (२६) छिपा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोई इश्क़ में मुझसे अफ़ज़ूं[१] न निकला।
कभी सामने होके मजनूं[९] न निकला॥
बड़ा शोर सुनते थे पहलू में दिल का।
जो चीरा तो इक क़तरये ख़ूं[२] न निकला॥
बजा[३] कहते आये हैं हेच[४] इसको शायर।
कमर का कोई हमसे मज़मूं[५] न निकला॥
हुआ कौन सा रोज़े रोशन[६] न काला।
कब अफ़सानये ज़ुल्फ़े शबगूं[७] न निकला॥
रहा सालहा साल[८] जंगल में आतश।
मेरे सामने बेद मजनूं[९] न निकला॥

× × ×

करम[१०] किया जो सनम ने सितम ज़्याद[११] किया।
शबे फ़िराक़[१२] में मैंने ख़ुदा को याद किया॥
करीमी[१३] में तेरी शक हो जिसे वह काफ़िर[१४] है।
मुझे मलूल[१५] तो दुश्मन को मेरे शाद[१६] किया॥
यह दिल लगाने में मैंने मज़ा उठाया है।
मिला न दोस्त तो दुश्मन से इत्तहाद[१७] किया॥
बचा मैं जान को करके तसद्दुके इज्ज़त[१८]।
वगरना दिल ने नहीं कौन सा फ़साद[१९] किया॥
करूं मैं शुक्र इलाही कहां तलक आतश।
दरूने साफ़[२०] दिया पाक एतक़ाद[२१] किया॥

× × ×

(१) अधिक (२) रक्त की बूंदें (३) ठीक (४) तुच्छ (५) वर्णन (६) दिन का उजला पन (७) काले बालों की कहानी (८) कई साल (९) एक पेड़ का नाम (१०) कृपा (११) अधिक अत्याचार (१२) विरह की रात (१३) कृपा (१४) नास्तिक (१५) दुखी (१६) प्रसन्न (१७) मेल (१८) प्रतिष्ठा पर निछावर (१९) झगड़ा (२०) शुद्ध हृदय (२१) शुद्ध आस्था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिल शहीदे रहे दामां[1] न हुआ था सो हुआ।
टुकड़े टुकड़े जो गरेबां न हुआ था सो हुआ॥
रोने पर मेरे हुआ हंस के वह गुल[2] शर्मिंदा।
गुंचा सां[3] सर बगरेबां[4] न हुआ था सो हुआ॥
हर .ज़ुबां पर मेरी रूसवाई[5] का अफ़साना है।
नुसख़ये शौक़[6] परेशां न हुआ था सो हुआ॥
अर्क़ आलूदा जबीं[7] देख के दिल डूब गया।
शबनमे बाग़[8] से तूफ़ां न हुआ था सो हुआ॥
यार के रूये किताबी[9] की करूं क्या तारीफ़।
बाद कुरान के जो कुरां न हुआ था सो हुआ॥
पहरों ही मिसरए सौदा[10] है रूलाता आतश।
तुझे ए दीदा गिरिया न हुआ था सो हुआ॥

× × ×

ख़याल आया जो इश्क़े .ज़ुल्फ़[11] में दिलको तबाही का।
बंधा फ़िक्रे रसा[12] से यक क़लम[13] मज़मूं सियाही का॥
समुन्द्र चश्मे तर[14] बादे मुख़ालिफ़[15] आह व नाला हैं।
यक़ीं है कोई दम में कश्तिये तन[16] की तबाही का॥
मुसाफ़िर को अदम[17] के रोकने वाला नहीं कोई।
न खींचा ख़ार[18] ने दामां कभी दुनियाँ से राही का॥

---

(१) कपड़ों पर निछावर (२) फूल अर्थात सुन्दरी (३) कली की तरह (४) सर झुकाना (५) बदनामी (६) अभिलाषायें (७) पसीने में डूबा हुआ माथा (८) बाग की ओस (९) किताब की तरह साफ़ मुखड़ा (१०) कवि सौदा की पंक्ति (११) बालों से प्रेम (१२) कल्पना (१३) पूर्णतः (१४) भीगी आंख (१५) विरोधी हवा (१६) शरीर रूपी नाव (१७) परलोक (१८) कांटा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जुनं[1] का लुत्फ़[2] उठा सहरा[3] को चल जिंदा[4] से दीवाने ।
नहीं खुलता है बे मैदान के जौहर[5] सिपाही का ॥
मुरक्कब[6] है यह सर ता पा[7] ख़ता से और निस्यिा[8] से ।
ख़याले ख़ाम[9] है इंसा को दावा बे गुनाही का ॥
बुताने संगदिल[10] को सूरत आतश काटे खाती है ।
इरादा कंजे अज़लत[11] में है अब यादे इलाही[12] का ॥

× × ×

भड़काया था यह कैसा नसीमें बहार[13] ने ।
गुलचीं[14] का हाथ आतशे गुल[15] से नहीं जला ॥
मेरा जिगर जलाये से क्या हाथ आयेगा ।
उस दर[16] का परदा ए नफ़से आतशीं[17] जला ॥
मैं भी तो देखूं गर्मी तेरी अश्के आतशीं[18] ।
मशाल की तरह से तू मेरी आस्तीं[19] जला ॥
किस लाल आतशीं का है दिल अपना शेफ़ता[20] ।
जिस पर हमारा नाम खुदा वह नगीं जला ॥
आहे शरर फ़िशां[21] का बुरा हो शबे फ़िराक़ ।
लाखों मकान उससे हज़ारों मकीं[22] जला ॥
अंधेर है न होवे अगर दिल में रोशनी ।
आतश चिराग़ कौन से घर में नहीं जला ॥

× × ×

(१) पागलपन (२) आनन्द (३) जङ्गल (४) क़ैदखाना (५) गुण (६) मिलावट (७) सर से पैर तक (८) पाप (९) भ्रम (१०) कठोर प्रेमिकायें (११) एकांत (१२) ईश्वर चिंतन (१३) बंसत की हवा (१४) माली (१५) फूल जो आग की भाँति हैं (१६) दरवाजा (१७) जलती हुई वासनायें (१८) गरम आंसू (१९) बांह (२०) जला हुआ (२१) चिनगारियां फेंकने वाली आहें (२२) मकान मालिक !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने उरियां[1] तुझे ए रश्के क़मर[2] देख लिया।
दीदा[3] व दिल को जो था मद्दे नज़र[4] देख लिया॥
निज़ा[5] में यार ने सूरत न दिखाई मुझको।
दुश्मन व दोस्त को हंगामे सफ़र[6] देख लिया॥
लेगई वहशते दिल[7] गोरे ग़रीबां[8] की तरफ़।
हमने याराने गुज़श्ता[9] का भी घर देख लिया॥
ख़ूं किया ग़ैर के दिल को मेरी जांबाज़ी[10] ने।
यार ने चीर के पहलू को जिगर देख लिया॥
दहने यार[11] से इक शेर किसी दिन न सुना।
हमने इस अपनी ज़ुबां का भी असर देख लिया॥
भर गया दामने नज्ज़ारा[12] गुले नरगिस[13] से।
आंख उठा कर जो कभी तूने इधर देख लिया॥
रूबरू रहने लगा आईना आतश शब व रोज़[14]।
यार को ग़ैर से भी शीर व शकर[15] देख लिया॥

× × ×

बर्क़े ख़िरमन[16] था कभी नाला दिले नाशाद[17] का।
हौसला बाक़ी नहीं है आसमां फ़रियाद का॥
शौक़ दीदे रुख़[18] ने खुलवाया उन आंखों का फ़रेब[19]।
उल्फ़ते गुल सामना करवाती है सय्याद का॥
दोस्ती निभती नज़र आती नहीं महबूब से।
नाज़ यां उठता नहीं वां शग़ल[20] है बेदाद[21] का॥

---

(१) नंगा (२) चांद को लज्जित करने वाला (३) आंख (४) इच्छा (५) मरते समय (६) चलते समय (७) चित्त का पागलपन (८) अजनबियों की क़ब्र (६) पहले के मित्र (१०) बहादुरी (११) प्रेमिका का मुख (१२) दृष्टि रूपी कपड़ा (१३) एक फूल का नाम (१४) दिन रात (१५) घुला मिला (१६) खलिहान पर गिरने वाली बिजली (१७) दुःखी हृदय (१८) मुँह देखने की इच्छा (१६) धोखा (२०) धंधा (२१) अत्याचार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस क़दर ईज़ा[1] मुझे दी है बुतों के इश्क़ ने।
हौसला जाता रहा दिल को .खुदा की याद का॥
याद दूर उफ़्तादगां[2] है आतश उस बुत से बईद[3]।
ध्यान कब मौला को आया बन्दये आज़ाद का॥

× × ×

आशियाना[4] हो गया अपना क़फ़स फ़ौलाद[5] का।
आब व दाना[6] ने दिखाया घर हमें सय्याद का॥
हौसला क्या अन्दलीबे ख़ानमां बरबाद[7] का।
रूये गुल[8] भूले जो मुँह देखे मेरे सय्याद का॥
गरदिशे चश्मे बुतां[9] से मिल गया मैं ख़ाक में।
आसमां को शौक़ बाक़ी रह गया बेदाद का॥
बारे इश्क़[10] उसने उठाया और सीली की न आँख।
हौसला तो देखो मुश्ते ख़ाके बे बुनियाद[11] का॥
अब भी ओ बुत आ जो आना है .खुदा के वास्ते।
ग़म कलेजा खा रहा है आतशे नाशाद का॥

× × ×

ज़ौक़े क़नाअत[12] के मज़े से आशना[13] हो जायगा।
भीख का कासा[14] उसे दस्ते दुआ[15] हो जायगा॥
बहरे ग़म[16] से पार उतारेगी हमें कश्तिये मै[17]।
बादबान[18] अब्र[19] और साक़ी नाख़ुदा[20] हो जायगा॥

---

(१) कष्ट (२) दूर पड़े हुए (३) असम्भव (४) घोसला (५) लोहा (६) भाग्य (७) बे घर बार बुलबुल (८) फूल का चेहरा (९) सुन्दरियों के चंचल नयन (१०) प्रेम का बोझ (११) तुच्छ प्राणी (१२) स... (१३) परिचित (१४) प्याला (१५) आशीर्वाद (१६) दुःख का समुद्र (१७) शराब की नौका (१८) पाल (१९) बादल (२०) मल्लाह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैकशी[1] से यार के क्योंकर न हो दिल को सुरूर[2]।
नशा में उसके हमारा मुद्दआ[3] हो जायगा॥
इस क़द्र नाज़ां[4] न हो ए शेख़ अपने ज़ुहद[5] पर।
बंदगी करने से तू शायद .खुदा हो जायगा॥
यार ने वादा फ़रामोशी[6] जो हमसे की तो की।
मौत का वादा तो ए आतश वफ़ा[7] हो जायगा॥

× × ×

उसके कूचे में मसीहा[8] हर सहर[9] जाता रहा।
बे अजल[10] वां एक दो हर रात मर जाता रहा॥
वाह रे अंधेर बहरे रोशनिये शहर मिस्र[11]।
दीदये याकूब[12] से नूरे नज़र[13] जाता रहा॥
नशा में ही या इलाही मैकशों[14] को मौत दे।
क्या गुहर[15] की क़द्र जब आबे गुहर[16] जाता रहा॥
इक न इक मूनिस[17] की .फुरक़त[18] का फ़लक[19] ने ग़म दिया।
दर्दे दिल पैदा हुआ दर्दे जिगर जाता रहा॥
हुस्न खोकर आशना[20] हमसे हुआ वह नौनिहाल[21]।
पहुँचे तब .ज़ेरे शजर[22] हम जब समर[23] जाता रहा॥
फ़ातहा[24] पढ़ने को आये कब्र आतश पर न यार।
दो ही दिन में पासे उल्फ़त[25] इस क़दर जाता रहा॥

× × ×

(१) मदिरा पान (२) नशा (३) मतलब (४) घमंड (५) पवित्रता (६) वादा तोड़ना (७) पूरा (८) चिकित्सा के पैग़म्बर (९) प्रातःकाल (१०) बिना मौत (११) मिस्र नगर की रोशनी के लिये (१२) याकूब की आँखें (१३) पुत्र (१४) शराब पीने वाले (१५) मोती (१६) मोती की चमक (१७) मददगार (१८) बिरह (१९) आसमान (२०) मित्र (२१) सुन्दरी (२२) पेड़ के नीचे (२३) फल (२४) प्रार्थना (२५) प्रेम का ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है जब से दस्ते यार[१] में साग़र[२] शराब का।
कौड़ी का हो गया है कटोरा गुलाब का॥
सय्याद ने तसल्लिये बुलबुल के वास्ते।
कंजे क़फ़स[३] में हौज़ भरा है गुलाब का॥
ए मौज बे लिहाज़[४] समझकर मिटाइयो।
दरिया भी है असीर[५] तिलिस्मे हुबाब[६] का॥
हुस्न व जमाल से है जमाने में रोशनी।
शब[७] माहताब[८] की है तो रोज़[९] आफ़ताब[१०] का॥
अल्लाह रे हमारा तकल्लुफ़ शबे विसाल[११]।
रोग़न[१२] के बदले इत्र जलाया गुलाब का॥
मस्जिद से मैकदे[१३] में मुझे नशा ले गया।
मौजे शराब जादा[१४] थी राहे सवाब[१५] का॥
खाना ख़राबी[१६] पर कमर मौज बंध चुकी।
बाहर निकाला सैल[१७] ने ख़ेमा हुबाब[१८] का॥
दो न्यामतें यह मेरी हैं मैं हूँ फ़क़ीरे मस्त।
इक नाने ख़ुश्क[१९] एक प्याला शराब का॥
देखे जो तेरे दस्ते हिनाई[२०] के रंग को।
शरमिन्दगी से रंग हो नीला शराब का॥
आतश शबे फ़िराक़[२१] में पूछूंगा माह[२२] से।
यह दाग़ है दिया हुआ किस आफ़ताब का॥

× × ×

(१) प्रेमिका का हाथ (२) प्याला (३) पिंजरा का कोना (४) लापरवाह (५) बंदी (६) बुलबुले का जादू (७) रात (८) चांद (९) दिन (१०) सूर्य (११) मिलन की रात में संकोच (१२) तेल (१३) शराब ख़ाना (१४) रास्ता (१५) पुण्य की राह (१६) घर की बर्बादी (१७) बाढ़ (१८) बुलबुले का तम्बू (१९) सूखी रोटी (२०) मेंहदी लगे हाथ (२१) बिरह की रात (२२) चांद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चमन में शब को जब शोख़ बे नक़ाब आया ।
यक़ीन हो गया शबनम[1] को आफ़ताब आया ॥
उन अंखड़ियों में अगर नशाये शराब आया ।
सलाम झुक के करूंगा जो फिर हिजाब[2] आया ॥

मैं मौज हूँ लबे साहिल[3] हैं आसमान व ज़मीं ।
कभी जो जोश में दरियाय इज़्तराब[4] आया ॥
असीर[5] होने का अल्ला रे शौक़ बुलबुल को ।
जगाया नालों[6] से सय्याद को जो ख़्वाब[7] आया ॥

बसर हुई मेरी अवक़ात[8] आईना की तरह ।
मिला न दाना जो मुझको मुयस्सर[9] आब[10] आया ॥
ख़्याले सुबह में सोया तो आँख फिर न खुली ।
दिखाने आईना जब तक न आफ़ताब आया ॥

किसी की मुहरिमे आबे खां[11] की याद आई ।
हुबाब के जो बराबर कोई हुबाब आया ॥
हमेशा बुलबुल व क़ुमरी[12] से बहसे नाला रही ।
किसी कमां से छुटा तीर में जवाब आया ॥

शबे फ़िराक़ में मुझको सुलाने आया था ।
जगाया मैने जो अफ़साना गो[13] को ख़्वाब आया ॥
मुहब्बत मै व माशूक़[14] तर्क[15] कर आतश ।
सफ़ेद बाल हुए मौसमे ख़िज़ाब आया ॥

× × ×

---

(१) ओस (२) शरम (३) किनारे (४) बेचैनी का दरिया (५) बन्दी (६) रोना चिल्लाना (७) नींद (८) जीवन (९) प्राप्त (१०) पानी (११) चंचल आँख (१२) एक पक्षी (१३) कहानी कहने वाला (१४) प्रेमिका (१५) छोड़ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रंज व राहत का मेरे वास्ते सामां होगा।
मशाले राहे अदम[१] दाग़े अज़ीज़ां[२] होगा॥
रंग बदला नज़र आता है हवा का मुझको।
गुले ताज़ा कोई इस बाग़ में खिन्दां[३] होगा॥
ऊद[४] करने की नहीं रूह निकल कर तन से।
फिर न आबाद यह घर होगा जो वीरां[५] होगा॥
नालये बुलबुले शैदा[६] में अगर है तासीर[७]।
दस्ते सय्याद[८] में गुलचीं[९] का गरेबां[१०] होगा॥
बूये मै[११] रखती है इस मैकदा में कैफ़ियत[१२]।
मुहतसिब[१३] तोड़ के शीशे[१४] को पेशमां[१५] होगा॥
तेरी फ़रियाद का मुहताज मैं वा मांदा[१६] नहीं।
ए जरस[१७] मेरे लिये काफ़िला नालां[१८] होगा॥
खत का आग़ाज़[१९] क़यामत[२०] है रूखे रंगीं[२१] पर।
खार व गुल[२२] दीदये इंसाफ़[२३] में यकसां[२४] होगा॥
बाद मेरे न गिरफ्तार मिलेगा मुझसा।
ज़ुल्फ़े खूबां[२५] का बहुत हाल परेशां होगा॥
उसके आशिक़ हैं जबस[२६] ख़ुर्द व बुज़ुर्ग[२७] ए आतश।
रश्क[२८] होगा मुझे गर तिफ़्ल[२९] भी गिरियां होगा।

× × ×

---

(१) परलोक के लिये (२) प्रिय जनों का दुःख (३) खिलना (४) मित्रता (५) उजाड़ (६) प्रेमी बुलबुल के नाले (७) प्रभाव (८) अत्याचारी का हाथ (९) माली (१०) कपड़ा (११) शराब की खुशबू (१२) नशा (१३) धार्मिक व्यक्ति (१४) बोतल (१५) लज्जित (१६) थका हुआ (१७) घंटा (१८) रोना (१९) आरम्भ (२०) प्रलय का दिन (२१) चमकदार चेहरा (२२) फूल व कांटा (२३) न्याय की दृष्टि (२४) एक तरह का (२५) सुन्दरियों के बाल (२६) बहुत से छोटे बड़े (२८) जलन (२९) लड़का।

23268

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आलूदा[1] बेगुनाहों के खूं से है तेग़े चर्ख़[2] ।
नाफ़हमों[3] को गुमां[4] है शफ़क़[5] में हलाल[6] का ॥
शाना[6] बनेंगें बाद फ़ना[7] अपने इस्तख़्वां[8] ।
अक़दा[9] खुलेगा गेसुओं[10] के बाल बाल का ॥
किस किस बशर[11] को लाई है दुनियां फ़रेब[12] में ।
क्या क्या जवां मुरीद[13] है इस पीर ज़ाल[14] का ॥
लाती है वां क़ज़ा व क़दर[15] मुर्ग़ रूह[16] को ।
पानी जहाँ क़फ़स का है दाना है जाल का ॥
इक दम में जा मिलूँगा अज़ीज़ाने रफ़्ता[17] से ।
क्या अर्सा[18] है ज़मानये माज़ी[19] से हाल[20] का ॥
ज़न्जीर व तौक़[21] हर बरस आकर पिन्हा गई ।
दीवाना हूँ मैं बादे बहारी[22] की चाल का ॥
रोने के बदले हाल पर अपने हंसा किये ।
पर्दा हुआ न फ़ाश[23] हमारे मलाल[24] का ॥

× × ×

ईसा[25] से नाला दरदे दिल की ख़बर न करता ।
ज़िक्रे दरून ख़ाना[26] बैरून दर[27] न करता ॥

---

(१) सने हुए (२) आसमान रूपी तलवार (३) नासमझ (४) संदेह (५) आसमान की लाली (६) कंघा (७) मिटने के बाद (८) हड्डी (६) गांठ (१०) बाल (११) आदमी (१२) धोखा (१३) चेला (१४) बढ़िया (१५) मृत्यु (१६) प्राण रूपी पत्ती (१७) मरे हुए प्रियजन (१८) दूरी (१६) अतीत (२०) वर्तमान (२१) हार (२२) वसन्त ऋतु (२३) खुलना (२४) दुख (२५) एक पैग़म्बर (२६) घर के भीतर (२७) घर के बाहर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आंखें दिखाई तूने दीवाने हो गये हम।
यह वह फ़सूं[1] न था जो अपना असर न करता॥
बुलबुल के हाल पर जो रोता न अब्र बारां[2]।
दो रोज़ हफ़्ता इक गुल हंसकर बसर न करता॥
बुलबुल का इश्क़ हुस्ने गुल से नहीं खुश आता[3]।
तक़लीद[4] आदमी की यह जानवर न करता॥

× × ×

कूचये यार[5] में किस रोज़ मैं नालां[6] न गया।
बुलबुले मस्त से सौदाये गुलिस्तां[7] न गया॥
हमरही रूहे खां[8] की तने ख़ाकी[9] ने न की।
साथ यूसुफ़[10] के जमाने से यह ज़िन्दां[11] न गया॥
सुबह की शाम नजारों[12] में रूखे रोशन[13] के।
रात भर घर से हमारे महे तावां[14] न गया॥
रोज़ व शब ज़ुल्फ़ो रूखे यार का अफ़साना रहा।
ज़िक्र सुबहे वतन[15] शामे ग़रीबां[16] न गया॥
सादिक़ुल क़ौल[17] नहीं दूसरा मुझसा मैकश[18]।
शीशा से अहद[19] तो पैमीना[20] से पैमां[21] न गया॥
कौन से शाना का सीना न किया ज़ुल्फ़ ने चाक[22]।
कौन सा आईना इस हुस्न का हैरां न गया॥
फूटकर आबलों[23] ने खुश्क़ ज़ुबानें तर कीं।
तुमसे शरमिंदा मैं ए ख़ार मुग़ीलां[24] न गया॥

× × ×

---

(१) जादू (२) वर्षा के बादल (३) अच्छा लगना (४) अनुसरण (५) प्रेमिका की गली (६) रोता हुआ (७) बाग का प्रेम (८) चलने फिरने वाली आत्मा (९) मिट्टी का शरीर (१०) एक पैग़म्बर (११) क़ैदखाना (१२) देखना (१३) चमकता मुखड़ा (१४) चमकता चाँद (१५) अपने देश का प्रातःकाल (१६) परदेश की संध्या (१७) अपनी बात का पक्का (१८) शराबी (१९) वादा (२०) बोतल (२१) वादा (२२) फाड़ना (२३) फफोले (२४) कांटे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पीरी[1] ने क़द्दे रास्त[2] को अपने नगूं[3] किया।
महराब क़स्रे तन[4] का हमारे सतूं[5] किया॥
जामा[6] से जिस्म के भी मैं दीवाना तंग हूँ।
अब की बहार में इसे नज़रे जुनूं[7] किया॥
दरिया बहा शराब का बे यार रात भर।
मिस्ले हुबाब[8] कासये सर[9] वाज़गूं[10] किया॥
जौहर वह कौन सा है जो इंसान में नहीं।
देकर ख़ुदा ने अक़्ल इसे ज़ूफ़नूं[11] किया॥
आंखों से जाय अश्क[12] टपकने लगा लहू।
आतश जिगर को दिल की मुसीबत ने खूं किया॥

× × ×

कीजिये बर्क़ तजल्ली[13] को इशारा अपना।
लाचुका हुस्न जहां सोज़[14] हरारा[15] अपना॥
रंग ज़र्द[16] व लबे ख़ुश्क[17] व मिज़ा खून आलूद[18]।
गुनहे इश्क़ हैं हल है यह कफ़्फ़ारा[19] अपना॥
राह दे सूरतें मूसा[20] हमें बहरे हस्ती[21]।
कश्ती व पल[22] से न होवेगा गुज़ारा अपना॥
ज़ेरे दीवार[23] हैं हम बाम[24] के ऊपर वह माह[25]।
हम ज़मीं पर हैं फ़लक पर है सितारा अपना॥

---

(१) बुढ़ापा (२) सीधा क़द (३) टेढ़ा (४) शरीर रूपी महल की मेहराब (५) खम्भा (६) कपड़ा (७) पागलपन की भेंट (८) बुलबुले की तरह (९) सर रूपी प्याला (१०) उल्टा (११) दुहरे गुण वाला (१२) आंसुओं की जगह (१३) सौंदर्य रूपी बिजली (१४) संसार को जलाने वाली (१५) गर्मी (१६) पीला रंग (१७) सूखे होंठ (१८) खून से सनी हुई (१९) सज़ा (२०) मूसा की तरह (२१) जीवन रूपी समुद्र (२२) नाव व उसका पाल (२३) दीवार के नीचे (२४) छत (२५) चांद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहरे हस्ती में यह तूफ़ां है अदम[१] छुटने से।
ग़ोते खिलवाता है साहिल से किनारा अपना॥
सुबह महशर[२] भी न हों ख़्वाब लहद[३] से बेदार[४]।
मुँह न दिखलाये हमें उम्र दोबारा अपना॥
सालहा साल से तहसील सख़ुन[५] है आतश।
इस क़लमरू[६] में है मुद्दत से इजारा[७] अपना॥

× × ×

ऐसी वहशत[८] नहीं दिल को कि संभल जाऊँगा।
सूरते पैरहने तंग[९] निकल जाऊँगा॥
चार दिन ज़ीस्त[१०] के गुज़रेंगे तास्सुफ़[११] में मुझे।
हाल दिल पर कफ़े अफ़सोस[१२] मैं मल जाऊँगा॥
शोला रूयों[१३] को दिखलाओ न मुझे ए आंखों।
मोम से नर्म मेरा दिल है पिघल जाऊँगा॥
हाल पीरी किसे मालूम जवानी में था।
क्या समझता था मैं दो दिन में बदल जाऊँगा॥
शैर[१४] ढ़लते हैं मेरी फ़िक्र से आज ए आतश।
मर के कल गोर[१५] के सांचे में मैं ढ़ल जाऊँगा॥

× × ×

कहीं छुट भी सके आलाइशे तन[१६] रूह[१७] से यारब[१८]।
कहां तक इस ख़राबे[१९] में यह गंजीना[२०] निहां[२१] होगा॥

---

(१) परलोक (२) प्रलय के दिन की सुबह (३) क़ब्र की नींद (४) जागना (५) कवितायें लिखना (६) देश (७) भाग (८) पागलपन (९) तंग कपड़े की तरह (१०) जीवन (११) अफ़सोस (१२) दुःख का हाथ (१३) आग की तरह लाल मुँह वाले (१४) पक्तियां (१५) क़ब्र (१६) शरीर की गंदगी (१७) आत्मा (१८) या ईश्वर (१९) संसार (२०) ख़ज़ाना (२१) छिपा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हवासे ख़मसा[1] दूरी में किसी के मुँतशिर[2] होंगे।
फ़िराक़े दोस्तां[3] हमसे नसीबे दुश्मनां[4] होगा॥

अज़ाबे गोर[5] से वाअज़[6] निहायत ही डराता है।
हमारे साथ पैवन्दे ज़मीं[7] क्या आसमां होगा॥

हवाये दहर[8] अगर इंसाफ़ पर आये तो सुन लेना।
गुल व बुलबुल चमन में होंगे बाहर बाग़बां होगा॥

नही माशूक़ सा आशिक़ का कोई दोस्त दुनियां में।
ख़ुदा से कौन बन्दे पर ज़्यादा मेहरबां होगा॥

फ़रो[9] ग़ुस्सा किया जिसने पछाड़ा देव को उसने।
उसे रूस्तम कहेंगे हम जो ऐसा पहलवां होगा॥

क़दम भारी हमारा होगा हम पर बाग़े आलम[10] में।
वह टहनी[11] फट पड़ेगी जिस पर अपना आशियां[12] होगा॥

नहीं असरार[13] से आतश यह पुतला ख़ाक का ख़ाली।
यही वह गर्द है जिस से सवार आविर अयां[14] होगा॥

× × ×

रूख़ व ज़ुल्फ़[15] पर जान खोया किया।
अंधेरे उजाले में रोया किया॥

हमेशा लिखे वस्फ़े दंदाने यार[16]।
क़लम अपना मोती पिरोया किया॥

---

(१) इंद्रियां (२) बिखरना (३) मित्रों का बिछोह (४) शत्रुओं का भाग्य (५) क़ब्र का कष्ट (६) उपदेशक (७) ज़मीन का पैबन्द (८) संसार की हवा (९) कम करना (१०) संसार रूपी बाग़ (११) डाल (१२) घोंसला (१३) भेद (१४) प्रकट (१५) मुखड़ा व बाल (१६) प्रेमिका के दांतों के गुण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहूँ क्या हुई उम्र क्योंकर बसर।
मैं जागा किया बख़्त[१] सोया किया॥

रही सब्ज़[२] बे फ़िक्र[३] कश्ते सख़ुन[४]।
न जोता किया मैं न बोया किया॥

मज़ा ग़म के खाने का जिसको पड़ा।
वह अश्कों से हाथ अपने धोया किया॥

ज़नख़दां[५] से आतश मुहब्बत रही।
कुंयें में मुझे दिल डुबोया किया॥

× × ×

गोश ज़द[६] जिसके तुम्हारी चश्म का अफ़साना[७] था।
आहुये मस्त[८] उसका आँखों में सगे दीवाना[९] था॥

ख़्वाब में मुझको ख़याले नरगिसे मस्ताना[१०] था।
आँख खोली तो लबालब उम्र का पैमाना था॥

वाह री नैरंग साज़िये तिलस्मे ज़िन्दगी[११]।
महवे बुत[१२] आँखे थीं दिल अल्लाह का दीवाना था॥

भूल कर तुझको किसी मुश्किल में करते याद हम।
आशना[१३] था तू सिवा तेरे जो था बेगाना[१४] था॥

रोशनी दिल में तसव्वर[१५] से थी हुस्ने यार की।
गंज की दौलत से माला माल यह दीवाना था॥

× × ×

(१) भाग्य (२) हरी भरी (३) बिना परिश्रम, (४) कविताओं की खेती (५) ठुड्डी (६) कान में पड़ना (७) आँख की कहानी (८) मस्त हिरन (९) पागल कुत्ता (१०) मस्त नरगिस का फूल (११) जीवन रूपी जादू का चमत्कार (१२) प्रेमिका में लीन (१३) मित्र (१४) पराया (१५) कल्पना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुलबुल को साज़ वार[१] हो मौसम बहार का।
अहदे शबाब[२] मुझको मुबारक हो यार का॥

पहुँचा दिया अदम शबे तारे फ़िराक़[३] ने।
दिखला दिया सौदा हमारे दयार का॥

अहले सफ़ा[४] की क़द्र नहीं करते तैरा रोज़[५]।
रोशन है हाल आईना से ज़ङ्ग बार[६] का॥

चलना पड़ेगा मुल्के अदम को पयादा पा[७]।
इस राह में नहीं है गुज़ारा सवार का॥

पीरी[८] में दाग़े इश्क़ न क्योंकर अज़ीज़[९] हो।
वे फ़स्ल का समर[१०] है यह गुल बे बहार का॥

फ़स्ले बहार आई कहीं क़िता[११] हो चुके।
दामन से सिलसिला यह गरेबां के तार का॥

बादे फ़ना[१२] है कूचये गेसू[१३] को जुस्तजू[१४]।
सौदा[१५] तो देखियो मेरे मुश्ते ग़ुबार[१६] का॥

बेयार दाग़ होता है लाला[१७] को देख कर।
आता है खुश[१८] किसे यह शिगूफ़ा[१९] बहार का॥

वादा खिलाफ़ यार से कहियो पयाम बर[२०]।
आँखों को रोग दे गये हो इंतज़ार का॥

× × ×

---

(१) उपयुक्त (२) जवानी (३) विरह की अंधेरी रात (४) शुद्ध व पवित्र लोग (५) अंधेरे में रहने वाले (६) मोरचा (७) बुढ़ापा (८) प्रिय (१०) कल (११) कटना (१२) मिटने के बाद (१३) केशों की गलियां (१४) तलाश (१५) पागलपन (१६) मुट्ठी भर धूल (१७) एक फूल का नाम (१८) अच्छा लगना (१९) फूल (२०) संदेश वाहक।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरी ज़ुल्फ़ों ने बल खाया तो होता।
ज़रा संबुल[१] को लहराया तो होता॥
रूखे बे दाग़[२] दिखलाया तो होता।
गुले लाला[३] को शरमाया तो होता॥
चलेगा कुबक[४] क्या रफ़्तार[५] तेरी।
यह अंदाज़े कमर पाया तो होता॥
न क्योंकर हश्र[६] होता देखते हम।
क़यामत[७] क़द[८] तेरा लाया तो होता॥
बजा लाते[९] उसे आँखों से ऐ दोस्त।
कभी कुछ हमसे फ़रमाया तो होता॥
तेरी सूरत[१०] से हंसना था न लाज़िम।
गुलों ने मुँह को बनवाया तो होता॥
कहे जाते वह सुनते या न सुनते।
ज़ुबां तक हाले दिल आया तो होता॥
समझता या न ए आतश समझता।
दिले मुज़तर[११] को समझाया तो होता॥

× × ×

मर गये पर न असर हुव्वे [१२]शफ़ा का देखा।
दर्दं मन्दों[१३] ने तेरे मुँह न दवा का देखा॥

---

(१) एक घास (२) साफ़ मुखड़ा (३) लाला का फूल (४) कबूतर (५) चाल (६) प्रलय (७) प्रलय (८) ऊँचाई (९) पूरा करते (१०) तेरी तरह (११) बेचैन दिल (१२) प्रेम की दवा चिकित्सा का प्रभाव (१३) बीमार।

Library

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरे फ़िरते ही उदासी सो चमन पर छाई।
रंग बैरंग गुलिस्तां की हवा का देखा॥

सामने आईना रखते तो ग़श[1] आ आ जाता।
तुमने अंदाज़ नहीं अपनी अदा का देखा॥

नाज़े माशूक़[2] से ग़मज़ा[3] में ज़्यादा निकली।
आई जब रास्ता बरसों ही क़ज़ा[4] का देखा॥

हर सितारे से लड़ी आँख हर इक गुल सूंघा।
था तमाशा जो कुछ इस अरज़ व सनां[5] का देखा॥

सैर बुतख़ाना[6] की जब तक कि न की थी हमने।
कारख़ाना ही न था शाने खुदा का देखा॥

कूये क़ातिल[7] का तमाशा उसे दिखला आतश।
गर्म जिसने न हो बाज़ार फ़ना[8] का देखा॥

× × ×

गुल से जो सामना तेरे रुख़सार[9] ने किया।
मिज़गां[10] ने वह किया कि जो कुछ ख़ार[11] ने किया॥

आँखों को बंद करके तसव्वर[12] में बाग़ के।
गुलशन क़फ़स[13] को मुर्ग़ गिरफ्तार[14] ने किया॥

लज़्ज़त[15] को तर्क कर तो हो दुनियां का रंज दूर।
परहेज़ भी दवा है जो बीमार ने किया॥

× × ×

(१) चक्कर (२) प्रेमिका की अदायें (३) नख़रे (४) मृत्यु (५) संसार (६) सौंदर्य का संसार (७) प्रेमिका की गली (८) नश्वरता (९) गाल (१०) पलकें (११) कांटा (१२) कल्पना (१३) पिंजड़ा (१४) फंसे हुए पक्षी ने (१५) स्वाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरी मस्ताना आँखों की न गरदिश[1] का असर देखा।
मये गुलरंग[2] से सौ सौ तरह पैमाना भर देखा॥
मुसाफ़िर ही नज़र आया नज़र आया जो दुनियां में।
जिसे देखा उसे आलूदये गर्दे सफ़र[3] देखा॥
खरीदारे मुहब्बत[4] आये भी बाज़ारे आलम[5] में।
वही सौदा किया हमने कि जिसमें दर्दे सर[6] देखा॥
जिगर ख़ूं हो गया बदगो[7] का अपने चुपके रहने से।
ख़ामोशी में भी मज़लूमों[8] के नाले[9] का असर देखा॥
तड़पते देख कर मुझको कहा हंसकर यह उस बुत ने।
ख़ुदा के दोस्त को रंज व अलम[10] में बेश्तर[11] देखा॥

× × ×

सूफ़ियों[12] को वज्द[13] में लाता है नग़मा साज़[14] का।
शुबहा हो जाता है परदे से तेरी आवाज़ का॥
यह इशारा हमसे है उनकी निगाहे नाज़[15] का।
देख लो तीरे क़ज़ा[16] होता है इस अंदाज़[17] का॥
रूह[18] क़ालिब[19] से जुदा करता है क़ालिब रूह से।
एक अदना सा करिश्मा[20] है यह तेरे नाज़ का॥
बंदिशे अलफ़ाज़[21] जड़ने से नगूं[22] के कम नहीं।
शायरी भी काम है आतश मुरस्सा साज़[23] का॥

× × ×

---

(१) चंचलता (२) फूल के रंग की शराब (३) सफ़र की धूल में सना हुआ (४) मुहब्बत का सौदा करने वाले (५) संसार के बाजार में (६) परेशानी (७) बुराई करने वाला (८) सताये हुए लोग (९) रोना (१०) दुःख दर्द (११) अधिकतर (१२) दार्शनिकों को (१३) मस्ती (१४) संगीत की ध्वनि (१५) चंचल आँख (१६) मृत्यु का तीर (१७) प्रकार (१८) आत्मा (१९) शरीर (२०) जादू (२१) शब्दों का बांधना (२२) नगीना (२३) जड़ाऊ काम करने वाला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बलाये जान[1] मुझे हर एक खुश जमाल[2] हुआ।
छुरी जो तेज़ हुई पहले मैं हलाल हुआ॥

कमी नहीं तेरी दरगाह[3] में किसी शै[4] की।
वही मिला है जो मुहताज[5] का सवाल हुआ॥

दिखा के चेहरये रोशन[6] वह कहते है सरे शाम।
वह आफताब[7] नहीं है जिसे जवाल[8] हुआ॥

दुखा न दिल को सनम[9] इत्तहाद[10] रखता हूँ।
मुझे मलाल हुआ तो तुझे मलाल हुआ॥

बलन्द[11] खाक नशीनी[12] ने क़द्र[13] की मेरी।
उरूज[14] मुझको हुआ जब कि पायमाल[15] हुआ॥

रहा बहार व खज़ां में यह हाल सौदे[16] का।
बढ़ा तो ज़ुल्फ़[17] हुआ घट गया तो खाल[18] हुआ॥

कमाल[19] कौन सा ~~~ वह जिसे जवाल नहीं।
हजार शुक्र कि मुझको न कुछ कमाल हुआ॥

दिया जो रंज तेरे इश्क ने तो राहत थी।
फ़िराक़[20] तल्ख़[21] तो शीरीं[22] मुझे विसाल[23] हुआ॥

वही है लौह शिकस्ते तिलस्म जिस्म[24] आतश।
जब एतदाल अनासिर[25] में इख़तलाल[26] हुआ॥

× × ×

(१) जान की मुसीबत (२) सुन्दर व्यक्ति (३) दरबार (४) वस्तु (५) निर्धन (६) चमकता मुख (७) सूर्य (८) पतन (९) प्रेमिका (१०) मेल (११) ऊंची (१२) मिट्टी में बैठना (१३) इज्जत (१४) उत्थान (१५) बर्बाद (१६) पागलपन (१७) बाल (१८) तिल (१९) गुण (२०) बिरह (२१) कड़ुवा (२२) मीठा (२३) मिलन (२४) शरीर रूपी जादू की तख्ती का टूटना (२५) तत्वों का समन्वय (२६) विघ्न।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज़ुल्म से अपने पशेमां[1] वह सितमगर[2] हो गया।
दिल हमारा सब्र करते-करते पत्थर हो गया॥
कूचये गेसू[3] से किस दिलबर के आई थी नसीम[4]।
बूये संबुल[5] से दिमाग़ जाँ[6] मुअत्तर[7] हो गया॥
आँख से देखा सुना करते थे सुहबत का असर।
तेरी गरदन में सुराहीदार गौहर[8] हो गया॥
किशवरे दिल[9] को किया ग़ारत[10] ख़ते शबरंग[11] ने।
गर्द लश्कर[12] मैं जिसे समझा था लश्कर हो गया॥
सामना जो पड़ गया होश उड़ गये बेख़ुद[13] हुआ।
जाम चश्मे यार[14] बेहोशी का साग़र[15] हो गया॥

× × ×

बाग़ में मैं बुलबुलों को जो उड़ा कर रह गया।
ख़न्दा ज़न[16] गुल होके ग़ुंचा[17] मुस्करा कर रह गया॥
कर चुकी थी मौसमे गुल[18] की हवा नश्तर तलब[19]।
ख़ून जितना था बदन में जोश खाकर रह गया॥
हंस पड़े तेरी तरह से गुल जो मुझ पर बाग़ में।
पानी-पानी हो गया आँसू बहाकर रह गया॥
शमां सां[20] इज़हार[21] का याराना[22] आतश को हुआ।
सर गुज़श्त[23] अपनी ज़ुबां तक अपनी लाकर रह गया॥

× × +

---

(१) लज्जित (२) अत्याचारी (३) बालों की राहें (४) प्रातःकाल की हवा (५) संबुल के फूल की सुगन्ध (६) मन व मस्तिष्क (७) सुगन्ध से भरना (८) मोती (६) हृदय का राज्य (१०) बर्बाद (११) रात के रंग यानी काले बाल (१२) फ़ौज की धूल (१३) मस्त (१४) शराब के प्याले जैसी प्रेमिका की आंख (१५) प्याला (१६) हंसना (१७) कली (१८) बसंत ऋतु (१६) चीरा लगाने की आवश्यकता (२०) दीपक की भाँति (२१) प्रकट करना (२२) शौक़ (२३) कहानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिल शबे फुरक़त[1] में है अज़ बस[2] कि ख्वाहां मर्ग[3] का।
इश्तियाक़े यार[4] से अफ़ज़ूं[5] है अरमां मर्ग[6] का॥
हसरते ताज़ा[7] तमन्नाये अजल[8] ने मुझको दी।
जब कहीं देखा मुहय्या मैंने सामां मर्ग का॥
इस क़दर गर्दन मेरी क़ैदे गरेबां से है तंग।
फिर न छोड़ूं हाथ अगर आ जाय दामन मर्ग का॥
शाम होते ही शबे फुक़्त में आ निकले अगर।
सुबह महशर[9] तक रहेगा मुझपे एहसां मर्ग का॥
क्यों न ए आतश जवानों की तरह बांधूं कमर।
पीर[10] हूँ दरपेश[11] है तै करना मैदां मर्ग का॥

\+ \+ \+

शौक़ अगर कूचये महबूब[12] का रहबर[13] होता।
गाम[14] अव्वल में क़दम काबा के अन्दर होता॥
गोशे ख़ूबां[15] में लटकता जो मैं गौहर[16] होता।
ज़र[17] जो होता तो हसीनों ही का ज़ेवर होता॥
बहरे हस्ती[18] में नज़र आते न मानिन्द हुबाब[19]।
ख़ाली इक लहज़ा[20] हवा[21] से जो तेरा सर होता॥
सोज़िशे इश्क़[22] में यह दिल ही है क़ायम आतश।
पानी हो-हो के बहा करता जो पत्थर होता॥

\+ \+ \+

(१) विरह की रात (२) अत्याधिक (३) मौत का इच्छुक (४) प्रेमिका की इच्छा (५) अधिक (६) मौत की इच्छा (७) नयी इच्छा (८) मौत की इच्छा (६) प्रलय का प्रातःकाल (१०) बूढ़ा (११) सामने (१२) प्रेमिका की गली (१३) राह दिखाने वाला (१४) क़दम (१५) सुन्दरियों के कान (१६) मोती (१७) सोना (१८) जीवन का समुद्र (१६) बुलबुले की तरह (२०) क्षण (२१) घमन्ड (२२) प्रेम की जलन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख़त[1] से उस रुख़[2] का हल हुआ मतलब ।
शरह[3] से मतन[4] का खुला मतलब ॥
तू वह मर्ज़[5] है जिससे रखते हैं ।
काफ़िर व रिन्द व पारसा[6] मतलब ॥
मंज़िले गोर[7] में विसाल हुआ ।
गोशा[8] में छिप के हो गया मतलब ॥
इल्तजा[9] है यही ज़ुबां से मुझे ।
गोश[10] के हो आशना[11] मतलब ॥
दहन[12] व ज़ुल्फ़ का मैं मायल[13] था ।
कभी उलझा कभी रुका मतलब ॥
शायरे हाल[14] गो[15] था मैं आतश ।
मेरे हर शेर में बंधा मतलब ॥

\+ + +

बेहतर दिखाई दें कहीं शक्स व क़मर[16] से आप ।
देखें जो आईना को हमारी नज़र से आप ॥
फ़रियाद आशिकों की गवारा[17] न कीजिये ।
वाक़िफ़[18] नहीं हैं आह व फ़गां[19] के असर से आप ॥
आतश तुम्हारे गिरिया[20] में होता जो कुछ असर ।
करते दरख़्त खुश्क[21] हरे चश्म[22] तर से आप ॥

\+ + +

---

(१) बाल (२) मुख (३) अर्थ (४) मूल (५) केन्द्र (६) धार्मिक अधार्मिक (७) क़ब्र (८) कोना (६) प्रार्थना (१०) कान (११) परिचित (१२) मुंह (१३) आकर्षित (१४) हाल कहने वाला कवि (१५) यद्यपि (१६) सूर्य चन्द्रमा (१७) सहन (१८) परिचित (१६) रोना चिल्लाना (२०) आंसू (२१) सूखे पेड़ (२२) भीगी आँख ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गोया[1] जुबान शमा[2] जो होती तो पूछता।
करती है हिज्र यार[3] में क्योंकर तमाम रात॥
ता सुबह[4] गुफ़्तगू थी निगाहों में यार से।
आंखों में दुश्मनों की किया घर तमाम रात॥
दीवाना कौन से सनम बावफ़ा[5] का हूँ।
ज़िंदां[6] में मेरे आते हैं पत्थर तमाम रात॥
दिन को तो चैन लेने दे ए गर्दिशे फ़लक़[7]।
काफ़ी है मुझको गर्दिशे साग़र तमाम रात॥
राहत का होश है किसे आतश बग़ैर यार।
बालीं[8] में ख़िश्ते ख़ाक[9] है बिस्तर तमाम रात॥

\+ \+ \+

नजर आता है मुझे अपना सफ़र आज की रात।
नब्ज़ चल बसने को देती है ख़बर आज की रात॥
जलवागर[10] माह[11] है खुरशीद लक़ा[12] दिलवर[13] है।
जमा[14] हैं घर में मेरे शम्स व क़मर आज की रात॥
भूलता है कोई बेताबिये दिल[15] का आलम[16]।
याद अवेगी कल ए दर्दे जिगर आज की रात॥
सुबह होती नजर आती नहीं हरगिज़ आतश।
बढ़ गई रोज़ क़यामत[17] से मगर[18] आज की रात॥

\+ \+ \+

---

(१) बोलने वाली (२) दीपक की लौ जो जुबान की तरह है (३) प्रेमिका का विरह (४) प्रातःकाल तक (५) सच्ची प्रेमिका (६) कैदखाना (७) आसमान का चक्कर (८) सिरहाने (९) मिट्टी की ईंट (१०) चमकना (११) चाँद (१२) सूरज का टुकड़ा (१३) प्रेमिका (१४) इकट्ठे (१५) दिल की बेचैनी (१६) दशा (१७) प्रलय का दिन (१८) शायद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़स्ले गुल[१] है लूटिये कैफ़ियते मैख़ाना[२] आज।
दौलते साक़ी से माला माल हैं पैमाना[३] आज॥
बादशाहे वक्त[४] है अपना दिले दीवाना आज।
दाग़े सौदा[५] हम को देता हैं जुनूँ[६] नज़राना[७] आ- ॥
दौलते दुनिया से मुस्तग़नो[८] हूँ मैं दीवाना आज।
गंज[९] उगल देता है मेरे वास्ते वीराना[१०] आज॥
आमद आमद[११] उस सरापा नूर[१२] की है बज़्म में।
शमा उड़ जावे जो हाथ आवे परे परवाना[१४] आज॥
इमत्याज़े खूब व ज़िश्त[१५] अपने ज़माने में नहीं।
एक सा है आहुए मस्त[१६] व सगे दीवाना[१७] आज॥
मुझसे दरिया नोश[१८] की साक़ी पिलाता है शराब।
देखता हूँ मैं भी ज़र्फ़े शीशओ पैमाना[१९] आज॥
चश्म वहदत वीं[२०] में अपनी नेक व बद दोनों हैं एक।
गुर्ग व यूसुफ़[२१] से बराबर है हमें याराना[२२] आज॥

\+ + +

हिज़्[२३] से कब जाते हैं आशिक़ कूये जाना[२४] छोड़कर।
कश्ते पुख़्तां[२५] को कभी भागे न दहक़ा[२६] छोड़ कर॥

---

(१) वसंत का मौसम (२) शराब खाने का नशा (३) बोतल (४) अपने समय का राजा (५) पागलपन का दाग़ (६) पागल पन (७) भेंट (८) मालदार (९) खज़ाना (१०) सुन्सान स्थान (११) आगमन (१२) सर से पैर तक प्रकाश (१३) महफिल (१४) पतंगे का पंख अच्छे बुरे का अन्तर (१६) मस्त हिरन (१७) पागल कुत्ता (१८) दरिया पी जाने वाला (१९) बोतल की हैसियत (२०) समानता देखने वाली आँख (२१) भेड़िया और यूसुफ [मिश्र देश की एक कहानी] (२२) मित्रता (२३) लालच (२४) प्रेमिका की गली (२५) पकी खेती (२६) किसान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिट न वादे मर्ग[1] भीं ए दाग़े उल्फ़त[2] है बईद[3]।
साहबे ख़ाना[4] को सोता जाय मेहमां छोड़कर ॥
फ़ुर्क़ते तन[5] से है शादां[6] रूह अपनी जिस क़द्र।
खुश न होगा इस क़द्र दीवाना ज़िंदा छोड़ कर ॥
चांद से रुख़सार[7] पर लहरा के आने दीजिए।
कीजिए अंधेर ज़ुल्फ़ों को परेशां छोड़ कर ॥
बाग़ आलम[8] में वह ऐसा कौन सा महबूब[9] है।
ख़ाक उड़ाती है सबा किस गुल का दामन छोड़ कर ॥
हस्तिये फ़ानी[10] है आतश चार दिन में नेस्ती[11]।
फ़िक्र अक़बा[12] का करे दुनियां को इंसां छोड़कर ॥

\+ \+ \+

क्या समझ कर रौंदते हैं मुझको सय्यारे चमन[13]।
सब्ज़ ये बेगाना[14] हूँ लेकिन हूँ मेहमाने बहार ॥
जान ताज़ा आती है आते ही तेरे बाग़ में।
जाते ही तेरे निकल सी जाती है जाने बहार ॥
बहरे सैरे बाग़[15] जो जाता है तू ए शमा रू[16]।
सदक़े होते हैं पतंगे बन के मुर्ग़ाने बहार[17] ॥
नख़्ले मातम[18] की तरह हूँ बोस्ताने दहर[19] में।
ने[20] सज़ावारे ख़िज़ां[21] आतश न शायाने बहार[22] ॥

× × ×

---

(१) मरने के बाद (२) मुहब्बत का दाग (३) कठिन (४) घर का मालिक (५) शरीर छोड़ना (६) प्रसन्न (७) गाल (८) संसार (९) प्रेमिका (१०) मिट जाने वाली जिन्दगी (११) नष्ट (१२) भविष्य की चिंता (१३) बाग में घूमने वाले (१४) अपरिचित (१५) बाग की सैर के लिए (१६) सुन्दरी (१७) मस्त पक्षी (१८) दुखी दिखाई देने वाले पेड़ (१९) संसार का बाग (२०) न हो (२१) पतझड़ के योग्य (२२) बसंत के मौसम के लायक़।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख़ाक हो जाती है जलकर हमरेह परवाना[१] शमा।
है तो ज़न[२] रखती है लेकिन ग़ैरते मरदाना[३] शमा॥
शाम को आती है वक़्ते सुबह कर जाती है कूच।
मंज़िले हस्ती[४] को समझे है मुसाफिरख़ाना शमा॥
तेरी महफ़िल में अगर देखे मेरी गुस्ताख़ियां।
शोख़िये परवाना[५] समझे बाज़िये तिफ़लाना[६] शमा॥
गिरियये मस्ताना[७] करते-करते आख़िर सो गई।
कर चुकी मामूर[८] अपनी उम्र का पैमाना[९] शमा॥
और कुछ मतलब नहीं परवाना का समझे रहे।
आशना[१०] को आशना बेगाना[११] को बेगाना शमा॥
आशनाये हाल[१२] भी बेगाना बादे मर्ग[१३] है।
गोर पर दीवाना के लाता नहीं दीवाना शमा॥
इज्जते मेहमाँ[१४] है लाज़िम[१५] चाहिये परवाना को।
दर[१६] तलक लेने को आवे लेके साहब ख़ाना[१७] शमा॥

× × ×

सुबह तक चलती है आहों से हमारे बादे तुन्द[१८]।
शाम से फ़ानूस रखती है तहे दामन[१९] चिराग़॥
मंज़िले हस्ती[१९] में दुश्मन को भी अपना दोस्त कर।
रात हो जावे तो दिखला दे तुझे रहज़न[२०] चिराग़॥

+ + +

---

(१) पतंगे के साथ (२) औरत (३) पुरुषों जैसी आन (४) जिन्दगी (५) पतंगे की चंचलता (६) बच्चों के खेल (७) मस्ती से रोना (८) भरपूर (९) जिन्दगी (१०) मित्र (११) पराये (१२) जानने वाले (१२) मरने के बाद (१४) मेहमान की इज्जत (५१) आवश्यक (१६) दरवाजा (१७) घर का मालिक (१८) ठंडी हवा (११) आँचल से नीचे (२०) डाकू।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात भर जलता है यह आठो पहर जलता है वह।
दिल को देखे और अपना सीनये आहन[1] चिराग़॥
ताज़ा हो जाता है यादे रफ़्तगां[2] से दाग़े दिल।
कारवां करता है इस वीराना में रोशन चिराग़॥
अमन[3] में रखती है शर[4] से फ़ितना[5] की रोशन दिली[6]।
चोर फिर जाता है घर में देख कर रोशन चिराग़॥
जा नहीं[7] दाग़े मुहब्बत की दिले बे इश्क़[8] में।
ख़ानये खाली[9] में देखा है कहीं रोशन चिराग़॥
दाग़े दिल की रोशनी काफ़ी है आतश गोर में।
ग़म नहीं इसका न हो अपने सरे मदफ़न[10] चिराग़॥

\+ \+ \+

ग़ैरते महर[11] रश्के माह[12] हो तुम।
खूबसूरत हो बादशाह हो तुम॥
क्योंकर आँखें न हमको दिखलाओ।
कैसे खुश चश्म ख़ुश निगाह[13] हो तुम॥
क्यों मुहब्बत बढ़ाई थी तुमसे।
हम गुनहगार बेगुनाह हो तुम॥
है तुम्हारा ख़याल पेशे नज़र[14]।
जिस तरफ़ जायें सिद्दे राह[15] हो तुम॥
दोनों बन्दे उसी के हैं आतश।
ख्वाह[16] हम उसमें होवें ख्वाह हो तुम॥

\+ \+ \+

---

(१) लोहे का सीना (२) मिटने वालों की याद (३) चैन (४) बुराई (५) उलझनें (६) शुद्ध हृदय (७) जगह (८) बिना प्रेम का हृदय (६) ख़ाली मकान (१०) कब्र के किनारे (११) व (१२) चाँद सूरज को लज्जित करने वाले (१३) अच्छी निगाह वाले (१४) आँख के सामने (१५) रास्ता रोकने वाले (१६) अथवा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वहशी[१] थे बूये गुल[२] की तरह से जहाँ[३] में हम।
निकले तो फिर के आये न अपने मकां में हम॥
बाग़े जहाँ[४] को याद करेंगे अदम[५] में क्या।
कंजे क़फ़स[६] से तंग रहे आशियां[७] में हम॥
अल्ला री[८] बेक़रारिये दिल[९] हिज्र यार[१०] में।
गाहे[११] ज़मीं में थे तो गहे आस्मां में हम॥
दरवाज़ा बन्द रखते हैं मिस्ले हुबाब बहर[१२]।
क़ुफ़्ले दरून ख़ाना[१३] हैं अपने मकां में हम॥
आतश सखुन[१४] की क़द्र ज़माने से उठ गई।
मक़्दूर[१५] हो तो कुफ़्ल[१६] लगा दें दहां[१७] में हम॥

× × ×

उठ गये वस्ल की शब पेश्तर अज़ चार[१८] क़दम।
आगे हम उम्र ख़ां[१९] से भी चले चार क़दम॥
कूये मक़सूद[२०] से यूं रखती है गफ़लत मुझे दूर।
जैसे सों जाने से हो जाते हैं बेकार क़दम॥
अहले आलम[२१] में हूँ मैं ज़िंदों में मुर्दों की तरह।
बढ़ चलें लाख मगर साथ हैं दो चार क़दम॥
ए जुनूं कोह व बयाबांन[२२] भी दिखला मुझको।
रहें पस्ती व बलन्दी[१३] से ख़बरदार[२४] क़दम॥

× × ×

(१) जङ्गली पागल (२) फूल की सुगन्ध (३) संसार (४) संसार रूपी बाग़ (५) परलोक (६) पिंजाड़े का कोना (७) घोंसला (८) या ईश्वर (९) दिल की बेचैनी (१०) प्रेमिका की तरह (११) कर्म (१२) समुद्र के बुलबुले की भाँति (१३) घर के भीतर का ताला (१४) कविता (१५) ताकत (१६) ताला (१७) मुँह (१८) प्रेमिका से पहले (१९) बीत जाने वाली उम्र (२०) लक्ष्य स्थान (२१) संसार के लोग (२२) पहाड़, जङ्गल (२३) ऊँच नीचाई (२४) होशियार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोशे वहशत[१] में जो हों मायले रफ़्तार[२] कदम ।
शहरे हस्ती[३] से है सहराये अदम[४] चार कदम ॥
चाल वह चल कि हो जान से दिले आलम[५] को अज़ीज़ ।
आंखों पर रखे तेरे काफ़िर व दींदार[७] क़दम ॥
हैफ़[८] है राहे खुदा[९] में नहो उनसे कोशिश ।
दस्ते क़ुदरत[१०] ने बनाये नहीं बेकार क़दम ॥
यह सदा[११] आती है ज़ंजीर से मुझ मजनूं की ।
आज मजबूर हैं वह कल जो थे मुख़्तार[१२] क़दम ॥

+ + +

चमन में रहने दे कौन आशियां नहीं मालूम ।
निहाल[१३] किसको करे बाग़बां नहीं मालूम ॥
मेरे सनम[१४] का किसी को मकां नहीं मालूम ।
खुदा का नाम सुना है निशां नहीं मालूम ॥
आख़िर[१५] हो गये ग़फ़लत में दिन जवानी के ।
बहार उम्र[१६] हुई कब ख़िज़ां नहीं मालूम ॥
सुना जो ज़िक्र इलाही[१७] तो उस सनम ने कहा ।
अयां[१८] को जानते हैं हम निहां[१९] नहीं मालूम ॥
मेरी तरह तो नहीं उसको इश्क़ का आज़ार[२०] ।
यह ज़र्द[२१] रहती है क्यों ज़ाफ़रां[२२] नहीं मालूम ॥

+ + +

---

(१) पागलपन से (२) चलने की तैयारी (३) जीवन रूपी नगर (४) मृत्य रूपी जंगल (५) संसार (६) प्रिय (७) धार्मिक व अधार्मिक (८) अफ़सोस (९) ईश्वर की ओर (१०) ईश्वर का हाथ (११) आवाज़ (१२) स्वतंत्र (१३) प्रसन्न (१४) प्रेमिका (१५) समाप्त (१६) जीवन का बसंत (१७) ईश्वर चर्चा (१८) प्रकट (१९) छिपा हुआ (२०) रोग (२१) पीली (२२) केसर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जहां व कारे जहां[१] से हूँ बेखबर मैं मस्त।
ज़मीं किधर है कहां आसमां नहीं मालूम॥
खुली है ख़ानये सय्याद[२] में हमारी आंख।
क़फ़स[३] को जानते हैं आशियां[४] नहीं मालूम॥
नसीमें सुबह[५] ने कैसा यह उसको भड़काया।
हुनूज़[६] आतशे गुल[७] का धुवां नहीं मालूम॥
छुटेंगे जीस्त[८] के फन्दे से किस दिन ए आतश।
जनाज़ा[९] होगा कब अपना रवां[१०] नहीं मालूम॥

+ + +

इश्क़े क़मर[११] का क़िस्सा हुआ मुख़्तसर[१२] कहां।
दस्ती से कर चुका हूँ अदम को सफ़र कहां॥
दाग़े जिगर मिटा न सकी आहे सुबह गाह[१३]।
गुल करती है[१४] चिराग़ नसीमे सहर[१५] कहां॥
आईना देखने का गुज़रता नहीं ख़याल।
अपनी ख़बर नहीं उन्हें मेरी ख़बर कहां॥
क़ैदे खुदी[१६] से छूट के जाती है गोर में।
आतश मिला है गुंबदे गर्दां[१७] का दर[१८] कहां॥

+ + +

तुम जो जा निकले नसीमे नौ बहारी[१९] की तरह।
फूल खिल खिल कर गुल व लाला की कलियां हो गई॥

---

(१) संसार का कार्य (२) अत्याचारी के घर में (३) पिंजड़ा (४) घोंसला (५) प्रतःकाल की हवा (६) अभी तक (७) फूल का आग जैसा रंग (८) जीवन (९) लाश (१०) चलन (११) चांद जैसी सुन्दरी का प्रेम (१२) संक्षेप (१३) प्रातः काल की ठंडी सांस (१४) बुझाती है (१५) प्रातः काल की हवा (१६) घमंड का कैद खाना (१७) घूमने वाला आकाश (१८) दरवाजा (१९) वसन्त के मौसम की ताजी हवा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ए सबा दामन है तेरा और मुश्क मजनू का हाथ।
उस परीरू[१] की अगर ज़ुल्फ़ें परेशां हो गईं॥
ख़ानये दिल[२] में तसव्वर खुश जमालों का[३] रहा।
गाह[४] हूरें गाह परियां अपनी मेहमां हो गईं॥
ए मुरादे दिल[५] तेरे कूचा में रखते ही क़दम।
हसरतें जो कुछ की थीं गर्दे परेशां[६] हो गईं॥
यह खुला आतश अनासिर[७] से दिले दीवाना को।
चार दीवारें इकट्ठी होके ज़िन्दां हो गईं॥

\+ + +

बदन सा शहर नहीं दिल सा बादशाह नहीं।
हवास ख़ामसा[८] से बेहतर कोई सिपाह[९] नहीं॥
वह आब[१०] व रंग कहाँ रूये यार[११] का गुल पर।
हज़ार आंख हो नरगिस की वह निगाह नहीं॥
सदा यह कब्र से बेदार दिल[१२] को आती है।
अमल[१३] जो नेक हों तो ऐसी ख़्वाबगाह[१४] नहीं॥
फ़रेब[१५] को दिले अहले सफ़ा में राह नहीं।
वह दश्त[१६] है यह जहां आब[१७] ज़ेरेकाह[१८] नहीं॥
अजाब गोर[१९] है दुनियां के रंज से बदतर[२०]।
सिवा खुदा के करम[२१] के कहीं पनाह[२२] नहीं॥

\+ + +

(१) परियों जैसी सुन्दर (२) हृदय रूपी घर (३) सुन्दरियों का घरान (४) कभी (५) हृदय की इच्छा (६) उड़ती हुई धूल (७) तत्व (८) इंद्रियां (९) चौकीदार (१०) चमक (११) प्रेमिका मुँह (१२) शुद्ध हृदय (१३) कर्म (१४) शयनकक्ष (१५) धोखा (१६) जङ्गल (१७) पानी (१८) घास के नीचे (१९) क़ब्र का कष्ट (२०) ख़राब (२१) कृपा (२२) शरण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बर्क़[1] को उस पर अबस[2] गिरने की हैं तैयारियां।
वर्गे गुल[3] ही आशियां को अपने हैं चिनगारियां॥
मौत के आते ही हमको ख़ुद ब ख़ुद नींद आ गई!
क्या इसी की याद में करते थे शब वेदारियां[4]॥
ए ख़त[5] उसके गोरे गालों पर यह तूने क्या किया।
चांदनी रातें यकायक हो गई अंधियारियां॥
ख़न्दये गुल[6] से सदाये नाला[7] आती हैं मुझे।
खूने बुल बुल से मगर[8] सींची गई हैं क्यारियां॥
कुछ हमीं ख़ाली नही करते हैं यह दहरे ख़राब[9]।
फिर गये हैं यार यूँ ही अपनी अपनी वारियाँ॥
हुक्म कर आतश कि बाज़ारे मुहब्बत बन्द हो।
अब करें टटपूंजिये गर्म अपनी दूकानदारियां॥

\+ \+ \+

हुआ था उसको ऐसा लुत्फ़[10] क्या हासिल[11] गुलिस्तां[12] में।
क़फ़स में अन्दलीबे ख़स्ता जां[13] हैं दिल गुलिस्तां में॥
सबात[14] इसको नहीं यह आलमे वा शद[15] दोरोज़ा[16] हैं।
हंसो इतना भी ए ग़ुचों[17] न तुम खिल खिल गुलिस्तां में।
ख़िज़ां में ज़र्द[18] भी होना चमन का हुस्न रखता है॥
वहारे ज़ाफ़रां[19] हो जाती है दाख़िल गुलिस्तां में।

× × ×

---

(१) विजली (२) बेकार (३) फूल की पत्ती (४) रात का जागना (५) वाल (६) फूलों की हंसी (७) रोने की आवाज़ (८) शायद (९) भ्रष्ट संसार (१०) आनन्द (११) प्राप्त (१२) वाग़ (१३) टूटे दिल वाला (१४) स्थायित्व (१५) प्रकट (१६) दो दिन का (१७) कलियाँ (१८) पीला (१९) केसर की वहार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शराव बेखुदी[1] ऐसी पिला दी साग़रे गुल[2] ने।
रहे सय्याद से मुर्गे चमन[3] ग़ाफ़िल[4] गुलिस्तां में॥
वहार आई है दिल वहलाइये पीरी[5] में ए आतश।
जवानाने चमन[6] की देखिये महफ़िल गुलिस्तां में॥

× × ×

मेरी ज़िद से हुआ है मेहरबां दोस्त।
मेरे एहसान हैं दुश्मन पर हज़ारों॥
वराये शुक्र क़ातिल[7] रोंगटों से।
ज़ुवानें हैं मेरे तन पर हज़ारों॥
नहीं इक मर्द को दुनियां से मतलब।
मरें नामर्द इस ज़न[8] पर हजारों॥
अजव[9] क्या है अगर परवाने बे शमा[10]!
जलें आतश के मदफ़न[11] पर हज़ारों॥

+ + +

आशना[12] मानी[13] से सूरत आशना[14] होता नहीं।
आइना दिल की तरह से हक़नुमा[15] होता नही॥
दर्द मन्दे इश्क[16] जूयाये दवा[17] होता नहीं।
तंदुरुस्ती से यह बीमार आशना होता नही॥
खांर[18] ख़ारे दहर[19] से दिल आशना होता नहीं।
मिस्ल आब व रंग गुल[20] मिल कर जुदा होता नहीं॥

---

(१) मस्ती की शराव (२) फूल जो प्याले के समान है (३) बाग़ के पक्षी (४) बेसुध (५) बुढ़ापा (६) बाग़ की जवानी (७) मारने वाले को धन्यबाद देने के लिये ! (८) औरत (९) आश्चर्य (१०) बिना दीपक के (११) कब्र (१२) परिचित (१३) अर्थ (१४) सूरत पहचानने वाला (१५) सच बात बताने वाला (१६) प्रेम का रोगी (१७) दवा ढूँढ़ना (१८) कांटा (१९) संसार (२०) फूल की चमक व रंग ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किस को पैबन्दे जमीं[१] करती नहीं र.फ्तारे नाज़[२]।
कौन सा सरकश[३] तुम्हारी ख़ाक पा[४] होता नहीं॥
कौन सी शब[५] को वह बुत रहता नहीं आग़ोश[६] में।
शामिले हाल[७] अपने कब फ़ज़्ले ख़ुदा[८] होता नहीं॥

× × ×

अजल[९] आ वरना अब यह रश्क[१०] मुझको कत्ल करता है।
अज़ीज़ां[११] पांव को फैलाये सोते हैं मज़ारों[१२] में॥
हवाये कूये क़ातिल[१३] का कभी आलम[१४] नहीं पाया।
चमन को बारहा[१५] देखा है जा जा कर बहारों में॥
न दो आंसू गिरे यादे इलाही[१६] में इन आंखों से।
उड़ा की ख़ाक ही मेरे चमन के आबशारों[१७] में॥
हुआ है क़हत[१८] क्यों आलम में मूसा व तजल्ली[१९] का।
वही पत्थर नज़र आते हैं अब तक कोहिसारों[२०] में॥
समझता अहले आलम में .ज़ुबां कोई तो मेरी भी।
.ख़ुदाया[२१] काश मैं पैदा हुआ होता गंवारों में॥

× × ×

---

(१) मिट्टी में मिलाना (२) नखरों से भरी चाल (३) घमंडी (४) पैर की धूल (५) रात (६) गोद (७) हाल जानने वाला (८) ईश्वर की कृपा (९) मौत (१०) जलन (११) मित्रगण (१२) कब्र (१३) मारने वाले की गली का वातावरण (१४) दशा (१५) अक्सर (१६) ईश्वर की याद (१७) झरने (१८) अकाल (१९) मूसा पैग़म्बर व दैवी प्रकाश (२०) पहाड़ (२१) या ईश्वर !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुतों के गेसुओ मिज़गां[1] से मुझको काम नहीं।
शिकार तीर नहीं मैं असीर दाम[2] नहीं॥
चमन से बुलबुल व क़ुमरी का इश्क हैरत[3] है।
सबात[4] गुल को नहीं सरो[5] को क़याम[6] नहीं॥
वफ़ाये वादा[7] का किस को यक़ीन यार से है।
कलाम बुत[8] है कुछ अल्लाह का कलाम नहीं॥
रफ़ीक़[9] हाल बुरे वक्त में नहीं कोई।
शरीक[10] जंग में शमशीर का नयाम[11] नहीं॥
दो रोज़ा[12] हुस्न न कर रायगां[13] ग़रूर से यार।
हलाल माल है यह दौलते हराम नहीं॥
गदा[14] व शाह बराबर हैं ख़ाक के नीचे।
लहद[15] में साथ यह क़सरे बलंद बाम[16] नहीं॥
मिलाया ख़ाक में किस किस जवान राना[17] को।
ख़ुदा का क़हर[18] है ए बुत तेरा ख़राम[19] नहीं॥
बलन्द व पस्त[20] सुबुक दोश[21] को बराबर है।
नसीम बे सर व पा[22] का कहां मुकाम नहीं॥
बलन्द हो न ज़मीं से मेरा मज़ार आतश।
निशान क़ब्र से मंजूर मुझको नाम नहीं॥

× × ×

---

(१) पलकें (२) जाल में फँसे हुए (३) आश्चर्य (४) स्थायित्व (५) एक पेड़ (६) ठहराव (७) वादा पूरा होना (८) प्रेमिका का कथन (९) मित्र (१०) शामिल (११) मियान (१२) दो दिन का (१३) बर्बाद (१४) फ़कीर (१५) क़ब्र (१६) ऊँची छत (१७) सुन्दर (१८) क्रोध (१९) चाल (२०) ऊँचा नीचा (२१) जिम्मेदारी से बरी (२२) जिसका कोई ठिकाना न हो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तसव्वर[१] से किसी के मैंने की है गुफ्तगू[२] बरसों ।
रही है एक तस्वीरे ख़्याली रूबरू[३] बरसों ॥
चमन में जाके भूले से मैं ख़स्ता दिल[४] कराहा था ।
किया की गुल से बुलबुल हीलये दर्दे गुलू[५] बरसों ॥

बराबर जान के रखा है उसको मरते मरते तक ।
हमारी क़ब्र पर रोया करेगी आरज़ू बरसों ॥
अगर मैं ख़ाक भी हूँगा तो आतश गर्द बादे आसा[६] ।
रखेगी मुझको सरगश्ता[७] किसी की जुस्तजू[८] बरसों ॥

× × ×

चांद से मुंह को तेरे याद किया करते हैं ।
शबे महताब[९] में फ़रियाद किया करते हैं ॥
एक सा ज़ाहिर व बातन[१०] नहीं माशूक़ों का ।
परदये नाज़[११] में बेदाद[१२] किया करते हैं ॥

बुलबुलों के जो गले खोले हैं लाकर तहे दाम[१३] ॥
चहचहे बाग़ में सय्याद किया करते हैं ।
सुनते हैं शौक़े शहादत[१४] का जो मेरे शुहरा[१५] ॥
याद आतश मुझे जल्लाद किया करते हैं ।

× × ×

दिल की कदूरतें[१६] अगर इंसां से दूर हों ।
सारे निफ़ाक़[१७] गिब्र[१८] व मुसलमां से दूर हों ॥

---

(१) कल्पना (२) बात चीत (३) सामने (४) टूटे दिल वाला (५) गले के दर्द का बहाना (६) बवंडर की तरह (७) चक्कर खिलाना (८) तलाश (६) चांदनी रात (१०) ऊपर व अंदर (११) नखरों की आड़ों में (१२) अत्याचार (१३) जाल के नीचे (१४) मरने की इच्छा (१५) प्रसिद्धि (१६) छल कपट (१७) झगड़े (१८) एक विशेष धर्म के अनुयायी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नज़दीक आ चुकी है सवारी बहार की ।
बर्गे ख़ज़ां रसीदा[1] गुलिस्तां[2] से दूर हों ॥

मिटता नहीं नविश्तये क़िस्मत[3] किसी तरह ।
जौहर[4] कभी न ख़ंजरे बुर्रां[5] से दूर हों ॥

छिड़काव का इरादा है चश्मे पुर आब[6] का ।
गर्द व ग़ुबार[7] कूचये जानां[8] से दूर हों ॥

मुद्दत के बाद आये हैं सहरा[9] में ए जुनूँ ।
दो आबले[10] तो ख़ारे मुग़ीलां[11] से दूर हों ॥

× × ×

तुझ सा कोई ज़माने में मौजिज़ बयां[12] नहीं ।
आगे तेरे मसीह के मुँह में ज़ुबां नहीं ॥

उस ग़ैरते परी[13] का फ़साना कहां नहीं ।
वह बज़्म[14] कौन सी है कि यह दास्तां नहीं ॥

कट जाये वह ज़ुबां जो कहे शमा यार की ।
हरगिज़ दहाने यार[15] से बाहर ज़ुबां नहीं ॥

दो गौहर[16] एक सदफ़[17] में हज़ारों जो ढूंढ़िये ।
दो दिल का एक सीना के अन्दर मकां नहीं ॥

मालूम कुछ नहीं कि चले जाते हैं कहां ।
रेगे रवां[18] से कम मेरी उम्रे रवां नहीं ॥

---

(१) पतझड़ में झड़ जाने वाला पत्ता (२) बाग़ (३) भाग्य का लिखा (४) गुण (५) काटने वाली तलवार (६) आंसू भरी आंख (७) धूल (८) प्रेमिका की गली (९) जंगल (१०) फफोले (११) नुकीले कांटे (१२) जादू बोलने वाला (१३) परियों को लज्जित करने वाला (४१) महफ़िल (१५) प्रेमिका का मुँह (१६) मोती (१७) सीपी (१८) गिरती हुई बालू !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बादे फ़ना[१] खुलेगी तुझे क़द्र जिंदगी।
कौड़ी के मोल बिकने के यह इस्तख़्वां[२] नहीं॥
रंगीं रहेगा खूने शहीदा[३] से कुये दोस्त[४]।
फ़िरदौस[५] की बहार को बीमे ख़ज़ां[६] नहीं॥
आज़ाद होके याद गिरफ़्तारी आपगी।
कंजे क़फ़स[७] में ख़ार व ख़स[८] व आशियां नहीं॥
आतश ही बहरा मंद[९] नहीं फ़ैज़[१०] से तेरे।
इस ख़्वान[११] पर वह कौन है जो मेहमाँ नहीं॥

× × ×

ख़ुदा बख़्शे सनम यह कह के मुझको याद करते हैं।
दुआये मग़फ़रत[१२] मेरे लिये जल्लाद करते हैं॥
खुदा महफ़ूज़[१३] रखे दिल को उन ज़ुल्फ़ों के सौदे से।
गिरफ़्तारे बला[१४] यह सिलसिले आज़ाद करते हैं॥
क़फ़स में जिस्म के मुर्ग़ दिल[१५] अपना सर पटकता है।
किसी पाज़ेब[१६] के दाने कहीं फ़रियाद करते हैं॥
मकीं[१७] हर मानिये रोशनमकां[१८] हर बेत मौंज़ू[१९] है।
ग़ज़ल कहते नहीं हम चन्द घर आबाद करते हैं॥
यह शायर हैं इलाही या मुसव्वर पेशा[२०] हैं कोई।
नये नक़्शे निराली सूरतें ईजाद[२१] करते हैं॥

(१) मरने के बाद (२) हड्डी (३) मरने वालों का रक्त (४) प्रेमिका की गली (५) स्वर्ग (६) पतझड़ (७) क़ैद खाना (८) घास फूस (९) लाभ उठाने वाला (१०) कृपा (११) खाने के नीचे बिछाया जाने वाला कपड़ा (१२) क्षमा मांगना (१३) सुरक्षित (१४) मुसीबत में फँसा हुआ (१५) हृदय रूपी पक्षी (१६) एक जेवर (१७) मकान मालिक (१८) प्रकट अर्थ (१९) पंक्ति (२०) तस्वीर बनाने वाले (२१) बनाते हैं !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शराबे कुहना[1] से आलूदा[2] यूं होते हैं मैकश[3] ।
उरूसे नौ[4] से क़ुरबत[5] जिस तरह दामाद करते हैं ॥
खयाले ख़त[6] विसाले बोसये लब[7] में नहीं रहता ।
इबारत भूल जाती है जो मतलब याद करते हैं ॥
गुनहगारों की गरदन मारते हैं हुक्म शारअ[8] से ।
ख़्याल अपने गुनाहों का नही जल्लाद करते हैं ॥
क़दम रहता है साबित[9] जिनका इस सख़्तिये दौरां[10] में ।
बहादुर हैं वही सर किलाये फ़ौलाद[11] करते हैं ॥
अजब न्यामत[12] अता[13] की है खुदा ने अहले ग़ैरत[14] को ।
अजब यह लोग है ग़म खाके दिल को शाद करते हैं ॥
पहनते है क़फ़न मैला हुआ जाता है ए आतश ।
सराये गोरे वीरां[15] हैं उसे आबाद करते हैं ॥

× × ×

मुमकिन नहीं है दूसरा तुझसा हज़ार में ।
होता है इक बहिश्त का दाना अनार में ॥
खूने जिगर से अपने ग़मे दिल हूँ पालता ।
रखते हैं तिफ़्ले अश्क[16] को मिज़गां[17] किनार[18] में ॥
क्या क्या गुलों ने कान हैं अपने खड़े किये ।
आदम[19] को सुन के यार की फ़स्ले बहार[20] में ॥

---

(१) पुरानी शराब (२) सने हुए (३) शराबी (४) नई दूल्हन (५) निकटता (६) बालों का ध्यान (७) होंठो का चुम्बन (८) धर्म की आज्ञा (९) पक्का (१०) जमाने की दिक्कतें (११) लोहे का किला जीतना (१२) धन (१३) देना (१४) गंभीर लोग (१५) सुनसान क़ब्र रूपी सराय (१६) आंसू रूपी बच्चे (१७) पलकें (१८) गोद (१९) आगमन (२०) बसंत का मौसम !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिरता हूँ फेरता है वह परदा नशीं[1] जिधर।
पुतली की तरह से नहीं मैं अख़्तियार में॥
वर्बाद हो रहे हो कुछ आतश तुम्हीं नहीं।
मिट्टी ख़राब अपनी भी है इस दयार[2] में॥

× × ×

चश्मे मस्ताना[3] की गरदिश से तह व बाला[4] हों: दिल।
इश्क़ बाज़ों की सफ़ें[5] उल्टे यह साग़र सैकड़ों॥
वह रगे सौदा[6] हूँ मैं फ़ुरकत[7] जूनूं[8] के दरमियां[9]।
टूट कर रह रह गये हैं जिसमें नश्तर[10] सैकड़ों॥
फ़क्र के कूचे[11] में क़द्रे दौलते दुनियाँ[12] नहीं।
ठोकरें खाते हैं याँ पारस से पत्थर सैकड़ों॥
रौंदता हूँ सब्ज़ये रह[13] की तरह वह बूटियाँ।
ढूंढ़ते फिरते हैं जिनको कीमिया गर[14] सैकड़ों॥
बहरे हस्ती[15] में मैं वह कश्ती हूँ जिसने बेशतर[16]।
शौक़ में गरदाब[17] के तोड़े हैं लंगड़ सैकड़ों॥
दिल दिया चाहे तो आतश दिलरुबा[18] मौजूद हैं।
ख़ूबतर[19] से ख़ूबतर बेहतर से बेहतर सैकड़ों॥

× × ×

तेरी खुश चश्मी[20] का अफ़साना सुनाता हूँ मैं।
ख़्वाबे खरगोश[21] से आहू[22] को जगाता हूँ मैं॥

---

(१) परदे में रहने वाला (२) मुल्क (३) मस्त आँख (४) ऊपर नीचे (५) क़तारें (६) प्याले (७) पागल पन की नस (८) विरह (६) पागलपन (१०) बीच (११) साधुओं की गली में (१२) धन की इज़्ज़त (१३) रास्ते की घास (१४) रसायनिक विशेषज्ञ (१५) जीवन (१६) अधिकतर (१७) भंवर (१८) प्रेमिका (१६) सुन्दर (२०) सुन्दर दृष्टि (२१) खरगोश की नींद (२२) हिरन !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साक़िया जाम[1] को अल्लाह सलामत रखे।
यह कदह[2] मेरा है ख़ैर[3] इसकी मनाता हूँ मैं॥
बे नक़ाब[4] आता है गुलगश्त[5] को वह रश्के[6] बहार।
बुलबुलों को चमनिस्तां[7] से उड़ाता हूँ मैं॥
शमा की तरह से जलने लगे शोला[8] हो बलंद।
सोज़िशे दिल[9] को ज़ुबां पर नहीं लाता हूँ मैं॥
कूय मक़सूद[10] के सौदे में शब व रोज़[11] आतश।
जादा[12] की तरह तुझे राह में पाता हूँ मैं॥

× × ×

इस शश जहत[13] में ख़ूब तेरी जुस्तजू करें।
काबा[14] में चल के सिजदा[15] तुझे चार सू[16] करें॥
आशिक जो हुस्न पाक[17] में कुछ गुफ़्तगू करें।
दामन का पीछे नाम लें पहले वज़ू[18] करें॥
अफ़साना गोई[19] उक़्द गेसुये यार[20] में।
ख़ामोश हों चिराग़ जो हम गुफ़्तगू करें॥
मस्ती में मुझसे बेअदबी होगी यार से।
मुझको गुनाह गार न जामो सुबू[21] करें॥
आतश यह वह ज़मीं है कि जि. में है क़ौल दर्द[22]।
दिल ही नहीं रहा है जो कुछ आरज़ू करें॥

× × ×

---

(१) प्याला (२) प्याला (३) सुरक्षा (४) बिना पर्दा (५) बाग़ की सैर (६) बहार को लज़्जित करने वाला (७) बाग़ (८) लपट (६) दिल की जलनी (१०) लक्ष्य स्थान (११) दिन रात (१२) रास्ता (१३) छः दिशायें (१४) तीर्थस्थान (१५) झुकना (१६) चारों ओर (१७) पवित्र सौंदर्य (१८) हाथ मुँह धोना (१६) कहानी कहना (२०) प्रेमिका के बाल (२१) शराब के प्याले (२२) कवि दर्द का कथन।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शरफ़ बख़्शा[१] गुहर[२] को सर्फ़ करके[३] तूने ज़ेवर में।
नगीं को नाम ने तेरे बिठाया ख़ानये ज़र[४] में॥

यह कैफ़ियत[५] उसे मिलती है हो जिसके मुक़द्दर[६] में।
मये उल्फ़त[७] न ख़ुम में है न शीशे में न साग़र में॥

रहा करता है नज़्में शेर[८] का सोदा मेरे सर में।
उरूसे फ़िक्र[९] इन रोज़ों लदी रहती है ज़ेवर में॥

निकलकर कंजे अज़्लत[१०] से न कर हंगामा अफ़रोज़ा।[११]
शरर[१२] याक़ूत[१३] का हम संग[१४] है जबतक है पत्थर में॥

जहां चाहे बसर अवक़ात[१५] करले चार दिन बुलबुल।
चमन में आशियाना है क़फ़स सय्याद के घर में॥

न जब तक हम प्याला[१६] हो कोई मैं मय[१७] नहीं पीता।
नहीं मेहमान तो फ़ाक़ा है ख़लील अलाह[१८] के घर में॥

वही तासीर[१९] देगा आतशीं नालो[२०] में भी अपने।
ल्याक़त दी है जिसने शीशे के बनने की पत्थर में॥

यह राह व रस्म खुद बीनी[२१] हसीनों में है मुद्दत से।
खुले थे जौहर इस आईना के अहदे सिकन्दर[२२] में॥

मआले कार[२३] की सूरत भी आंखों को नजर आये।
लगा देना था इक आईना भी क़ब्रे सिकन्दर में॥

---

(१) प्रतिष्ठा दिया (२) मोती (३) इस्तेमाल करके (४) जेवर के भीतर (५) दशा (६) भाग्य (७) प्रेम की शराब (८) कविता (९) कल्पना की दुल्हन (१०) एकांत (११) चंचलता और उत्पात (१२) चिनगारी (१३) एक बहुमूल्य पत्थर (१४) साथी (१५) जीवन बिताना (१६) साथ पीने वाला (१७) शराब (१८) एक पैग़म्बर का नाम (१९) प्रभाव (२०) गरम आहें (२१) अपनी प्रशंसा की आदत (२२) सिकंदर बादशाह का युग (२३) कार्य का फल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निहायत हिर्स मय[1] है ज़िन्दगी में मुझ क़दह कश[2] को ।
यक़ीं है नशा रह जाये मेरे मिट्टी के साग़र[3] में ॥
क़नाअत[4] दी है मिस्ले क़ब्र[5] मुझको खाकसारी[6] ने ।
रहूँगा बाग़ बाग़[7] आतश मैं इक फूलों की चादर में ॥

× × ×

हमेशा तलवे खुजलाया किये शौके बयाबां[8] में ।
रही नालां[9] हमारे पांव से ज़ंजीर ज़िंदा[10] में ॥
यह मुझ दीवाने की ज़ंजीर से आवाज़ आती है ।
वह कीचड़ में फंसा है जो है आब व गिल[11] के ज़िंदां में ॥
गिरफ़्तारी में आज़ादी की कैफ़ियत[12] रही हासिल ।
रहा जामा[13] से बाहर अपने मैं दीवाना ज़िंदां में ॥
तबांहीमें है लाज़िम[14] यादेहक़[15] अहले तवक्कुल[16] को ।
खुदा पर छोड़ता है ना खुदा[17] कश्ती को तूफ़ां में ॥
तमाशा है जो चश्मे बुलबुल व परवाना[18] से देखे ।
अजब शमायें हैं महफ़िल में अजायब गुल गुलिस्तां में ॥

× × ×

तोड़िये तोबा को कीजे बादाख़्वारी इन[19] दिनों ।
मौसमे गुल है कहां परहेज़गारी इन दिनों ॥
फ़स्ले गुल है याद आती है मुझे रफ़्तार यार ।
चलती है बन बन के क्या बादे बहारी[20] इन दिनों ॥

---

(१) शराब की लालच (२) शराबी (३) मिट्टी का प्याला (४) सब्र (५) कब्र की तरह (६) नम्रता (७) प्रसन्नता (८) जंगल का शौक (९) दुःखी (१०) जेल (११) शरीर (१२) दशा (१३) कपड़ा (१४) आवश्यक (१५) ईश्वरकी याद (१६) भरोसा करने वाले (१७) मल्लाह (१८) पतंगा (१९) शराब पीना (२०) बसंत बहार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामना रहता है अश्के सुर्ख[1] व रंगे ज़र्द[2] का।
आशनाई[3] दर्द से है ग़म से यारी[4] इन दिनों॥
दोस्तदार उसका जो मुझसा उठ गया दुनिया से है।
बेकसी फिरती है कैसी मारी मारी इन दिनों॥
यार आज़ुर्दा[5] है आतश आस्मां है बर ख़िलाफ़[6]।
कौन सुनता है हमारी आह ज़ारी[7] इन दिनों॥

× × ×

दोस्त ही जब दुश्मने जां हो तो क्या मालूम हो।
आदमी को किस तरह अपनी क़ज़ा[8] मालूम हो॥
फिर गया है इस क़दर रंगे ज़माना[9] चाहिये।
आईना में भी न सूरत आशना[10] मालूम हो॥
आंख[11] पाते ही ख़याले यार ने की दिल में राह।
मिल ही रहता है मकां जिसका पता मालूम हो॥
आशिक़ों से पूछिये ख़ूबी लबे जां बख़्श[12] की।
जौहरी को क़दर लाले बे बहा[13] मालूम हो॥
दाम[14] में लाया है आतश सब्ज़ये ख़ते बुतां[15]।
सच है क्या इंसां को क़िस्मत का लिखा मालूमहो॥

× × ×

शफ़ा[16] मरीज़े मुहब्बत को ज़ीनहार[17] न हो।
बरंगे शमा[18] न हों हम अगर बुख़ार न हो॥

(१) लाल आंसू (२) पीला रंग (३) मित्रता (४) दोस्ती (५) खिन्न (६) विरुद्ध (७) रोना चिल्लाना (८) मृत्यु (९) संसार की दशा (१०) परिचित (११) इशारा (१२) प्राणदायक (१३) अमूल्य लाल (१४) जाल (१५) सुन्दरियों के बाल (१६) उपचार (१७) हरगिज (१८) दीपक की तरह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुआ तो फिर इसे जाते हुए नहीं देखा।
गुबार चश्म[1] दिले यार[2] का गुबार न हो॥
फ़क़ीर को नहीं दरकार[3] ताक़ कसरा[4] का।
बलन्द नक़्शे क़दम[5] से मेरी मज़ार[6] न हो॥
सनम परस्ती[7] को ज़ाहिद खा[8] रखे न रखे।
गिला[9] नहीं है जो सूफ़ी[10] शराब ख़्वार[11] न हो॥
कभी-कभी जो दिखा आये रूये रंगी[12] तो।
ख़िज़ां में मुर्ग़े चमन को ग़मे बहार न हो॥
बरंग साया[13] गुज़र शाह राहे हस्ती[14] से।
किसी के दोश[15] का आतश जनाज़ा[16] बार[17] न हो॥

× × ×

न सुना था सो वह कानों ने सुनाया मुझको।
जो न देखा था इन आँखों ने दिखाया मुझको॥
शुक्र सद शुक्र[18] ताल्लुक़ न हुआ दिल को कहीं।
यार व अग़यार[19] के झगड़े से छुड़ाया मुझको॥
फ़िक्रे आशार[20] में काटी शबे तारीक फ़िराक़[21]।
रात भर सुबह के मज़मू[22] ने जगाया मुझको॥
शाम से पहलुये ख़ाली[23] ने इक आफ़त ढाई।
सुबह तक तालये खुफ़्ता[24] ने जगाया मुझको॥

× × ×

(१) आँख की धूल (२) प्रेमिका का हृदय (३) आवश्यकता (४) ऊँचा ताक (५) पैर के निशान से ऊँचा (६) क़ब्र (७) प्रेम करना (८) उचित (९) शिकायत (१०) धार्मिक व्यक्ति (११) शराबी (१२) चमकता चेहरा (१३) साया की तरह (१४) जिन्दगी का रास्ता (१५) कंधा (१६) लाश (१७) बोझ (१८) धन्यवाद (१९) अपने पराये (२०) कविता की चिंता (२१) विरह की अंधेरी रात (२२) विषय (२३) खाली गोद (२४) सोया हुआ भाग्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तेरे सिवा कोई तरकीब दिल पसन्द न हो।
जो बर्क़ तूर[१] भी चमके तो आँख बन्द न हो॥
निकलती ही नहीं आईना ख़ाना[२] से बाहर।
.गुरूर हुस्न[३] से इतना भी .खुद पसन्द[४] न हो॥
गवारा[५] यां दिले मूज़ी[६] की भी शिकस्त[७] न हो।
हमारी कफ़्श[८] से मूज़ी को भी गज़न्द[९] न हो॥
जो रोये हाल पे अपने वह क्या किसी को हंसे।
वह दिल दिखाये किसी का जो दर्द मंद न हो॥
जुबां वह गंग[१०] हो जिससे न आफ़रीं[११] निकले।
वह गोश[१२] कर जो आतश सखुन पसन्द[१३] न हो॥

× × ×

मारा है ज़ब्त[१४] ने मुझे इश्क़े हबीब[१५] में।
मुर्दा मेरा जलायें तो उसमें धुवां न हो॥
ए आसमां नमूद[१६] नहीं हमको चाहिये।
बादे फ़ना[१७] मज़ार[१८] का अपने निशां न हो॥
बुलबुल हज़ार ज़बह[१९] हों टूटे न एक गुल।
सैय्याद हो चमन में मगर बाग़बां न हो॥
दैर व हरम[२०] में शेख़ व बरहमन रहें ख़राब।
मिलता है वह कहां कहीं जिसका मकां न हो॥

× × ×

---

(१) तूर पहाड़ का प्रकाश (२) सजावट का कमरा (३) सौंदर्य का घमंड (४) अपने को पसन्द करने वाला (५) सहन (६) पापी मन (७) हार (८) मिट्टी (९) तकलीफ़ (१०) गूँगी (११) प्रशंसा (१२) कान (१३) बात पसन्द करने वाला (१४) सहन (१५) प्रेमिका का प्रेम (१६) प्रसिद्धि (१७) मिटने के बाद (१८) क़ब्र (१९) काटे जाना (२०) मंदिर व मस्जिद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साफ़ हो हर चन्द बद्बातिन[1] अज़ीज़े दिल[2] न हो।
कज नुमा आईना[3] हरगिज़ दीद के क़ाबिल[4] न हो॥
ए सनम[5] कोई नहीं महबूब[6] तुझ सा दूसरा।
सख़्त काफ़िर[7] है जो वहदत[8] का तेरी क़ायल[9] न हो॥
है ग़ुरूरे हुस्न दो रोज़ा[10] से अज़ .ख़ुद रफ़्ता[11] यार।
इस क़दर भी नशये माजून आब व गिल[12] न हो॥
डूब जाना पार उतरना है मुहीते इश्क़[13] से।
यह तो है बह्‌रे मुहब्बत[14] की नहीं साहिल[15] न हो॥
कंज तनहाई[16] में मैंने जिन्दगी की है बसर।
गोर[17] भी मेरी किसी की गोर के शामिल न हो॥

× × ×

दिले बेताब को फ़रियाद व फ़ुग़ां[18] करने दो।
पहले ग़ुम्माज़[19] ही को क़िस्सा बयां करने दो॥
सामने आ ही गया लश्करे अंदोह व मलाल[20]।
अब तो सीधे मेरी आँखों को निशां करने दो॥
आख़िरे कार तहे ख़ाक[21] है मसकन[22] सब का।
अहले दौलते[23] को बुलन्द आज मकां करने दो॥

× × ×

---

(१) चाहे जितना दुष्ट प्रकृति (२) हृदय से प्रिय (३) टेढ़ा दिखाई पड़ने वाला दर्पण (४) देखने योग्य (५) प्रेमिका (६) प्रेमिका (७) अधार्मिक (८) एक होना (९) मानने वाला (१०) दो दिन के सौंदर्य का घमंड (११) बेसुध (१२) शरीर रूपी माजून का नशा (१३) प्रेम का घेरा (१४) प्रेम का समुद्र (१५) किनारा (१६) एकांत (१७) क़ब्र (१८) रोना चिल्लाना (१९) चुग़लखोर (२०) दुःख की सेना (२१) मिट्टी के नीचे (२२) निवास (२३) धनी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जोर व जफ़ाये यार[१] से रंज व मेहन[२] न हो।
दिल पर हुजूमे ग़म[३] हो जबीं[४] पर शिकन न हो॥
रो इस क़दर कि आबरूये अब्र तर[५] रहे।
इतना न हंस कि बर्क़[६] कभी खन्दाज़न[७] न हो॥
हस्ती[८] में याद आये न क्योंकर अदम[९] मुझे।
वह आदमीं नहीं जिसे हुब्बउल वतन[१०] न हो॥
किस घर में रोशनी नहीं अंधेर है दिला[११]।
रोशन चिराग़ इश्क़ से क़सरे बदन[१२] न हो॥
कह कर हर इक अज़ू[१३] से यह रूह चल बसी।
इस तरह बे चिराग़ कोई अंजुमन[१४] न हो॥
रङ्गीनी सखुन[१५] रहेगी रोज़ हश्र[१६] तक।
उड़ जाय चार दिन में यह रङ्गे चमन न हो॥

× × ×

ठोकरें मार के मुर्दों को जिलाते न चलो।
रश्क[१७] से ख़ाक में ज़िन्दों को मिलाते न चलो॥
सायले बोसा[१८] को मुँह फेर के कहता है वह शोख़[१९]।
नेक तैनत[२०] हो तो बदज़ाती[२१] पर आते न चलो॥
दो कदम साथ जो चलता हूँ मैं गिरियां[२२] उनके।
यही फ़रमाते हैं हंस के हंसाते न चलो॥

(१) प्रेमिका के अत्याचार (२) दुःख (३) दुखों का बोझ (४) मत्था (५) बादल की इज्जत (६) बिजली (७) हंसना (८) संसार (९) परलोक (१०) देश प्रेम (११) ए दिल (१२) शरीर रूपी महल (१३) शरीर के अंग (१४) स्थान (१५) कविता की प्रसिद्धि (१६) प्रलय के दिन तक (१७) जलन (१८) चुम्बन मांगने वाले (१९) चंचल (२०) सज्जन (२१) दुष्टता (२२) रोता हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उनसे कह दे कोई आते हैं जो यह लक्क़ये अब्र[1] ।
चश्म आतश की तरह आंसू बहाते न चलो ॥

× × ×

हवस न्यामत[2] की बादे मर्ग[3] भी रहती है इंसां को ।
लहद[4] में पास रख देते हैं दूर उफ़्तादा दंदां[5] को ॥
न उठ कर दर बदर[6] हो कंज अज़लत[7] में जो बैठा है ।
दहन[8] से छूट कर बेक़दर[9] देखा हमने दंदां[10] को ॥
फ़िराके दोस्त[11] का सदमा न हो दुश्मन के दिल को भी ।
मुहब्बत हो उसे भी जिससे उल्फ़त होवे इंसां को ॥
तेरी दरगाह के[12] ज़र्रों से है जब सामना होता ।
हिक़ारत[13] की नज़र से देखते हैं महर तावां[14] को ॥
फ़िराक़े यार में गिरिया का ज़ब्त[15] आतश नहीं बेहतर ।
बुखारे दिल निकलने दो बसर लेने दो बारां[16] को ॥

× × ×

फ़क़ीरी सलतनत है खाकसारे कूये जानां[17] को ।
मुबारक जाम[18] हो जमशेद[19] को ख़ातम[20] सुलेमां[21] को ॥

---

(१) बादल के टुकड़े (२) धन की लालसा (३) मरने के बाद (४) क़ब्र (५) दूर गिरे हुए दांत (६) दरवाजे (७) एकांत (८) मुँह (६) बेइज्जत (१०) दांत (११) मित्र का बिरह (१२) टुकड़े-कण (१३) घृणा (१४) चमकदार सूरज (१५) आँसू का रोकना (१६) वर्षा (१७) प्रेमिका की गली (१८) शराब का प्याला (१६) एक बादशाह (२०) अंगूठी (२१) एक बादशाह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग़मे उल्फ़त को कितना ही निगलिये दिल नहीं भरता।
यह वह न्यामत है भूखा रखती है जो अपने मेहमां को॥
मुहब्बत की निगह[1] से लुत्फ़[2] हर इक रङ्ग में पाया।
तमाशा था जो देखा चश्मे बुलबुल[3] से गुलिस्तां को॥

+ + +

निकलती किस तरह है जान मुज़तर[4] देखते जाओ।
हमारे पास से जाओ तो फिर कर देखते जाओ॥
नसीमे नौ बहारी[5] की तरह आये हो गुलशन में।
तमाशाये गुल व सरो सनोबर[6] देखते जाओ॥
जिधर जाते हो हर घर में से यह आवाज़ आती है।
मसीहा[7] हो जो बीमारों को दम भर देखते जाओ॥
क़दम अंदाज़ से बाहर हुए जाते हैं साहब के।
सितम[8] रफ़्तार में करती है ठोकर देखते जाओ॥
मिलें वह राह में अब की तो कहता हूँ जो हो सो हो।
दिखा दो घर मुझे अपना मेरा घर देखते जाओ॥
कभी हिल जाते हैं अबरू[9] कभी जुंबिश[10] है मिज़गां[11] को।
दिखाते ही हमें शमशीर व ख़ंजर देखते जाओ॥
न फेरो उस से मुँह आतश जो कुछ दरपेश[12] आ जाये।
दिखाता है जो आँखों को मुक़द्दर[13] देखते जाओ॥

+ + +

(१) प्रेम की दृष्टि (२) आनन्द (३) बुलबुल की आंख (४) बेचैन प्राण (५) नये बसंत की हवा (६) बाग़ के पेड़ (७) चिकित्सक (८) अत्याचार (९) भौं (१०) हिलना (११) पलकें (१२) सामने (१३) भाग्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहनुमा[1] यादे इलाही[2] का हुआ इश्क़े सनम[3] ।
पहुँचे हम काबये मक़सूद[4] को कुहिसार[5] की राह ॥

शुहरये हुस्न[6] ने दीदार का मुश्ताक़[7] किया ।
निकहते गुल[8] ने बनाई मुझे गुलज़ार की राह ॥

पेशतर[9] सब से किया तालये बद[10] ने बेदार[11] ।
हश्र के रोज़ भी दिखलाई मुझे यार की राह ॥

ईद होगी रमज़ान ज़ायेगा ए बादा कशो[12] ।
बंद रहने की नहीं ख़ाना खुमार[13] की राह ॥

गैर हक़[14] को मैं समझता हूँ ख़याले बातिल[15] ।
आतश इक दिल में नहीं होती है दो चार की राह[16] ॥

× × ×

देखा है सुबू[17] को जो धरे सर के तले हाथ ।
याद आया है साक़ी का वह साग़र के तले हाथ ॥

दामन का ख़याल आता है जब जेब दरी[18] में ।
दीवानों के हो जाते हैं ऊपर के तले हाथ ॥

दिल दोस्तिये बुत[19] का न पाबंद हो यारब[20] ।
दुश्मन का भी दब जाय न पत्थर के तले हाथ ॥

आशिक से निगाहों में यह कहतीं हैं वह आंखें ।
मिज़गां[21] जो छुई रख दिया ख़ंजर के तले हाथ ॥

---

(१) पथ प्रदर्शक (२) ईश्वर की याद (३) संसारिक प्रेम (४) निर्दिष्ट स्थान (५) पहाड़ (६) सौंदर्य प्रसिद्धि (७) इच्छुक (८) फूल की सुगंध (९) पहले (१०) दुर्भाग्य (११) जगाना (१२) शराबियों (१३) शराब घर (१४) सिवाय ईश्वर (१५) झूठा विचार (१६) प्रेम (१७) प्रातःकाल (१८) जेब फाड़ना (१९) प्रेमिका की मित्रता (२०) या ईश्वर (२१) पलकें

५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मस्ती में तलबगार[१] तो साक़ी से है मैं[२] का ।
काटूंगा मैं कांपेगा जो साग़र के तले हाथ ॥
सहरा[३] को चलो चाक गरेबां[४] करो आतश ।
लंगर में न हैं पांव न पत्थर के तले हाथ ॥

× × ×

पास दिल रखता है मंजूर नज़र[५] हर आईना ।
नेक व बद से पेश आता है बराबर आईना ॥
जबनतब चढ़ता है उस क़ातिल के मुंह पर आईना ।
टुकड़े टुकड़े होगया इक दिन मुकर्रर[६] आईना ॥
चांद के ऊपर नहीं पड़ती किसी सुरत से ख़ाक ।
मुंह तो देखें लेके यूसुफ़ के बिरादर[७] आईना ॥
आंख भर कर एक दिन देखा न रुये साफ़[८] यार ।
मैं वह मुफ़लिस[९] हूँ नहीं जिसको मुयस्सर[१०] आईना ॥
देख कर हाले ज़ुबूं[११] को मेरे हैरां रह गया ।
यार के दिल से भी था हर चंद[१२] पत्थर आईना ॥

× × ×

मैख़ानये उल्फ़त[१३] में नहीं जाय तुनुक ज़र्फ़[१४] ।
किस जाम में यां नशा नहीं ख़ुम[१५] से ज़्यादा ॥
हसरत[१६] की निगाहों से अयां हाल है मेरा ।
गोया[१७] हूँ ख़मोशी में तकल्लुम[१८] से ज़्यादा ॥

---

(१) चाहने वाला (२) शराब (३) जंगल (४) कपड़े फाड़ना (५) प्रिय (६) दोबारा (७) भाई (८) साफ मुखड़ा (९) ग़रीब (१०) प्राप्त (११) खराब हाल (१२) हर प्रकार से (१३) प्रेम का शराब ख़ाना (१४) ओछे लोगो का स्थान (१५) मटका (१६) अतृप्त इच्छायें (१७) बोलने वाला (१८) बात चीत !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिजली को जलावेंगे वह लब[1] दांत दिखा कर।
शग़ल[2] आजकल उनको है तबस्सुम[3] से ज्यादा॥

कहता है वह शोख़ आईना में अक्स[4] से आतश।
तुम हम से ज्यादा हो हम तुमसे ज्यादा॥

× × ×

मंजिले मक़सूद[5] का सौदा[6] है अपने सरके साथ।
गर्द रह की तरह लिपटे जाते हैं रहबर[7] के साथ॥

पर कतरता है मेरे सय्याद तो काट इस तरह।
हसरते परवाज़[8] भी उड़ जाये बाल व पर के साथ॥

क़द्र[9] दीवाना की हंगामये तिफ्लां[10] नहीं।
चाहिये सालार लश्कर[11] को रहे लशकर के साथ॥

सूरत आबाद जहां[12] के हुस्न का शैदा न हो।
सन्दल इस बुतख़ाना[13] में मिलता है दर्दे सर के साथ॥

जब रुलाता है तसव्वर[14] तेरे दांतों का मुझे।
तौलता हूँ अश्क के क़तरों[15] को मैं गौहर[16] के साथ॥

× × ×

ख़ुदा याद आ गया मुझको बुतों की बे नमाज़ी[17] से।
मिला बामे हक़ीक़त[18] जीनये इश्क़े मजाज़ी[19] से॥

---

(१) होंठ (२) व्यस्त होना (३) मुस्कान (४) छाया (५) लक्ष्य स्थान (६) पागल पन (७) पथ प्रदर्शक (८) उड़ने की इच्छा (९) इज़्ज़त (१०) बच्चों का शोर (११) फ़ौज का सरदार (१२) ऊपरी दिखावे का संसार (१३) संसार (१४) कल्पना (१५) आंसू की बूंदे (१६) मोती (१७) लापर-वाही (१८) वास्तविकता रूपी छत (१९) सांसारिक प्रेम की सीढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बरंगे सब्ज़ा[१] रौंदता हूँ रहे महबूब गुलरू[२] मैं।
यह पामाली[३] है बेहतर दो जहां की सर फ़राज़ी[४] से॥
पनाह[५] ए पुर फ़रेबो[६] क़हर[७] से अल्लाह के मांगो।
सज़ा देता है हाकिम आदमी को क़लब साज़ी[८] से॥

× × ×

दूर करवाया पसीने ने नक़ाबे[९] गुल अज़ार।
क़तरये शबनम[१०] भी दीवारे चमन[११] ढ़ाने लगे॥
तू भी तो ए शोलारू[१२] इक शब उलट मुंह से नक़ाब।
गिर्द[१३] शमाओं के बहुत रहते है परवाने लगे॥
मुश्क[१४] की बू[१५] सूंघकर इक बद दिमाग़ी[१६] सी हुई।
याद ज़ुल्फ़े यार आई सर को टकराने लगे॥

× × ×

ख़ुशा[१७] वह दिल कि हो जिस दिल में आरज़ू तेरी।
ख़ुशा दिमाग़ जिसे ताज़ा रखे बू तेरी॥
यक़ीं है अटकेगी जान अपनी आके गर्दन में।
सुना है जां[१८] है क़रीबे रगे गुलू[१९] तेरी॥
वह गुल हूँ मैं कि तेरा रंग जिससे ज़ाहिर है।
वह ग़ुंचा हूँ कि बग़ल में है जिसकी बू तेरी॥

---

(१) घास की तरह (२) सुन्दर प्रेमिका की राहें (३) पैर से कुचलना (४) दोनों संसार में उच्च स्थान पाना (५) शरण (६) धोके बाज़ी (७) क्रोध (८) हृदय का कपट (९) सुन्दरी का बुरक़ा (१०) ओस की बूंदे (११) बाग़ की दीवार (१२) चमकदार मुख (१३) चारों ओर (१४) कस्तूरी (१५) सुगन्ध (१६) मन बिगड़ना (१७) कितना अच्छा (१८) स्थान (१९) गले की नस के पास।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिरे हैं मशरिक़ व मग़रिब[1] से ता जूनूब व शुमाल[2]।
तलाश की है सनम हमने चार सू[3] तेरी॥

शबे फ़िराक़[4] में इक दम नहीं क़रार[5] आया।
ख़ुदा गवाह है शाहिद[6] है आरज़ू तेरी॥

दिमाग़ अपना भी ऐ गुलबदन[7] मुअत्तर[8] है।
सबा[9] ही के नहीं हिस्सा में आई बू तेरी॥

पढ़ा है हमने भी क़ुरान क़सम है क़ुरां की।
जबाब ही नही रखती है गुफ़्तगू तेरी॥

मेरी तरफ़ से सबा कहियो मेरे यूसुफ़[10] से।
निकल चली है बहुत पैरहन[11] से बू तेरी॥

फ़रिश्ते[12] भी तुझे कहते हैं बेश्तर[13] शायर।
यक़ीं हुआ मल्कुल मौत[14] में है बू तेरी॥

यह गरदिशे फ़लके पीर[15] से हुआ साबित।
क़वी[16] ज़ईफ़[17] को करती है जुस्तजू[18] तेरीं॥

शराब शर्म व हया व हिजाब[19] खो देगी।
दिखायेगा हमें कैफ़यते[20] सुबू[21] तेरी॥

हुआ जो दस्तरस[22] उसका भी पाये क़ातिल[23] तक।
हिना[24] भुलायेगा शोख़ी मेरा लहू तेरी॥

---

(१) पूरब पच्छिम (२) उत्तर दखिन तक (३) चारों ओर (४) विरह की रात (५) चैन (६) जानने वाला (७) फूल से शरीर वाले (८) सुगन्ध से भरा (९) प्रातःकाल की हवा (१०) मिस्र देश का सर्व श्रेष्ठ सुन्दर व्यक्ति (११) कपड़ा (११) देवता (१३) अधिकतर (१४) मौत देवता (१५) बूढ़े आसमान का घूमना (१६) शक्तिशाली (१७) बूढ़ा (१८) तलाश (१९ परदा (२०) दशायें (२१) सुबह के समय (२२) पहुँच (२६) प्रेमिका के पैर (२४) मेंहदी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो अब्[1] गिरिया ज़नां[2] है तो बक़्[3] ख़िंदां ज़नां[4] ।
किसी में ख़ू[5] है हमारी किसी में ख़ू तेरी ॥
यह चाक जेब[6] के हक़ में दुआ ये मजनूं[7] है ।
न हो वह दिन कि दुरुस्ती करे रफ़ू[8] तेरी ॥
किसी तरफ़ से तो निकलेगा आखिर ए शहे हुस्न ।
फ़क़ीर देखते है राह कूबकू[9] तेरी ॥
चमन में सुबह को जाकर न मुंह दिखाना था ।
बरंग आईना[10] हैरां है आबजू[11] तेरी ॥
ज़माना में कोई तुझ सा नहीं है सेफ़ ज़ुबां[12] ।
रहेगी मार्का[13] में आतश आबरू तेरी ॥

× × ×

कूचये दिलवरमैं[14] में बुलबुल चमन में मस्त है ।
हर कोई यां अपने-अपने पैरहन में मस्त है ॥
नशये दौलत में मुनैम[15] पैरहन[16] में मस्त है ।
मर्द मुफ़लिस[17] हालते रंज व मेहन[18] में मस्त है ।
दौरे गरदूं[19] है ख़ुदा वन्दा कि यह दौरे शराब ।
देखता हूँ जिसको मैं इस अंजुमन[20] में मस्त है ।
आज तक देखा नहीं इन आँखों ने रूये ख़ुमार[21] ।
कौन मुझसा गुंबदे चर्खे कुहन[22] में मस्त है ॥

---

(१) बादल (२) रोता हुआ (३) बिजली (४) हंसना (५) आदत (६) फटे कपड़े (७) मजनूं की प्रार्थना (८) फटे कपड़ों का सिलना (९) गली-गली (१०) आईना की भांति (११) चमन (१२) तेज़ ज़ुबान वाला (१३) लड़ाई (१४) प्रेमिका की गली (१५) अमीर लोग (१६) कपड़ा (१७) ग़रीब आदमी (१८) दुख व कष्ट (१९) आसमान का चक्कर (२०) संसार (२१) नशा की सूरत (२२) पुराना बूढ़ा आकाश ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गर्दिशे चश्मे ग़ज़ालां[१] गर्दिशे साग़र[२] है यां।
खुश रहें अहले वतन[३] दीवाना पन में मस्त है॥
ग़ाफ़िल व हुशियार हैं उसचश्मे मैगूं[४] के ख़राब[५]।
ज़िन्दा .ज़ेरे पैरहन मुर्दा कफ़न में मस्त है॥
एक साग़र दो जहां[६] के ग़म को करता है ग़लत[७]।
ए खुशा ताला[८] जो शेख़ व बरहमन में मस्त है॥
वहशते मजनूं[९] व आतश में बस इतना ही फ़र्क़।
कोई बन में मस्त है कोई वतन में मस्त है॥

× × ×

शौके वसलत[१०] में है शुग़ले अश्क अफ़साना[११] मुझे।
हिज्र में करना पड़ा आख़िर लहू पानी मुझे॥
ख्वाब से वेदार[१२] वह खुरशीद रू[१३] आकर करे।
ऐसी ए आंखो दिखाओ सुबह नूरानी मुझे॥
इश्क मेरा मेंहरवां है हुस्न बन्दा[१४] यार का।
आईना सा रूख़ मिला है उनको हैरानी मुझे॥
कौन से गुलशन में बुलबुल चहचहे करता नही।
यार के कूचा में .जेबा[१५] है ग़ज़ल ख्वाना[१६] मुझे॥
शहर खूबां[१७] में नही आतश मुरव्वत का रिवाज।
निशाना लब[१८] मर जांऊ तो मुमकिन न हो पानी मुझे॥

---

(१) हिरनों जैसी आंख का घूमना (२) शराव के प्याले का घूमना (३) देशवासी (४) शरावी आंखे (५) बर्वाद लोग (६) दोनों दुनियां (७) मिटा देना (८) कितना सौभाग्य (९) मजनूं का पागल पन (१०) मिलन की इच्छा (११) आंसू वहाने का काम (१२) जागना (१३) चमक दार चेहरे वाला (१४) गुलाम (१५) उचित (१६) ग़ज़ल पढ़ना (१७) सुन्दरियों की बस्ती (१८) प्यासा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेहूदा गुफ़्तगू[1] नहीं मर्दे फ़क़ीर की।
सीधी है समझे तू अगर उल्टी कबीर की॥

ग़ाफ़िल न मिस्ले बर्क़[2] हो शादी[3] से ख़न्दा ज़न[4]।
बाराने ग़म[5] से है गिले आदम फ़क़ीर[6] की॥

ज़ंजीर होगई हैं बदन को मेरी रगें।
खींची है नातवानी ने तस्वीर असीर[7] की॥

दीवाना किस करीम[8] के दरवाज़े का है दिल।
ज़ंजीर में हमारी सदा[9] है फ़क़ीर की॥

खाके शहीदे नाज़[10] से भी होली खेलिये।
रंग इसमें है गुलाल का है अबीर की॥

देखा मशीर कार[11] न दीवाना का कोई।
उस बादशाह को नहीं हाजत[12] वज़ीर की॥

आ निक़ले थे किधर से कहां यां से जायेंगे।
अव्वल की कुछ ख़बर है न हमको अख़ीर की॥

सौदाये राहे यार[13] का अल्लाह रे असर।
जादा[14] बनी जो हम ने ज़मीं पर लकीर की॥

उस गोश व चश्म[15] सा न तो देखा है ने सुना।
आतश क़सम है ज़ात समी व बसीर[16] की॥

× × ×

(१) बेकार बात चीत (२) बिजली की तरह (३) खुशी (४) हंसना (५) दुख की वर्षा (६) कमजोरी (७) बन्दी का चित्र (८) दानी (६) आवाज (१०) नखरों द्वारा मिट्टी में मिले हुए (११) सलाह देने वाला (१२) आवश्यकता (१३) प्रेमिका की मुहब्बत का पागल पन (१४) रास्ता (१५) कान व आंख (१६) सब कुछ देखने व सुनने वाला ईश्वर !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कब तक वह .ज़ुल्फ़ देती है आज़ार[1] देखिये।
कटती है किस तरह से शबे तार[2] देखिये॥
बीमार इश्क़ मरते हैं इस इश्तियाक़[3] में।
पी जाइये जो शरबते दीदार[4] देखिये॥
रग़बत[5] की आँख डालिये ज़र्रों[6] की तरह से।
रोशन[7] जो आफ़ताब सा रूख़सार देखिये॥
जाते हैं कूये यार[8] से हम ऐसे होंके तंग।
काबा भी हो तो फिर के न ज़िनहार[9] देखिये॥
आहिस्ता पांव रखिये क़यामत न कीजिये।
ठोकर से फ़ितने[10] होते है बेदार[11] देखिये॥
बुलबुल की तरह इश्क़ जो हमको चमन से हो।
सो जाइये तो ख़्वाब में गुलज़ार देखिये॥
क़ज़्ज़ाक़[12] की निगह से कम अपनी निगह नहीं।
क्या लूटिये जो दौलते दीदार देखिये॥
आशिक मसीह[13] भी तुम्हें कहते हैं मेहरबां।
हाल उसका पूछिये जिसे बीमार देखिये॥
आलम[14] की सैर कीजिये आतश मिलेगा यार।
यूसुफ़[15] जो चाहें आप तो बाज़ार देखिये॥

× × ×

(१) कष्ट (२) अंधेरी रात (३) इच्छा (४) मिलन रूपी शरबत (५) प्रेम (६) कण (७) चमकता हुआ (८) प्रेमिका की गली (९) हरगिज (१०) परेशानियां (११) जागते है (१२) डाकू (१३) चिकित्सक (१४) संसार (१५) सुन्दर व्यक्ति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन से दिल में मुहब्बत नही जानी तेरी।
जिसको सुन्ता हूँ वह कहता है कहानी तेरी॥
जिसके आगे से गुजरता है वह कहता है यही।
देखी ए रूहे खां[१] हमने खानी[२] तेरी॥

शीशये मय[३] से कोई मेरी ज़ुबानी कह दे।
खुश[४] नहीं आती है यह पंबा दहानी[५] तेरी॥
इस ख़राबे[६] में तेरे वास्ते फिरते हैं खराब[७]।
जुस्तजू हमको है ए गंज निहानी[८] तेरी॥
कौन से ग़ल्ला का दाना है तू ए दानये ख़ाल[९]।
हमने अरज़ानी[१०] में भी पाई गरानी[११] तेरी॥
जान की तरह से रखता है अज़ीज़ ए गुलरू।
दाग़े दिल लाला[१२] ने समझा है निशानी तेरी॥

× × ×

लबरेज़ कर[१३] प्याला को साक़ी इस अब्र[१४] में।
अफ़्यू[१५] न तंग होके कोई मैं परस्त[१६] खाये॥
तै कर चुकूं कहीं मैं नशेब व फ़राज दहर[१७]।
ता[१८] चंद[१९] ठोकरें यह बलंद और पस्त[२०] खाये॥
इस बन्दोबस्त जिस्म[२१] से जां को निजात[२२] हो।
छूटे परी तिलिस्म अनासिर[२३] शिकस्त[२४] खाये॥

---

(१) आने जाने वाली आत्मा (२) आना जाना (३) शराब की बोतल (४) पसन्द (५) मुँह में रूई लगाना (६) संसार (७) बर्बाद लोग (८) छिपा खज़ाना (९) चेहरे पर का तिल (१०) सस्ती (११) मंहगाई (१२) एक फूल का नाम (१३) भर दे (१४) बादल (१५) अफ़ीम (१६) शराबी (१७) दुनिया का ऊँचा नीचा (१८) ताकि (१९) कुछ (२०) ऊँचा नीचा (२१) शरीर रचना (२२) छुटकारा (२३) पंच तत्वों का जादू (२४) हार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खुला सौदे[१] में उन ज़ुल्फों के मर कर।
परेशां ख़्वाब[२] थी यह ज़िन्दगानी॥
वही देगा कबाबे नरगिसो[3] भी।
जो देता है शराबे अरग़वानी[४]॥
रङ्गा है इश्क ने किस दर्द सर[५] से।
हमारा जामये तन ज़ाफ़रानी[६]॥
मुसाफ़िर की तरह रह ख़ानाबर दोश[७]।
नहीं जाये अक़ामत[८] दार फ़ानी[९]॥
वह ख़त[१०] है यादगारे हुस्ने रफ़्ता[११]।
वह सब्ज़ा[१२] है गुलिस्तां की निशानी॥
सफ़ेदी मू[१3] की हो काफ़ूर[१४] हर चन्द[१५]।
कोई मिटता है यह दाग़े जवानी॥
न खुश हो फ़रबही तन[१६] से ग़ाफ़िल।
सुबुक[१७] करती है मुरदे को गरानी[१८]॥
मुये[१९] जो पेश्तर मरने से वह लोग।
कफ़न समझे क़बाये ज़िन्दगानी[२०]॥
जलाती है दिले आतश तूर[२१] की तरह।
किसी परदा नशीं की लन तरानी[२२]॥

× × ×

(१) पागल पन (२) सपना (३) आँखें जो कबाब की तरह हैं (४) लाल रंग की शराब (५) परेशानी (६) पीले रंग का शरीर (७) कंधे पर घर लिये रहना (८) ठहरना (९) नश्वर संसार (१०) बाल (११) बीते हुए सौंदर्य की याद (१२) घास (१३) बालों की सफ़ेदी (१४) ग़ायब (१५) बहुत कुछ (१६) शरीर का मोटापा (१७) हल्का (१८) भारीपन (१९) मरे (२०) जिन्दगी रूपी पोशाक (२१) एक पहाड़ का नाम (२२) इनकार करना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सदमा है दोश[1] पर सर व गरदन के बोझ से।
हर एक बोझ भारी है सौ मन के बोझ से॥
होश व ख़िरद[2] है बाइसे तकलीफ़ आदमी।
दीवाना आशना[3] नहीं दामन के बोझ से॥

साज़े सफ़र[4] कभी न हुआ बार दोश[5] यां।
समझा मैं माल व जिम्स[6] को रहज़न[7] के बोझ से॥
रिन्दों[8] को क़ैद सबह व .ज़ुन्नार[9] की नहीं।
वाक़िफ़[10] नहीं हैं शेख व बरहमन के बोझ से॥

आशिक़ मलाल ख़ातिरे अहले जहां[11] न हों।
ख़म[12] हो न शाख़ बुलबुल गुलशन[13] के बोझ से॥
आतश यह सारे रंज हैं इस ज़िन्दगी के साथ।
मुर्दे को क्या खबर गुले मदफ़न[14] के बोझ से॥

× × ×

रंग जो जो कुछ कि चाहें लायें बन में आबले[15]।
पाय बोसी[16] को तरसते थे वतन में आबले॥

बदगुमानी[17] से अबस[18] फिरता है गुलचीं[19] मेरे साथ।
ढूंढ़ते आये हैं कांटों को चमन में आबले॥
आदमी की बे शऊरी है तलब राहत[20] की यां।
दाग़ हैं यह ख़ानये चर्ख़ कुहन[21] में आबले॥

---

(१) कंधा (२) वुद्धि (३) परिचित (४) सफ़र का सामान (५) कंधे पर बोझ (६) माल असबाव (७) डाकू (८) मस्तों (९) माला व जनेऊ (१०) परिचित (११) संसार वालों के मन पर बोझ (१२) टेढ़ा (१३) बाग़ की बुलबुल (१४) क़ब्र का फूल (१५) छाले (१६) कदम चूमना (१७) संदेह (१८) वेकार (१९) माली (२०) आराम की इच्छा (२१) बूढ़े आसमान का घर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख़ार भी मेरे नसीबों[1] का बयाबां[2] में नहीं।
क्या शरीके हाल होलेंगे कफ़न में आबले॥
इस क़दर मुझको ज़माने की हवा है बर ख़िलाफ़[3]।
क्या अजब[4] बूये हिना[5] डाले बदन में आबले॥

× × ×

वक़्त फ़ुर्सत को ग़नीमत समझ आना हो तो आ।
ए अजल आलमे तनहाई[6] है मैदां ख़ाली॥
बाग़ आलम में नहीं कोई किसी का सुनता।
न दिमाग़ अपनाकर ए मुर्ग़ ख़ुशअलहां[7] ख़ाली॥
क़ैद मज़हब[8] की गिरफ़्तारी से छुट जाता है।
हो न दीवाना तो है अक़्ल से इंसां ख़ाली॥
अहदे पीरी[9] में कहां अब वह जवानी के रफ़ीक़[10]।
साफ़ पहलूये ज़ुबां[11] कर गये दंदां[12] ख़ाली॥
तेरी दरगाह के फ़क़ीरों के लिये ए महबूब।
तख़्त पर अपनी जगह करते हैं सुल्तां ख़ाली॥
हंसते-हंसते तो किया क़त्ल गुनहगारों को।
रो दिया देख के जल्लाद ने ज़िन्दां[13] ख़ाली॥
दिले बेकीना[14] कदूरत[15] नहीं रखता आतश।
ख़स व ख़ाशाक[16] से है अपना बयाबां ख़ाली॥

× × ×

(१) भाग्य (२) जंगल (३) विरुद्ध (४) आश्चर्य (५) मेंहदी की सुगंध (६) एकांत (७) अच्छा गाने वाली पक्षी (८) धर्म की पाबन्दी (९) बुढ़ापा (१०) मित्र (११) जीभ की गोद (१२) दांत (१३) क़ैदख़ाना (१४) निष्कपट (१५) मनमुटाव (१६) घास फूस।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बे पर मुझे फ़लक ने किया तो बजा[1] किया।
लाज़िम[2] है बाल मुर्ग़ गिरफ़्तार[3] तोड़िये॥
मुर्ग़ें तराना संज[4] हूँ उस बोस्तां[5] का मैं।
ख़ूने बहार टपके अगर ख़ाक़ तोड़िये॥
अपना कुछ अख़्तियार शफ़ा[6] में नहीं तबीव[7]।
परहेज़ से न ख़ातिरे बीमार[8] तोड़िये॥
इंसां को पास ख़ातिरे ना.ज़ुक[11] ज़रूर है।
शीशा शराव[12] का भी न ज़िनहार[13] तोड़िये॥
नामर्द आसमां से गवारा है किसको जंग[14]।
आतश सि पर[15] को चीरिये तलवार तोड़िये॥

× × ×

हसरते जलवये दीदार[16] लिये फिरती है।
पेशे रोज़न[17] पसे दीवार लिये फिरती है॥
इस मशक्क़त[19] से इसे ख़ाक न होगा हासिल।
जान अवस[20] जिस्म को बेकार लिए फिरती है॥
देखने देती नहीं उसकी मुझे बेहोशी।
साथ क्या अपने यह दीदार लिये फिरती है॥

---

(१) ठीक (२) आवश्यक (३) बन्दी पक्षी के बाल (४) गाने वाली चिड़िया (५) बाग़ (६) चिकित्सा (७) चिकित्सक (८) बीमार का मन (६) बोझ परेशानी (१०) शत्रु (११) कोमल मन का ध्यान (१२) शराब की बोतल (१६) हरगिज़ (१४) लड़ाई (१५) ढाल (१६) खिड़की के सामने (१७) मिलने की इच्छा (१८) दीदार से पीछे (१६) मेहनत (२०) बेकार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माल मुफ़लिस[१] मुझे समझा है जुनूं ने शायद ।
वहशते दिल[२] सरे बाज़ार[3] लिए फिरती है ॥
काबा व दैर में वह ख़ाना बर अंदाज़[४] कहाँ ।
गरदिशे काफ़िर व द दार[५] लिए फिरती है ॥
रंज लिखा है नसीबों में मेरे राहत[६] से ।
ख़्वाब में भी हवसे यार[७] लिये फिरती है ॥
हंसते हैं देख के मजनूं को गुले सहराई[८] ।
या बरहना[९] तलबे ख़ार[१०] लिये फिरती है ॥
साया सा हुस्न के हमराह है इश्क़े बेबाक[११] ।
साथ यह जिन्स[१२] ख़रीदार लिए फिरती है ॥
किसी सूरत से नही जी को क़रार ए आतश ।
तपिशे दिल[१3] मुझे लाचार लिये फिरती है ॥

× × ×

रफ़्तगां[१४] का भी ख़याल ए अहले आलम[१५] कीजिये ।
आलमे अरवाह[१६] से सुहबत[१७] कोई दम[१८] कीजिये ॥
हालते ग़म को न भूला चाहिये शादी में भी ।
ख़न्दये गुल[१९] देखकर याद अश्क शबनम[२०] कीजिये ॥
अपनी राहैत के लिये किसको गवारा है यह रंज ।
घर बना कर गर्दने मेहराब[२१] को ख़म[२२] कीजिये ॥

---

(१) ग़रीब का धन (२) दिल का पागल पन (३) चारों ओर (४) डाका डालने वाला (५) धार्मिक व अधार्मिक की क़िस्मत (६) आराम (७) प्रेमिका की इच्छा (८) जंगल का फूल (९) नंगे पैर (१०) कांटे की इच्छा (११) निर्भीक प्रेम (१२) माल (१३) हृदय की गर्मी (१४) मरे हुए (१५) संसार वाले (१६) आत्माओं का संसार (१७) संसर्ग (१८) क्षण (१९) फूल का हंसना (२०) ओस रूपी आंसू (२१) मेहराब जो गर्दन की तरह होती है ! (२२) टेढ़ी !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रात सुहवत गुल से दिन को हम बग़ल[१] .खुरशीद से ।
रश्क[२] अगर कीजिये तो बख़्त शयनम[३] कीजिये ॥
ऐब उल्फ़त[४] रोज़े अव्वल[५] से मेरी तैनत[६] में है ।
दाग़ लाला[७] के लिए क्या फ़िक्र मरहम[८] कीजिये ॥
उठ गई हैं सामने से कैसीं कैसी सूरतें ।
रोइये किसके लिए किस किस का मातम कीजिये ॥

× × ×

असर रखती मये गुलगूं की कैफ़ियत[९] का हस्ती[१०] है ।
उभरने में हुबाबे बहर[११] के इक जोशे मस्ती है ॥
पसंद तवा महबूबां[१२] दिले आशिक़ नहीं होता ।
नज़र में कब किसी के चढ़ती हैं जो चीज़ सस्ती है ॥
फ़रोमाया[१३] की गरदन ख़म फ़लक से भी नहीं होती ।
भला तेग़े गिली[१४] को भी कहीं देखा कि कसती है ॥
ग़म व शादी[१५] की हालत देख आलम के मुर.क़ा[१६] में ।
कोई तस्वीर रोती है कोई तस्वीर हंसती है ॥
नहीं रहता मिज़ाजे सिफ़लां[१७] हरगिज़ एक हालत पर ।
बलंदी का बगोले की मालकार[१८] पस्ती[१९] है ॥
सितारा अपना गरदिश में है आतश इसकी गरदिश से ।
फ़लक की तंग चश्मी[२०] से हमारी तंग दस्ती[२१] है ॥

× × ×

---

(१) गोद में रहना (२) जलन (३) ओस का भाग्य (४) प्रेम करने का दुर्गुण (५) आरम्भ से ही (६) स्वभाव (७) लाल फूल का दाग़ (८) दवा की चिंता (९) शराब का नशा (१०) जिदंगी (११) समुद्र के बुलबुले (१२) प्रेमिकाओं के मन भाना (१३) कम पैसे वाला (१४(मिट्टी की तलवार (१५) सुख दुख (१६) संसार का चित्र (१७) ओछा स्वभाव (१८) परिणाम (१९) पतन (२०) संकीर्णता (२१) ग़रीबी !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काम हिम्मत से जवां मर्द अगर लेता है।
सांप को मार के गंजीनये ज़र[1] लेता है॥

नागवारा[2] को जो करता है गवारा[3] इंसां।
ज़हर पीकर मज़ये शीर व शकर[4] लेता है॥

मंज़िले फ़क़र व फ़ना[5] जाय अदब है ग़ाफ़िल[6]।
बादशाह तख़्त से यां अपने उतर लेता है॥

गंज पिनहां[8] है तसरूफ़[9] में बनी आदम[10] के।
कान से लाल यह दरिया से गुहर[11] लेता है॥

ज़ब्त करता है जो नाला का शबे फ़ुर्क़त[12] में।
ज़ख्म पहलू[13] में नमक पीस के धर लेता है॥

नज़र आ जाता है ए गुल[14] जिसे रूख़सार[15] तेरा।
फूलों से दामने नज्ज़ारा[16] वह भर लेता है॥

अक़्ल कर देती है इंसां की जहालत[17] ज़ायल[18]।
मौत से जान छिपाने को सिपर[19] लेता है॥

याद रखता है अदम में कोई साग़र कश[20] इसे।
हिचकियां शीशये मै[21] शाम व सहर[22] लेता है॥

हिज्र में वस्ल का मिलता है मज़ा आशिक़ को।
शौक़[23] का मर्तबा जब हद से गुज़र लेता है॥

---

(१) धन का ख़जाना (२) असह्य (३) सह्य (४) दूध व चीनी का आनन्द (५) साधुओं का स्थान (६) शिष्टाचार की जगह (७) बेसुध (८) छिपा भेद (६) अधिकार (१०) मनुष्य जाति (११) मोती (१२) बिरह की रात (१३) हृदय का घाव (१४) फूल (१५) गाल (१६) दृष्टि (१७) अज्ञान (१८) नष्ट (१६) ढाल (२०) शराबी (२१) शराब की बोतल (२२) सांझ सवेरे (२३) इच्छा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इज़्ज़ते नाला व फ़रियाद[१] न खो ए आतश।
आशना[२] कोई नहीं कौन ख़बर लेता है॥

× × ×

अल्ला री रोशनी मेरे सीना के दाग़ की।
अंधियारी रात में नहीं हाजत[३] चिराग़ की॥
हस्तीये चंद रोज़[४] ने तो तंग ही रखा।
ख़्वाबे अदम[५] में देखेंगे सूरत फ़राग़[६] की॥
बे एतबार[७] नक़्श व निगारे ज़माना[८] है।
इक रंग पर हवा नहीं रहती है बाग़ की॥
ज़ाहिर हुआ मुझे यह बलन्दीये सरो[९] से।
करती है काम ख़ाक भी आली दिमाग़[१०] की॥
सौ ताड़ से बुलन्द करे बाग़बां तो क्या।
हिम्मत के आगे पस्त[११] है दीवाल बाग़ की॥
कम होंगे ऐसे ढूंढ़े भी पाये न जायेंगे।
खोदेगी हमको फ़िक्र तुम्हारे सुराग़[१२] की॥
जलती है शौक़ आतशे रुख़सार यार[१३] में।
है शमा सोख़्ता[१४] उसी चश्म व चिराग़[१५] की॥
पाते नहीं ज़माना में आतश खुशी का नाम।
अनक़ा[१६] है अपने दौर[१७] में गर्दिश अयाग़[१८] की

× × ×

(१) रोने चिल्लाने की प्रतिष्ठा (२) मित्र (३) आवश्यकता (४) कुछ दिनों का जीवन (५) परलोक की नींद (६) चैन (७) झूठी (८) दुनिया की सजावट (९) सरो पेड़ की ऊंचाई (१०) बुद्धिमत्ता (११) नीची (१२) खोज (१३) प्रेमिका के गालों की लाली की इच्छा (१४) जली हुई (१५) प्रकाश (१६) अदृश्य, एक काल्पनिक पक्षी (१७) युग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कभी जो जज़्ब मुहब्बत[1] से काम होता है॥
नक़ाब उलटता है दीदार आम[2] होता है॥

उठाऊं किस लिये अहसान यार गर्दन पर।
मेरा तो उसके तग़ाफ़ुल[3] से काम होता है॥
ख़ुदा की याद जवानी में ग़ाफ़िलो कर लो।
बगरना[4] वक़्त फ़ज़ीलत[5] तमाम[6] होता है॥

किसी को क्या कोई घर अपने दिल में करने दे।
नगीं[7] से देख ले बर अक्स[8] नाम होता है॥

कोई ज़माना से जाता है कोई आता है।
किसी का कूच किसी का मुकाम[9] होता है॥

फंसा जो ज़ुल्फ़ में उस गुल के मुर्ग़ दिल[10] बोला।
न थी ख़बर यह कि संबुल[11] भी दाम[12] होता है॥
हमारे हल्क़ा[13] में करता है शीशा[14] दिल ख़ाली।
हमारे दौर[15] में लबरेज़ जाम[16] होता है॥
बलाये बज़्म जहां[17] है वह चश्म की गरदिश[18]।
निगाह फिरती है दौरा[19] तमाम[20] होता है॥
मुलाज़िमों[21] में हैं सुल्ताने इश्क[22] के हम भी।
कभी हमारा भी आतश सलाम होता है॥

× × ×

---

(१) प्रेम का खिंचाव (२) सार्वजनिक दर्शन (३) लापरवाही (४) नहीं तो (५) महत्वपूर्ण समय (६) समाप्त (७) नगीना (८) उल्टा (९) ठहराव (१०) हृदय रूपी पक्षी (११) एक लम्बी घास (१२) जाल (१३) घेरा, गर्दन (१४) बोतल (१५) युग (१६) प्याला भरना (१७) संसारिक मुसीबत (१८) आंख की चंचलता (१९) चक्कर (२०) समाप्त (२१) नौकर (२२) प्रेम का बादशाह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमेशा झाड़ते हैं गर्द पैरहन[1] ग़ाफ़िल ।
नहीं समझते कि है ज़ेरे पैरहन[2] मिट्टी ॥
न होवे क़ालिबे ख़ाकी[3] ग़ुबार ख़ातिरे रूह[4] ।
क़ुबूल[5] सीना के ऊपर हज़ार मन मिट्टी ॥
किसी का यार बुरे वक्त में नहीं कोई ।
न देखा रूह[6] को होते शरीक[7] तन मिट्टी ॥
है मालेकार[8] का अपने नहीं ख़याल आता ।
मिलाया करते हैं मिट्टी में गोरकुन[9] मिट्टी ॥
किसी ने उफ़ भी न की शमा जल के ख़ाक हुई ।
न होवेगी मगर आतश यह अंजुमन[10] मिट्टी ॥

× × ×

बे रूख़े यार[11] मुझे जान से बेज़ारी[12] थी ।
चांदनी रात न थी गोर[13] की अंधियारी थी ॥
काम हो गया उम्मीद शफ़ा[14] में आख़िर ।
दिल की बीमारी थी या चश्म[15] की बीमारी थी ॥
गाह[16] रोता कभी हंसता था नसीबों[17] पर मैं ।
ख्वाब बद[18] मेरे लिये हालते बेदारी[19] थी ॥
छूट कर इश्क के फन्दे से हूँ तंग ए आतश ।
मुझको आज़ादी से बेहतर वह गिरफ़्तारी थी ॥

× × ×

(१) कपड़े की धूल (२) कपड़े के नीचे (३) मिट्टी का शरीर (४) आत्मा के मन का बोझ (५) स्वीकार (६) आत्मा (७) सम्मिलित (८) परिणाम (९) क़ब्र बनाने वाला (१०) संसार (११) प्रेमिका का चेहरा (१२) उदासीनता (१३) क़ब्र (१४) अच्छे होने की उम्मीद (१५) आँख (१६) कभी (१७) भाग्य (१८) ख़राब सपने (१९) जागरण ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एड़ियों तक तेरी चोटी की रसाई[१] होती।
कल जो आनी थी बला[२] आज ही आई होती॥
दौलत अल्लाह से करते जो तलब[३] दीवाने।
नक़रई तौक़[४] तो ज़ंज़ीर तिलाई[५] होती॥
एश[६] होता कुछ अगर ग़म क़दये दुनिया[७] में।
रूह क़ालिब[८] में खुशी से न समाई होती॥
घर गिराया जो मेरा सैले हवादस[९] ने तो क्या।
चार दीवार अनासिर[१०] की गिराई होती॥
उन अज़ारों[११] की जो पाती यह सबाहत[१२] आतश।
यासमीं[१३] बाग़ में फूले न समाई होती॥

× × ×

पैरहन तेरे शहीदों[१४] के गुलिस्तां हो गये।
ज़ख़्में ख़ंदां[१५] ग़ैरते गुलहाये ख़ंदां[१६] हो गये॥
मंज़िले दिल की ख़राबी का अलम[१७] क्या कीजिये।
कैसे कैसे ख़ानये आबाद[१८] वीरां[१९] हो गये॥
जो चलन चाहें चलें आतश बुताने बे वफ़ा[२०]।
हुस्न जब पैदा हुआ सब एब पिनहां[२१] हो गये॥

× × ×

---

(१) पहुँच (२) मुसीबत (३) मांग (४) चांदी का हार (५) सोने की ज़ंजीर (६) सुख (७) दुखी संसार (८) शरीर (९) दुर्दिन (१०) तत्व जिनसे शरीर रचना होती है (११) गाल (१२) सौंदर्य (१३) चमेली (१४) मरने वाले (१५) हंसते हुये घाव (१६) हंसते फूल (१७) दुख (१८) बसे हुये घर (१९) उजाड़ (२०) निष्ठुर प्रेमिकायें (२१) छिपना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुल क़बा[1] पर हो जामा[2] से बाहर।
कब तेरे पैरहन से बेहतर है॥
गोर में भाग अहले दुनिया[3] से।
ख़िलवत[4] इस अंजुमन[5] से बेहतर है॥
हंसने वाला नहीं है रोते पर।
हमको ग़ुरबत[6] वतन से बेहतर है॥
तर्क दुनिया[7] समझ जवां मर्दी[8]।
नफ़रत इस पीर ज़न[9] से बेहतर है॥
नहीं खुलता किसी तरह से फिर।
एब पोशी[10] कफ़न से बेहतर है॥
दुश्मने जान अजल[11] को जान आतश।
दोस्ती गोर कुन से बेहतर है॥

× × ×

शबे हिज्रां[12] की दराज़ी[13] का गिला[14] क्या कीजे।
ख़िज्र[15] की उम्र भी दो चार घड़ी घटती है॥
गोश[16] वह है जो सुना करता है अफ़सानये हुस्न।
वह ज़ुबां है जो सनम नाम तेरा रटती है॥
सायले दौलते दुनिया[18] हूँ मैं ए आतश क्या।
गंज क़ारू[19] से भी अवक़ात[20] नहीं कटती है॥

× × ×

---

(१) पोशाक (२) कपड़ा (३) दुनिया वाले (४) एकांत (५) संसार (६) परदेश (७) संसार त्याग (८) बहादुरी (९) बूढ़ी औरत (१०) ऐब छिपाना (११) मौत (१२) विरह की रात (१३) लंबाई (१४) शिकायत (१५) एक पैग़म्बर (१६) कान (१७) सौंदर्य कहानी (१८) संसार का धन चाहने वाले (१९) क़ारून का ख़ज़ाना (२०) समय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामना जब उस मसीहा[1] का हुआ बीमार से।
भर दिये आंखों के कासे[2] शरबते दीदार[3] से॥

बाद मुरदन[4] भी रहेगा दिल को शौक़े क़स्र यार[5]।
साया बन कर रूह लिपटेगी मेरी दीवार से॥

दिलको दाग़े इश्क़ हुस्न[6] आया ज़माना में पसन्द।
यह शगूफ़ा[7] ले चले आकर हम इस गुलज़ार से॥

कौन जिन आंखों ने बुलबुलकी निगह से सैरबाग़।
हमने यह जाना कि ना बीना[8] गई गुलज़ार से॥

नींद आती है किसे आतश फ़िराक़े यार[9] में।
ख़्वाब[10] को नफ़रत है अपने दीदये बेदार[11] से॥

× × ×

कूचये यार[12] में चलिये तो ग़ज़ल ख़्वां[13] चलिये।
बुलबुले मस्त की सूरत[14] से गुलिस्तां चलिये॥

पांव में ता[15] रहे रफ़्तार की ताक़त बाक़ी।
पीछे पीछे तेरे ए उम्र गुरेज़ां[16] चलिये॥

शौक़ सहरा[17] का जो होता है तो कहता है जूनं।
तेग़[18] की तरह से मैदान में उरियां[19] चलिये॥

ज़ुल्फ़ के सौदे[20] में इक उम्र बसर की आतश।
बस बहुत देख चुके ख़्वाबे परेशां[21] चलिये॥

---

(१) चिकित्सक (२) प्याले (३) मिलन रूपी शरबत (४) मरने के बाद (५) प्रेमिका के घर की इच्छा (६) सौंदर्य प्रेम की जलन (७) फूल (८) अंधी (९) प्रेमिका का विरह (१०) नीद (११) खुली आंख (१२) प्रेमिका की गली (१३) कविता पढ़ते (१४) तरह (१५) ताकि (१६) भागने वाली आयु (१७) जंगल की रुचि (१८) तलवार (१९) नंगी (२०) पागलपन (२१) चिंता से भरे सपने !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बरंगे आईना[१] इन्सान की क़िस्मत है अगर सीधी।
मुआफ़िक[२] है ज़माना दोस्त दुश्मन की नज़र सीधी॥
ज़मीं पर पांव रख कर आस्मां पर नाज़[३] करता है।
मगर ठोकर से चर्खे पीर[४] की होगी कमर सीधी॥

सरे मग़रूर[५] को जमीयते दुनियां[६] झुकाती है।
नहीं देखी चमन में हमने शाखे बाखर[७] सीधी॥
न पस्ती व बलन्दी[८] है न ऐसे फेर के रस्ते।
अदम[९] की राह: सब राहों से है ए बेखबर सीधी॥
पस अज़ मुर्दन[१०] भी हसरत बाक़ी रहती है जवानी की।
लहद में करते हैं पीराने ख़म गश्ता[११] कमर सीधी॥
असर करती नहीं तालीम तैरा रोजगारों[१२] को।
इधर टेढ़ी हुई शाना[१३] ने की वह ज़ुल्फ़ उधर सीधी॥

× × ×

गुल से अफ़ज़[१४] मेरी आंखों में हैं दिलजू[१५] कांटे।
फूल रखता है तेरी बू तो तेरीख़[१६] कांटे॥
हमनशीं[१७] दिल :नहीं इक आबला[१८] सा पकता है।
जी में आता है भरूँ चीर के पहलू[१९] कांटे॥

---

(१) आईना की तरह (२) पक्ष में (३) गर्व (४) बूढ़ा आसमान (५) घमंडी का सर (६) संसार (७) फलों से लदी डाल (८) ऊंचा नीचा (९) परलोक (१०) मरने के बाद (११) टेढ़ी कमर वाले बूढ़े (१२) कलुषित मस्तिष्क वालों को (१३) कंघी (१४) अधिक (१५) दिल खींचने वाले (१६) आदत (१७) मित्र (१८) फफोला (१९) हृदय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बद सरिश्तों[1] को न नेकों[2] का असर हो हरगिज़ ।
सुहबते गुल[3] से न होवें कभी .खुशबू कांटे ॥
बाग़ आलम[4] में जो राहत है तो फिर रंज भी है ।
ता कमर[5] गुल हैं तो यां ता सरे ज़ानू[6] कांटे ॥
जो न दे रंज किसी को उसे होता नहीं रंज ।
पांव पर मेरे नहीं पाने के काबू कांटे ॥

× × ×

हाल दिल होते हैं हसरत की निगाहों से अयां[7] ।
मेरी उसकी गुफ़्तगू में अब ज़ुबां ख़ामोश है ॥
पुश्त बर दीवार हैरत[8] हैं हज़ारों सूरतें ।
साहेब आईना ख़ाना[9] आज तक रूपोश[10] है ॥
फ़र्त उल्फ़त[11] का माले कार[12] है आशिक़ को मौत ।
जब शराबी को ज़्यादा नशा हो बेहोश है ॥
गुफ़्तगूये अहले ग़फ़लत[13] की हक़ीकत[14] कुछ नहीं ।
ख़्वाब में चिल्लाये हरचन्द[15] आदमी ख़ामोश है ॥
अहले दुनिया[16] हाल हम दीगर[17] से क्या हों मुत्तला[18] ।
मजलिसे तस्वीर[19] में किसको किसी का होश है ॥
गुल हर इक साग़र बकफ़[20] बुलबुल हर इक नग़मा तराज़[21] ।
सैर बाग़ आतश मुझे ईमाये नाओ नोश[22] है ॥

× × ×

---

(१) बुरे स्वभाव वाले (२) भले लोग (३) फूल की संगत (४) संसार (५) कमर तक (६) घुटनों तक (७) प्रकट (८) आश्चर्य चकित (९) संसार का मालिक (१०) छिपा हुआ (११) प्रेम की अधिकता (१२) परिणाम (१३) बेसुधों की बात चीत (१४) वास्तविकता (१५) चाहे जितना (१६) दुनिया के लोग (१७) अपरिचित (१८) परिचित (१९) चित्रों का संसार (२०) हाथ में प्याला लिये (२१) गाने वाला (२२) पीने का इशारा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चली है ऐसी ज़माना में कुछ हवा उल्टी।
कि सीधी बात समझते हैं आशना[१] उल्टी॥

हमारे ख़ूं से हुए दस्त व पाये क़ातिल[२] सुर्ख़।
नसीब[३] अपने फिरे क़िस्मते हिना[४] उल्टी॥

किसी तरह से न टूटा तिलिस्म हसरत यास[५]।
दरे क़ुबूल[६] से टकरा के सर दुआ उल्टी॥

गिला[७] है हश्र के दिन हमको सख्त जानी[८] से।
हज़ार बार फिरो आन कर क़ज़ा[९] उल्टी॥

निगाहे यार के फिरते ही हम से ए आतश।
ज़माना फिर गया चलने लगी हवा उल्टी॥

× × ×

सर शमा सा[१०] कटाइये पर दम न मारिये।
मंज़िल हज़ार सख्त हो हिम्मत न हारिये॥

मकसूम[११] का जो है सो वह पहुँचेगा आप से।
फैलाइये न हाथ न दामन पसारिये॥

तालिब[१२] को अपने रखती है दुनिया जलील व ख्वार[१३]।
ज़र की तमा[१४] से छानते हैं खाक नयारिये[१५]॥

बरहम[१६] न हो मिज़ाज किसी वक्त आपका।
अबतर[१७] हुई हैं .ज़ुल्फ़ें निहायत संवारिये॥

---

(१) मित्र (२) मारने वाले के हाथ पैर (३) भाग्य (४) मेंहदी का भाग्य (५) निराशा का जादू (६) स्वीकृति का द्वार (७) शिकायत (८) देर में प्राण निकलना (९) मृत्यु (१०) शमा की तरह (११) भाग्य (१२) चाहने वाला (१३) अप्रतिष्ठित (१४) लालच (१५) कोयला बिनने वाले (१६) बिखरना (१७) अस्त-व्यस्त।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तनहाई है ग़रीबी है सहरा[1] है ख़ार[2] है।
कौन आशनाये हाल[3] है किसको पुकारिये॥
तबदील रोज़े वस्ल[4] से फ़ुर्क़त की शब[5] हुई।
आई हुई बला टली सदक़े उतारिये॥
नाज़ुक दिलों[6] को शर्त है आतश ख़याले यार[7]।
शीशा ख़ुदा जो दे तो परी को उतारिये॥

× × ×

मंज़िले गोर[8] अब मुझे ए आसमां दरकार[9] है।
मर्दु मे बीमार[10] को क़ुफ़्ले मकां[11] दरकार है॥
साहिले दरियाये हस्ती[12] है किनारा गोर[13] का।
कश्तिये तन[14] के लिये भी बादबां[15] दरकार है॥
आदमी के वास्ते कुछ और होवे या न हो।
साक़ी व मैं सबज़ा व आबे रवां[16] दरकार है॥
ख़ाली हाथ आये हैं ख़ाली हाथ आशिक़ जायेंगे।
वां न कुछ मंजूर था हमको न यां दरकार है॥
नालये बुलबुल को सुन कर उफ़ नहीं करता कभी।
गोश गुल[17] के वास्ते आतश ज़ुबां दरकार है॥

× × ×

---

(१) जंगल (२) कांटा (३) दशा को जानने वाला (४) मिलन का दिन (५) विरह की रात (६) कोमल हृदय वाले (७) प्रेमिका का ध्यान (८) क़ब्र (९) आवश्यक (१०) बीमार आदमी (११) मकान का ताला (१२) ज़िंदगी के दरिया का किनारा (१३) क़ब्र (१४) शरीर की नाव (१५) पाल (१६) नारी व मदिरा (१७) फूल के कान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ए सनम महर व वफ़ा[१] से नहीं दुनियां ख़ाली।
कौन सा दिल है नहीं जिसमें तेरी जा[२] ख़ाली॥

नीची नज़रों से हुआ उसकी ज़माना पामाल[३]।
आंख उठाई तो किया आलमे बला[४] ख़ाली॥

गरदिशे चश्म[५] कहां गरदिशे सागर भी नहीं।
नज़र आया मुझे यह गुंबदे मीना[६] ख़ाली॥

शुक्र किस मुँह से करूँ गोशये तनहाई[७] का।
मुझको दिल खोल के रोने को मिली जा ख़ाली॥

समझे आतश न कोई आदमे ख़ाक़ी[८] को हक़ीर[९]।
नहीं असरार[१०] से यह ख़ाक का पुतला ख़ाली॥

× × ×

मौत मांगं तो रहे आरज़ूए ख़्वाब[११] मुझे।
डूबने जाऊँ तो दरिया मिले पायाब[१२] मुझे॥

मेरी ईज़ा[१३] के लिये मुर्दे में जान आती है।
काटने दौड़ती है माहिये बे आब[१४] मुझे॥

चैन लेने न दिया दर्दे जुदाई ने मुझे।
कब मैं सोचा कि जगाया नहीं बदख़्वाब[१५] मुझे॥

नाम को मेरे भी अहबाब में अपने लिखे।
ज़रा समझा रहे वह महर जहां ताब[१६] मुझे॥

× ×

---

(१) प्रेम (२) स्थान (३) बर्बाद (४) दूसरी दुनियां (५) आंखों की चंचलता (६) आकाश (७) एकांत (८) मिट्टी का आदमी (९) तुच्छ (१०) भेद (११) सपनों की इच्छा (१२) जल से भरा (१३) कष्ट (१४) बिना पानी की मछली (१५) कच्ची नींद (१६) संसार को प्रकाश देने वाला सूर्य।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रूये ख़ुरशीद[१] से रोशन रूखे नूरानी[२] है।
सुबहे सादिक़[३] से कशादा[४] तेरी पेशानी[५] है॥
शाम होते ही न मालूम हुई फिर शबे वस्ल।
उम्र कोताह[६] से वफ़ा चाहनी नादानी है॥
दिल सा दुश्मन है शब व रोज़ अज़ीज़े पहलू[७]।
अपने क़ातिल से मुझे उल्फ़ते रूहानी[८] है॥
वादा होता नहीं ता चन्द[९] बराबर मेरा।
ए अजल[१०] देखूं तो कब तक यह निगहबानी[११] है॥
दुश्मनी है एवज़े दोस्ती[१२] या ए आतश।
दर्द सर ही सबब[१३] संदले पेशानी[१४] है॥

× × ×

क्या क्या न रंग तेरे तलबगार[१५] ला चुके।
मस्तों को जोश सूफ़ियों को हाल[१६] आ चुके॥
हस्ती को मिस्ल नक़्श कफ़े पा[१७] उठा चुके।
आशिक़ नक़ाब शाहिदे मक़सूद[१८] उठा चुके॥
काबा[१९] से दैर[२०] व दैर से काबा को जा चुके।
क्या क्या न इस दोराहे में हम फेर खा चुके॥

---

(१) चमकदार सूर्य (२) चमकदार चेहरा (३) स्वच्छ प्रातः (४) खुली हुई (५) माथा (६) छोटी उम्र (७) हृदय को प्रिय (८) आत्मिक प्रेम (९) कब तक (१०) मौत (११) चौकीदार (१२) दोस्ती के बदले (१३) कारण (१४) माथे पर लगाने का चंदन (१५) चाहने वाले (१६) मस्ती (१७) पैर के निशान की तरह (१८) एच्छिक प्रेमिका (१९) मस्जिद (२०) मंदिर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुस्ताख़[१] हाथ तौक़े कमर यार[२] के हुए।
हद्दे अदब[३] से पांव को आगे बढ़ा चुके॥
पहुँचे तड़प तड़प के भी जल्लाद तक न हम।
ताक़त से हाथ पांव ज्यादा हिला चुके॥
होती है तन में रूह पयामे अजल[४] से शाद।
दिन वादये विसाल[५] के नजदीक आ चुके॥
पैमाना[६] मेरी उम्र का लबरेज़[७] हो कहीं।
साक़ी मुझे भी अब तो प्याला पिला चुके॥
दीवाना जानते हैं तेरा होशियार उन्हें।
जामा[८] को जिस्म के भी जो पुरज़े उड़ा चुके॥
बे वजह[८] हर दम आईना पेशे नज़र[९] नहीं।
समझे हम आप आंखों में अपनी समा चुके॥
दो अब्रू[१०] और दो लबे जां बख़्श[११] यार के।
ज़िंदों को क़त्ल कर चुके मुर्दे जिला चुके॥
मजबूर कर दिया है मुहब्बत ने यार की।
बाहर हम अख़्तियार से अपने हैं जा चुके॥
सदमों ने इश्क़ व हुस्न के दम[१२] कर दिया फ़ना[१३]।
आतश सज़ा गुनाहे मुहब्बत[१४] को पा चुके॥

× × ×

(१) धृष्ट (२) प्रेमिका की कमर के चारों ओर (३) शिष्टाचार की सीमा (४) मृत्यु का संदेश (५) मिलन का वादा (६) बोतल (७) भर जाना (८) अकारण (९) आँख के सामने (१०) भौं (११) प्राणदायक दो होंठ (१२) जोश (१३) नष्ट (१४) प्रेम का पाप।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूर इतना भी बस ए मंज़िले मक़सूद[1] न खींच।
थक गया लाख मैं हिम्मत तो नहीं हारी है॥

शाक़[2] क्योंकर न हो आशिक़ को जुदाई तेरी।
कौन है वह कि जिसे जान नहीं प्यारी है॥

ग़मे कूनैन[3] फ़रामोश[4] हुआ उल्फ़त में।
लाख आज़ादी न इक दिल की गिरफ़्तारी है॥

रात आराम से कटती है न दिन राहत से।
जिन्दगानिये दो रोज़ा मुझे बीमारी है॥

न कर ए बादे बहारी[5] मुझे तकलीफ़ शराब।
आगे ही गठरी गुनाहों की मेरे भारी है॥

वस्ल[6] में हिज्र का धड़का है बजा[8] आशिक़ को।
चार दिन चांदनी है चार दिन अंधियारी है॥

निस्बत[9] ए परदा नशीं[10] तुझसे नहीं यूसुफ़[11] को।
क़द्र उसकी नहीं जो हुस्न कि बाज़ारी है॥

× × ×

दीदये माशूक़[12] को मंजूर तू आलम में है।
दम तेरा भरते हैं दम जब तक कि अपने दम में है॥

इक न इक दिन यार होगा मेहरबां काम आयगा।
सौ हुनर से बेहतर इक ऐबे मुहब्बत[13] हम में है॥

---

(१) निर्दिष्ट स्थान (२) दुख (३) दोनों लोकों की चिंता (४) भूल गई (५) वसंत बयार (६) मिलन (७) विरह (८) ठीक (९) तुलना (१०) परदा करने वाले (११) एक सुन्दर व्यक्ति (१२) प्रेमिका की आंख (१३) प्रेम करने का दुर्गुण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आईना दिल का रियाज़त[1] से अगर हो जाय साफ़।
फिर तमाशा है वही मुमकिन जो जामे जम[2] में है॥
आंख रग़बत[3] की नहीं बे वजह[4] ज़र्रे[5] डालते।
रोशनी उस रूख़[6] की कुछ कुछ नय्यरे आज़म[7] में है॥
क़ालिबे ख़ाकी[8] को तो सुनते हैं आतश जेरे ख़ाक[9]।
कुछ नहीं मालूम हमको रूह[10] किस आलम[11] में है॥

× × ×

बरंगे ग़ुंचये पज़मुर्दा[12] दिल गिरफ़्तार चले।
शिगुफ़्ता[14] हो के न दो दिन भी हम ने यां काटे॥
क़यामत[15] आती है इस उम्र चन्द रोज़ा[16] को।
ज़मीन की तरह ग़रीबी से आस्मां काटे॥
सज़ा ज़ईफ़[17] का ईज़ा दहन्दा[18] पाता है।
वह ज़र्द[19] होता है जो कश्ते ज़ाफ़रां[20] काटे॥
किसी का हो रहे आतश किसी को अपना कर रखे।
दो रोज़ा जीस्त[21] को इंसां न रायगां[22] काटे॥

× × ×

(१) कष्ट देने से (२) जमशेद बादशाह का प्याला (३) प्रेम (४) अकारण (५) कण (६) मुखड़ा (७) सूर्य (८) मिट्टी का तन (९) मिट्टी के नीचे (१०) आत्मा (११) दशा (१२) मुर्झाई कली की तरह (१३) टूटा हुआ दिल (१४) खिल कर (१५) अंत (१६) दो दिन की जिन्दगी (१७) (१८) कष्ट देने वाला (१९) पीला (२०) केसर की खेती (२१) दो दिन की जिंदगी (२२) बेकार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मर्दुमे दीदा[१] रहे सायये मिज़गां[२] के तले।
ज़ीस्त का लुत्फ़[३] मिला ख़ंजरे बुर्रा[४] के तले॥

ऐब[५] लगता है किसे जामये उरियानी[६] से।
ए जुनूं दाग़ नहीं अपने गरेबां के तले॥

दस्त याराने वतन[७] से नहीं मिट्टी दरकार।
दब मरूंगा मैं कहीं रेगे बयाबां[८] के तले॥

ले चले वहशते दिल[९] अब के जो सहरा[१०] की तरफ़।
फ़र्श आँखों को करूं चश्म ग़ज़ालां[११] के तले॥

बोझ शाना[१२] का न उस पर न पड़े ऐ मशाता[१३]।
कमर यार भी है ज़ुल्फ़े परेशां के तले॥

लाख न्यामत के बराबर है कलामे शीरीं[१४]।
ज़ायक़ा बस[१५] है ज़ुबां का मेरे दंदां[१६] के तले॥

बख़्त बद[१७] ने मुझे हर चन्द मिटाया आतश।
रह गया नाम मेरा गुंबदे गर्दां[१८] के तले॥

× × ×

हर शब शबे बरात[१९] है हर रोज़-रोज़ ईद।
सोता हूँ हाथ गरदने मीना[२०] में डाल के॥
मज़मून रफ़्तगां[२१] है तबीयत को अपनी तंग।
गाहक न होवें हम कभी मुर्दे के माल के॥

---

(१) आँख की पुतली (२) पलकों की छाया (३) जीवन का आनन्द (४) तेग़ तलवार (५) दोष (६) नंगा शरीर (७) स्वदेश के मित्रों के हाथ से (८) जंगल की धूल (९) दिल का पागल पन (१०) जंगल (११) हिरनों जैसी आँख (१२) कंघा (१३) दाई (१४) मीठी बात (१५) अत्यधिक स्वाद (१६) दांत (१७) दुर्भाग्य (१८) आकाश (१९) एक त्योहार (२०) बोतल के चारों ओर (२१) मरे हुए लोगों के विचार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शान व शिकोह[१] ने हमें बर्बाद कर दिया ।
मिस्ले हुबाब[२] उड़ गये ख़ेमा निकाल के ॥
शामे शबे फ़िराक़[३] से पहले मुये जो लोग ।
आई हुई बला गये सर पर से टाल के ॥
आईना से कलाम[४] को क्योंकर किया है साफ़ ।
हैरान कार[५] हम भी हैं आतश के हाल के ॥

× × ×

रुख़सते यार का जिस वक्त ख़्याल आता है ।
उम्रे रफ़्ता[६] की मुझे याद दिला जाता है ॥
ज़र्रे उस कूचा में जा सकते नहीं रोज़न[७] तक ।
साया दीवार से लग चलने नहीं पाता है ॥
ख़ार से खुश्क हूँ गो[८] हिज्र[९] में उस गुलरू[१०] के ।
पर वह कांटा हूँ जो दामन नहीं उलझाता है ॥
आतशे गुल[११] ने किया है मेरी तैनत[१२] को ख़मीर[१३] ।
दामने बादे बहारी[१४] मुझे भड़काता है ॥
मुश्ते ख़ाक[१५] अपनी हूँ गरदूँ[१६] के हवाले करता ।
दामने गोर[१७] मेरे सामने फैलाता है ॥
जान खोता है अबस[१८] इश्क़े बुतां में आतश ।
सर को नादां कोई कुहिसार[१९] से टकराता है ॥

× × ×

---

(१) शान शौकत (२) बुलबुले की तरह (३) विरह रात्रि की संध्या (४) बात-चीत (५) आश्चर्य चकित (६) बीती हुई उम्र (७) खिड़की (८) यद्यपि (९) विरह (१०) सुन्दरी (११) फूल की लाली (१२) स्वभाव (१३) उत्तेजित (१४) बसंत बयार का आंचल (१५) मुठ्ठी भर मिट्टी (१६) आकाश (१७) क़ब्र का आंचल (१८) बेकार (१९) पहाड़ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आबे शमशीर[१] दवा इश्क़ के बीमार की थी।
चाशनी इसमें मगर शरबते दीदार[२] की थी॥

दिले दीवाना ज़्यस[३] इश्क़ो सनम रखता था।
हर नफ़स[४] काटनी मंज़िल मुझे कुहिसार की थी॥

चहचहे कंजे क़फ़स[५] में भी वही बाग़ के हैं।
सरे बुलबुल में हवा[६] थी वह जो गुलज़ार की थी॥

मसलहत[७] थी वही जो कुछ किया जिससे सलूक।
दिल जो था यार का था जान जो थी यार की थी॥

राहे सहरा[८] में जुनूं क्यों न रखे सर गश्ता[९]।
जुस्तजू[१०] आबला पायों[११] को तेरे ख़ार की थी॥

तूर[१२] पर कीजियो आतश को अज़ीज़ों[१३] तुम दफ़न।
आरज़ू उसको बहुत जलवये दीदार[१४] की थी॥

× × ×

आशिक़े रूये किताबी[१५] अगर इंसा होवे।
उससे बेहतर है जो यह हाफ़िज़े क़ुरां[१६] होवे॥

मेरे मरने की ख़बर हो न किसी को मालूम।
दोस्त गिरियां[१७] न तो दुश्मन कोई ख़न्दां[१८] होवे॥

नफ़्से सर्द[१९] से यह रूह को आती है सदा[२०]।
ठण्डे-ठण्डे वह सिधारे कि जो मेहमां होवे॥

---

(१) तलवार की धार (२) मिलन रूपी शरबत (३) अत्यधिक (४) सांस (५) पिंजरे में (६) वातावरण (७) नीति (८) जंगल की राह (९) पागल (१०) तलाश (११) जिनके पांव में फफोले हों (१२) एक पहाड़ (१३) प्रिय जनों (१४) दर्शन लाभ (१५) उज्ज्वल मुंह का प्रेमी (१६) कुरान याद करने वाला (१७) रोने वाला (१८) हंसने वाला (१९) ठण्डी सांस (२०) आवाज़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन सा बाल है उस ज़ुल्फ़ का बिखरा जो नहीं ।
कोई मजमूआ[१] न इतना भी परेशां होवे ॥

दूरबीं[२] दिल हो सफ़ा[३] से तो तमाशा दिखलाये ।
आशकारा[५] हो वह आँखों से जो पिनहां[४] होवे ॥

जान भी जाय तो निकले न ज़ुबां से कभी आह ।
चाहिये सीना तेरा गोर ग़रीबां[५] होवे ॥

मौसमे गुल[६] में उड़ावेगी हवा सहरा[७] की ।
बाग़ हर चन्द कि दीवानों का ज़िन्दां[८] होवे ॥

हुस्न बे ऐब[९] ख़ुदा ने वह दिया है तुमको ।
मुद्दई[१०] होके जो देखे वह पशेमां[११] होवे ॥

कुफ़्र[१२] व इसलाम की कुछ क़ैद[१३] नहीं ए आतश ।
शेख़ हो या कि बरहमन हो पर इंसां होवे ॥

× × ×

इश्तियाक़ वसलत[१४] में जान लब तक आई है ।
इश्क़ ने सताया है हुस्न को दुहाई है ॥

जिस क़दर बढ़ें उनको चंद रोज़ः बढ़ने दो ।
देखिये तो ज़ुल्फों की किस क़दर रसाई[१५] है ॥

मुर्ग़ रूह[१६] क़ैदी है जिस्म के ताल्लुक़[१७] से ।
सूरते क़फ़स[१८] छोड़ा जब इसे रिहाई[१९] है ॥

(१) संग्रह (२) दूरदर्शी (३) प्रकट (४) छिपा हुआ (५) परदेशी की क़ब्र (६) बहार (७) जंगल (८) क़ैदखाना (९) दोष रहित सौंदर्य (१०) शत्रु (११) लज्जित (१२) विधर्मी (१३) बंधन (१४) मिलन की इच्छा (१५) पहुँच (१६) आत्मा रूपी पक्षी (१७) सम्बन्ध (१८) पिंजड़े की तरह (१९) छुटकारा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भागते हैं वह आतश उनसे हम लिपटते हैं।
वां वही कदूरत[1] है यां वही सफ़ाई है॥

× × ×

दीवाना इक परी का है रखती हवा मुझे।
जिंदां से तंग तर[2] है यह वहशत सरा[3] मुझे॥
है इत्तहाद[4] मेरे तेरे मौज व आव का।
ए वहरे हुस्न[6] अपना समझ आशना[7] मुझे॥
दिल मिस्ले गुंचा[8] खूं न किया मुझ बरहना[9] ने।
क्या लुत्फ़ था जो मिलती फटी इक क़बा[10] मुझे॥
अफ़शां[11] छुड़ा के चेहरे से तुमने दिखा दिया।
ज़र्रों का आफ़ताब से[12] होना जुदा मुझे॥

× × ×

रूह को तन में खयाले बाग़े रिज़वां[13] चाहिये।
ता[14] क़फ़स में बन्द है शौक़े गुलिस्तां[15] चाहिये॥
रोज़ महशर[16] तो भला सर को झुका कर मैं चलूं।
तेग़े क़ातिल[17] का मेरी गरद न पे एहसां चाहिये॥
इश्क़ में अल्लाह के हूँ हो गया दीवाना मैं।
काबा[18] के नक़्शा का मुझ मजनूं को जिंदां चाहिये॥

---

(१) कपट (२) अधिक तंग (३) पागलों का स्थान यानी संसार (४) मेल (५) लहर व पानी (६) सौंदर्य के समुद्र (७) परिचित (८) कली की तरह (६) नंगा (१०) पोशाक (११) पसीना (१२) किरणों का सूर्य से (१३) स्वर्ग के वगीचे का ध्यान (१४) ताकि (१५) बाग़ की इच्छा (१६) प्रलय के दिन (१७) मारने वाले की तलवार (१८) तीर्थ स्थान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिल को लाज़िम[१] है ख़याले चेहरये पुरनूर यार[२]।
चौदहवीं के चांद सा इस घर में मेहमां चाहिये॥

मौसमे गुल की हवा है यह इशारा कर रही।
इन दिनों जामा से बाहर[३] अपने इंसां चाहिये॥

इस ख़राबे[४] को किया करते हो तुम ज़ेर व ज़बर[५]।
आशकारा[६] होवे आतश गंज पिनहां[७] चाहिये॥

× × ×

तेरी अबरूये पैवस्ता[८] का आलम में फ़साना[९] है।
किसी उस्ताद शायर की यह बेते आशिक़ाना[१०] है॥

कहा मजनूं ने दुनियां से गुज़रना[११] सुन के लैला का।
कोई आगे रवाना है कोई पीछे रवाना है॥

सियाही दूर कर दिल की तो पैदा नूरे उरफ़ां[१२] हो।
सर उफ़ई[१३] को कुचला जिसने माल उसका ख़ज़ाना है॥

बवाले जां[१४] हुआ है जिस्मे ख़ाकी[१५] ज़ोफ़ पीरी[१६] से।
क़फ़स से तंग बुलबुल को खिज़ां में आशियाना है॥

न मतलब कश्त[१७] से रखिये न खिरमन[१८] से ग़रज़ आतश।
समझ ले अपने मुंह में मोर जो क़िस्मत का दाना है॥

× × ×

(१) आवश्यक (२) प्रेमिका के चमकदार चेहरे का ध्यान (३) काबू से बाहर (४) संसार (५) नीचे ऊपर (६) प्रकट (७) छिपा खज़ाना (८) मोह लेने वाली भवें (९) कहानी (१०) श्रृंगार रस की पंक्ति (११) मरना (१२) साधुओं का सा तेज (१३) सांप का सर (१४) जान की मुसीबत (१५) मिट्टी का शरीर (१६) बढ़ापे की दुर्बलता (१७) खेती (१८) खलिहान।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिल को घर उस गुल का [illegible]
बूये यूसुफ़[1] से यह [illegible]
रोज़ने दीवार[3] [illegible]
ख़ानगी माशूक़[5] से [illegible]
कूचये गेसू[6] के सौदे में [illegible]
ख़ानये ज़ंजीर[7] में [illegible]
भूली है बुलबुल ख़िज़ाँ के [illegible]
फिर गुलिस्तां[11] चंद रोज़ [illegible]
गुफ़्तगू अल्लाह ने [illegible]
हम को भी आवाज़ [illegible]
एक राहे इत्तहाद[13] [illegible]
याद में उसकी दो [illegible]

× ×

दामन मेरे क़ातिल का [illegible]
हर चंद कि नज़दीक है [illegible]
गुलज़ारे जहाँ [illegible]
कोताह[16] थी उम्र [illegible]
आशिक़ हूँ बराबर मुझे [illegible]
बल खाये हुए सांप से [illegible]

×

---

(१) यूसुफ़ की सुगंध (२) [illegible]
(३) दीवार की खिड़की (४) [illegible]
[ईश्वर] (६) बालों की गली [illegible]
चार (१०) बहार का मौसम (११) [illegible]
पैग़म्बर (१३) मेल का रास्ता [illegible]
(१६) कम (१७) पानी के किनारे के [illegible]
(१९) बाग़ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह वसीयत न मेरी साकी फ़रामोश[1] करे।
कासये सर[2](अ) का ख़मे बादा[2] का सरपोश[3] करे॥

कुश्तये आलमे उरियानीये ख़ूबां[4] हूँ फ़लक।
है सज़ावार[5] जो मुझको न फ़रामोश करे॥

आशिक़ों से है इशारा यही उन मिज़गां का।
नश्तरों से हैं भरे गंज[6] लहू जोश करे॥

उस गुज़र गाह[7] में लाज़िम है गुनह से परहेज़।
राह रू[8] चाहिये अपना न गरां गोश[9] करे॥

दुश्मने जां भी तग़ाफ़ुल[10] का न होवे कुश्ता[11]।
ख़ातिरे दोस्त[12] किसी को न फ़रामोश करे॥

आरज़ू है यही आतश की ख़ुदा से ए ज़ाहिद।
तुझको ग़म नोश[13] करे मुझको क़दह नोश[14] करे॥

× × ×

यह आरज़ू थी कि तुझे गुल के रूबरू करते।
हम और बुलबुले बेताब गुफ़्तगू करते॥

पयाम बर[15] न मुयस्सर हुआ तो ख़ूब[16] हुआ।
ज़ुबाने ग़ैर से क्या शरहे आरज़ू[17] करते॥

मेरी तरह से मह व महर[18] भी हैं आवारा।
किसी हबीब[19] की यह भी हैं जुस्तजू करते॥

(१) भूल जाना २ (अ) खोपड़ी रूपी प्याला (२) शराब का मटका (३) ढक्कन (४) सुन्दरियों की नग्नावस्था का मारा हुआ (५) दोषी (६) खजाने (७) रास्ता (८) यात्री (९) बोझ बढ़ाना (१०) लापरवाही (११) मारा हुआ (१२) मित्र का मन (१३) दुख झेलने वाला (१४) मदिरा पान करने वाला (१५) संदेशवाहक (१६) अच्छा (१७) अभिप्राय बताना (१८) चांद सूरज (१९) प्रेमिका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमेशा रंग ज़माना बदलता रहता है।
सफ़ेद रंग हैं आख़िर स्याह रू[1] करते॥

लुटाते दौलते दुनिया को मैकदे[2] में हम।
तिलाई साग़र[3] मय नक़रई सुबू[4] करते॥

हमेशा मैंने गरेबां को चाक-चाक किया।
तमाम उम्र रफ़ूगर[5] रहे रफ़ू करते॥

जो देखते तेरी जंजीर ज़ुल्फ़[6] का आलम[7]।
असीर[8] होने की आज़ाद आरज़ू करते॥

यह काबा से नहीं बे वजह निस्बत[9] रूख़े यार[10]।
यह बे सबब नहीं मुर्दे को क़िबला रू[11] करते॥

वह जाने जां नहीं आता तो मौत ही आती।
दिल व जिगर को कहां तक भला लहू करते॥

न पूछ आलमे बरगश्ता तालये[12] आतश।
बरसती आग जो बारां[13] की आरज़ू करते॥

× × ×

ख़ाक होने से दरे दिलदार[14] ने जा[15] दी मुझे।
हो गई इक़बाल[16] आख़िर मेरी बर्बादी मुझे॥

एक दिन मैं मंज़िले हस्ती से जा पहुँचा अदम।
राह ज़न[17] सुनता था जिसको हो गया हादी[18] मुझे॥

---

(१) काले बाल (२) शराब ख़ाने (३) सोने का प्याला (४) चांदी की सुराही (५) कपड़ा सीने वाले (६) बालों की जंजीर (७) दशा (८) बन्दी (९) उपमा (१०) प्रेमिका का चेहरा (११) पश्चिम की ओर (१२) भाग्य का फिरना (१३) वर्षा (१४) प्रेमिका का दरवाजा (१५) स्थान (१६) सौभाग्य (१७) डाकू (१८) राह दिखाने वाला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तर्क करना जामये तन[1] का है यां तर्के लिबास[2]।
रूह की क़ालिब से[3] आज़ादी है आज़ादी मुझे॥

किस क़दर आदम को थी दिलबस्तगी[4] हव्वा के साथ।
हुस्न आलमगीर[5] से है इश्क़ बुनियादी[6] मुझे॥

यह उरूसे फ़ाहिशा[7] आती नहीं दिल को पसंद।
ज़ाल दुनिया[8] की नहीं मंज़ूर दामादी मुझे॥
हुस्ने क़ातिल से अज़ल[9] से दिलको इश्क़े पाक[10] है।
.खूबसूरत की पसंद आती है जल्लादी मुझे॥

दिल गुज़र गाहे हसीना[11] था तसव्वर[12] से कभी।
याद उस वीराना की आती है आबादी मुझे॥
मैंने फ़न्ने शैर[13] ए आतश पढ़ाया है तुझे।
तुझको शागि़र्दी है .जेबा[14] और उस्तादी मुझे॥

× × ×

मुर्ग़े दिल को हदफ़े नाविके मिज़गां[15] करते।
किसी अबरू[16] की कमां पर इसे .कुर्बां करते॥
दिले पुर दाग़[17] को मदफ़ूने बयाबां[18] करते।
किसी वीराना में इस गंज को पिनहां करते॥
कंजे तनहाई में रहता है निहायत दिल तंग।
चार दीवार गिरा कर इसे मैदां करते॥

---

(१) शरीर त्याग (२) वस्त्र त्याग (३) आत्मा की शरीर से (४) प्रेम (५) संसार भर का सौंदर्य (६) वास्तविक प्रेम (७) आवारा औरत (८) संसार रूपी डाइन (९) आरंभ से ही (१०) पवित्र प्रेम (११) सुन्दरियों के सम्पर्क में (१२) कल्पना (१३) कविता की कला (१४) शोभा (१५) पलकों के तीर का निशाना (१६) भौं (१७) दागों से भरा हुआ हृदय (१८) जंगल में दफ़न करना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और कोई तलब[1] इब्नाये ज़माना[2] से नहीं।
मुझ पर एहसां जो न करते तो यह एहसां करते॥
क़ामते यार का आलम[3] उसे दिखलाते हम।
मुनक़िरे रोजे क़यामत[4] को पशेमां[5] करते॥
यार से वादये फ़र्दा[6] है जो मुमकिन होता।
शाम से सुबह का हम चाक गरेबां[7] करते॥
शरबते वस्ल[8] तो नामुमकिन व ना पैदा[9] है।
ज़हर मिलता तो इलाजे तपे हिज्रां[10] करते॥
दिले यूसुफ़ से न क्यों दाग़ मुहब्बत हो अजीज़[11]।
साहबे ख़ाना[12] हैं क्या ख़ातिरे मेहमां करते॥
गेसुओं[13] को न हवा से उन्हें उलझाना था।
अपने सौदाइयों[14] के दिल न परेशां करते॥

× × ×

ज़ाहिर है यह ए यार तेरी कम सख़ुनी[15] से।
लब बंद हुए जाते हैं शीरीं सख़ुनी[16] से॥
अख़वान[17] की अदावत से हुआ शुहरये यूसुफ़[18]।
कुछ पेश नहीं जाती है क़िस्मत के धनी से॥
अफ़साना से बदतर है जो हो राज़ हवेदा[19]।
इज़हार फ़क़ीरी[20] नहीं बेहतर कफ़नी[21] से॥

---

(१) मांग (२) दुनिया के लोग (३) प्रेमिका के क़द की दशा (४) प्रलय न मानने वाले (५) लज्जित (६) कल का वादा (७) कपड़ा फाड़ना (८) मिलन की मिठास (९) असम्भव (१०) विरह की गर्मी (११) प्रिय (१२) घर के मालिक (१३) बाल (१४) प्रेमियों (१५) कम बोलना (१६) मीठा बोलना (१७) भाई (१८) यूसुफ़ की प्रसिद्धि (१९) भेद प्रकट होना (२०) साधुता का ढिंढोरा पीटना (२१) मर जाना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोता है इधर अब्र[१] उधर हंस रही है बर्क़[२] ।
गिरिया से कोई .खुश है कोई ख़न्दा ज़नी से ॥
गर्दू[३] से न हो दौलते दुनिया का तलबगार ।
कब फ़ैज[४] को पहुँचा है कोई माल दुनी[५] से ॥

अल्लाह रे मग़रूर[६] ज़मीं पर न रखा पांव ।
फूले न समाये कभी गुल पैरहनी[७] से ॥
करते हैं अबस[८] यार मलामत[९] मुझे आतश ।
मजबूर है यह ख़ाक का पुतला शुदनी[१०] से ॥

× × ×

चमन में जाके किन आंखों से देखूं दाग़ लाला का ।
यह मेरा दाग़े दिल बेदाग़ लाला की निशानी है ॥
नसीमे सुबह से मुर्झाया जाता हूँ वह गुंचा हूँ ।
वह गुल हूँ मैं जिसे शबनम बलाये आसमानी[११] है ॥
ख़राबी[१२] से इरादा है मकां तामीर[१३] करने का ।
गिरा कर क़स्रे तन[१४] को गोर की मंज़िल उठानी है ॥

इलाही तूल उम्रे ख़िज्र[१५] दे बादे बहारी[१६] को ।
मज़ारे बेकसां[१७] पर फूलों की चादर चढ़ानी है ॥
कोई वीराना आतश कोई आबादी नहीं बाक़ी ।
तलाशे गौहरे मक़सूद[१८] में क्या ख़ाक छानी है ॥

---

(१) बादल (२) बिजली (३) आकाश (४) लाभ (५) दुष्ट का धन (६) घमंड़ी (७) पोशाक (८) वेकार (९) बुरा भला कहना (१०) अनहोनी (११) दैवी विपत्ति (१२) बर्बादी (१३) निर्माण (१४) शरीर रूपी महल (१५) ख़िज्र की तरह लम्बी उम्र (१६) वसंत बयार (१७) ग़रीबों की क़ब्र (१८) मनचाहे मोती की खोज ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीना पर संगे मलामत[1] जो गरां जां[2] रोके।
गुर्ज़ रुस्तम[3] को यक़ीं है कि वह इंसां रोके॥
निकहते गुल[4] हूँ मैं क्या मुझको गुलिस्तां[5] रोके।
बूये पैराहने यूसुफ़[6] को न ज़िंदां रोके॥
बुलबुलों के लिये है दाम रगे गुल[7] काफ़ी।
जाल फैला के न सैय्याद गुलिस्तां रोके॥
लज़्ज़ते ज़ख़्म[8] से महरूम[9] न रखे क़ातिल।
हाथ को अपने न ख़ैरात से इंसां रोके॥
शौक़ से लटके कमर पर हमें कुछ काम नहीं।
सामना रुख़[10] का न वह ज़ुल्फ़े परेशां रोके॥
हंसते हैं गुल की तरह अहले जहां[11] क्या आतश।
मिस्ल शबनम गये इस बाग़ से मेहमां रोके॥

× × ×

शबे फ़ुरक़त में यार जानी की।
दर्द पहलू ने मेहरबानी की॥
मुंह दिखाओ बहुत रही तकरार।
अरनी[12] व लन तरानी[13] की॥
कमरे यार हो गई ग़ायब।
सुन के धूम अपनी नातवानी[14] की॥

---

(१) दुर्व्यवहार रूपी पत्थर (२) कठोर हृदय (३) रुस्तम की गदा (४) फूल की सुगंध (५) बाग़ (६) यूसुफ़ के कपड़े की सुगंध (७) फूल की नसों का जाल (८) घावों का स्वाद (९) वंचित (१०) मुख (११) दुनियां वाले (१२) दिखाओ (१३) नहीं दिखाते (१४) कमज़ोरी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सैर[१] न्यामत से दो जहां[२] की किया ।
दे के शबनम को बूंद पानी की ॥
मिस्ल शबनम[३] हूँ साफ़ दिल क़ाना[४] ।
मुझको दरिया है बूंद पानी की ॥
राहते मर्ग[५] को न पूछ आतश ।
न रही क़द्र ज़िंदगानी की ॥

× × ×

वाक़िफ़[६] हुई ख़िज़ां न हमारी बहार से ।
बदला न रंग नशा ने अपने ख़ुमार[७] से ॥
बादे फ़ना[८] क़बूल नहीं ज़िक्र नेक व बद[९] ।
मिट जाये पहले नाम निशाने मज़ार[१०] से ॥
समझे तो रंज व राहते बुलबुल है मुद्दआ[११] ।
इस मतलये दो लख़्त[१२] ख़िज़ां व बहार से ॥
औरों से कीजे वादये दीदार[१३] हश्र[१४] पर ।
मरना नहीं क़ुबूल हमे इंतज़ार से ॥
रखदें बरहना[१५] गोर में अहले जहां मुझे ।
दस गज़ कफ़न क़ुबूल नहीं रोज़गार[१६] से ॥

× × ×

---

(१) उदासीन (२) दोनों दुनियां (३) ओस की तरह (४) संतोषी (५) मरने की खुशी (६) परिचित (७) नशा (८) मरने के बाद (९) अच्छे बुरे की चर्चा (१०) क़ब्र का निशान (११) अभिप्राय (१२) दो टुकड़ों का शब्द (१३) मिलन का वादा (१४) प्रलय (१५) नंगा (१६) संसार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खिरमने उम्र[1] जले तेरे लबे खंदां[2] से।
बर्क़ का काम तबस्सुम[3] ने लिया दंदां से॥
नेक तैनत[4] को बदी[5] का नहीं मंजूर एवज़[6]।
इंतक़ाम[7] अपना न यूसुफ़ ने लिया अंख़वां[8] से॥
वहशत आबाद[9] जहां में न तलब कर आराम।
कब मुसाफ़िर को मिला चैन रहे वीरां[10] से॥
आख़िरे कार[11] जहां से हो अगर आगाही[12]।
साहबे ख़ाना[13] नज़र आने लगें मेहमां से॥
पस्त फ़ितरत[14] को न हो रुतबये आला[15] हासिल।
एक तह ख़ाना को देखा न बलन्द ईवां[16] से॥
अमन चाहे तो न रख आलमे असबाब[17] से कुछ।
हाथ आता है क़फ़न दुज़्द[18] को क्या उरियां[19] से॥
ख़ाम[20] को शादी[21] है ग़म पुख़्ता[22] को है एहसां से।
कश्त[23] को नफ़ा[24] है ख़िरमन[25] को ज़रर[26] बारां[27] से॥

---

(१) आयु रूपी खलिहान (२) हंसते हांठ (३) मुस्कान (४) अच्छे स्वभाव वाला (५) बुराई (६) बदला (७) बदला (८) भाइयों से (९) पागलपन से भरा संसार (१०) सुनसान रस्ता (११) परिणाम (१२) जानकारी (१३) मकान मालिक (१४) कम हिम्मत (१५) ऊँचा पद (१६) महल (१७) संसार (१८) कफ़न चोर (१९) नंगा (२०) कच्चा, तुच्छ व्यक्ति (२१) खुशी (२२) पक्का, स्वाभिमानी (२३) फ़सल (२४) लाभ (२५) खलिहान (२६) हानि (२७) वारिश !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिजदा[1] आदम को फ़रिश्तों ने किया खूब किया।
क़ुदरत अल्लाह[2] की ज़ाहिर हुई है इंसां से॥
हैफ़[3] है ख़ाक का पुतला न करे याद उसको।
उल्फ़त अल्लाह को किस मर्तबा[4] है इंसां से॥
रगें[5] ज़ंजीरें हैं मैं रूह हूँ यह क़ालिब[6] है।
मलकुल मौत[7] छुड़ा देगा मुझे ज़िंदां से॥
काबा व दैर में फिरता है नाफ़हमी[8] से ख़राब[9]।
दूर समझा है जिसे है वह क़रीब इंसां से॥
क़िस्मते मुर्ग़ गिरफ़्तार की अल्ला रे बदी[10]।
दाम[11] को दाना का मुहताज किया दहक़ां[12] से॥
सायले सब्र व सकूनत[13] हूँ ख़ुदा से शब बरोज़[14]।
मंसबे फ़क़्र[15] है मतलूब[16] मुझे सुलतां से॥
बाग़ में ज़ुल्फ़ व ख़ते यार है याद आ जाता।
कभी संबुल से उलझता हूँ कभी रीहां[17] से॥
गर्दिशे बख़्त[18] है या गरदिशे परकार[19] आतश।
पांव उठता नहीं इस दायरये दौरां[20] से॥

× × ×

---

(१) सर झुकाना (२) ईश्वर की शक्ति (३) दुख (४) कितनी अधिक (५) नसें (६) शरीर (७) मस्जिद मंदिर (८) नासमझी (९) बुरा व्यक्ति मूर्ख (१०) बुराई (११) पैसा (१२) किसान (१३) संतोष (१४) दिन रात (१५) साधु का स्थान (१६) चाहना (१७) एक घास (१८) भाग्य का चक्र (१९) गोला बनाने का एक यंत्र (२०) घूमने वाला घेरा !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ए सनम जिसने तुझे चांद सी सूरत दी है।
उसी अल्लाह ने मुझको भी मुहब्बत दी है॥
तेग़ बे आब[1] है ने बाज़ुए क़ातिल[2] कमज़ोर।
कुछ गरां जानी[3] है कुछ मौत ने फ़ुर्सत दी है॥
इस क़दर किस लिये यह जंग व जदल[4] ए गरदूँ[5]।
न निशां[6] मुझको दिया है न तो नौबत[7] दी है॥
कोई अक्सीर[8] ग़नी दिल[9] नहीं रखती ऐसा।
ख़ाकसारी नहीं दी है मुझे दौलत दी है॥
जिस्म को ज़ेरे ज़मीं[10] भी वही पहूँचा देगा।
रूह को जिसने फ़लक सैर की ताक़त दी है॥
यादे महबूब[11] फ़रामोश[12] न होवे ए दिल।
हुस्न नीयत[13] ने मुझे इश्क़ सी न्यामत दी है॥
गोश[14] पैदा किये सुनने को तेरा जिक्रे जमाल[15]।
देखने को तेरे आंखों में बसारत[16] दी है॥
लुफ़्त दिल बस्तगिये आशिक़े शौदा[17] को न पूछ।
दो जहाँ[18] से इस असीरी[19] ने फ़राग़त[20] दी है॥
कमर यार के मज़मून को बांधो आतश।
ज़ुल्फ़े ख़ूबां[21] सी रसा[22] तुमको तबियत दी है॥

× × ×

---

(१) विनाधार की तलवार (२) मारने वाले का हाथ (३) कठिनाई से निकलने वाले प्राण (४) लड़ाई झगड़ा (५) आस्मान (६) झंडा (७) बाजा (८) कीमती वस्तु (९) उदास हृदय (१०) जमीन के नीचे (११) प्रेमिका की याद (१२) भूलना (१३) अच्छी भावना (१४) कान (१५) सौंदर्य चर्चा (१६) देखने की शक्ति (१७) प्रेमी हृदय के प्रेम का आनन्द (१८) दोनों संसार (१९) बन्दी होना (२०) फ़ुर्सत (२१) सुन्दरियों के बाल (२२) लम्बी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेख़ुद[1] है यार दौलते हुस्ने शबाब[2] से।
सच है ज़्यादा नशये ज़र[3] है शराब से॥
नाज़ुक ख़्याल अब भी हैं मौजूद ए फ़लक।
ख़ाली रहा नहीं कभी दरिया हुबाब[4] से॥

सैरे दरू[5] से कुहना हक़ीक़त[6] खुली मुझे।
बाहर नहीं किताब का मतलब किताब से॥
उससे हरे दरख़्त हो इस से शिगुफ़्ता गुल[7]।
रुतबा में अपनी ख़ाक बराबर है आब[8] से॥

उस बहर में खिलाती है ग़ोते मुझे क़ज़ा[9]।
टकरा के पारा पारा हो कश्ती हुबाब से॥
उम्रे दो रोज़ा[10] हो गई इक हाल पर बसर।
ख़ाली रहा ज़माना मेरा इनक़लाब[11] से॥

रोता है वह तो हंसती है यह उसके हाल पर।
नफ़रत है मुझको सुहबते वर्क़ व सहाब[12] से॥
आतश को चुन के क़त्ल किया उसने इसलिए।
होती है क़द्र शैर[13] बलन्द[14] इंतख़ाब[15] से॥

× × ×

(१) मस्त (२) जवानी के सौंदर्य का धन (३) धन का नशा (४) बुलबुला (५) भीतरी सैर (६) सत्य (७) फूल खिलना (८) पानी (९) मौत (१०) दो दिन की जिन्दगी (११) परिवर्तन (१२) बादल व बिजली का सहवास (१३) कविता का आदर (१४) ऊँचा (१५) चुनाव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख्वाहाँ[1] तेरे हर रंग में ए यार हमीं थे।
यूसुफ़ था अगर तू तो ख़रीदार हमीं थे॥
बेदाद[2] की महफ़िल में सज़ावार[3] हमीं थे।
तक़सीर[4] किसी की हो गुनहगार हमीं थे॥
न्यामत थी तेरे हुस्न की हिस्सा में हमारे।
तू काने मलाहत[5] था ख़रीदार हमीं थे॥
सौदा ज़दा[6] जुल्फ़ों का न था अपने सिवा एक।
आज़ाद दो आलम[7] था गिरफ़्तार हमीं थे॥
बीमारे मुहब्बत था सिवा अपने न कोई।
इक मुस्तहक़े शरबते दीदार[8] हमीं थे॥
इक जुंबिशे मिज़गां[9] से ग़श[10] आता था हमीं को।
दो नरगिस बीमार[11] के बीमार हमीं थे।
बइनाम मुहब्बत ने तेरी हमको किया था॥
रूसवाये सरे कूचा व बाज़ार[12] हमीं थे॥
दिल ठोकरें खाता था न हर गाम किसी का।
इक ख़ाक में मिलते दमे रफ़्तार[13] हमीं थे॥
भड़काने से आतश को जलाने लगे या तो।
अलताफ़ व इनायत[14] के सज़ावार हमीं थे॥

× × ×

(१) चाहने वाले (२) अत्याचार (३) योग्य (४) अपराध (५) सौंदर्य की खान (६) पागल बने हुये (७) दोनों संसार (८) मिलन रूपी शरबत के अधिकारी (६) पलकों का हिलना (१०) चक्कर ११)) नरगिस के फूल जो आखों की तरह होते हैं (१२) हर जगह बदना (१३) चलते समय (१४) कृपा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह किस रश्के मसीहा[1] का मकां है।
ज़मीं यां की चहारुम आस्मां[2] है॥

ख़ुदा पिनहां[3] है आलम[4] आशकारा[5]।
निहां[6] हैं गंज[7] वीराना अयां[8] है॥

दिले रोशन है रोशनगर[9] की मंज़िल।
यह आईना सिकंदर का मकां है॥
तकल्लुफ़[10] से बरी है हुस्न ज़ाती[11]।
क़बाय गुल[12] में गुल बूटा कहां है॥
पसीजेगा कभी तो दिल किसी का।
हमेशा अपनी आहों का धुवाँ है॥
बरंगे बू[13] हूँ गुलशन[14] में मैं बुलबुल।
बग़ल ग़ुंचा[15] के मेरा आशियाँ[16] हैं॥
शिगुफ़्ता[17] रहती है ख़ातिर[18] हमेशा।
क़नाअत[19] भी बहारे बे ख़ज़ां[20] है॥
बहुत आता है याद ए सब्र मिसकीं[21]।
ख़ुदा खुश रखे तुझको तू जहां है॥
सहर[22] होवे कहीं शबनम करे कूच।
गुल व बुलबुल के दरिया दरमियां है॥

× × ×

(१) मसीहा पैग़म्बर को लजाने वाला (२) चौथा आस्मान (३) छिपा हुआ (४) संसार (५) प्रकट (६) छिपा हुआ (७) ख़ज़ाना (८) प्रकट (६) रोश्नी देने वाला (१०) बनावट (११) वास्तविक सौंदर्य (१२) फूल रूपी कपड़ा (१३) सुगन्ध की तरह (१४) बाग़ (१५) कली (१६) घोंसला (१७) खिली हुई (१८) चित्त (१६) सब्र (२०) जहा पतझड़ न आये (२१) गरीब संतोष्र (२२ प्रातःकाल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जरस[1] के साथ दिल रहते हैं नालां[2]।
मेरे यूसुफ़ का आशिक़ कारवां है॥
क़दे महबूब[3] को शायर कहें सरो[4]।
क़यामत का यह ए आतश निशां है॥

× × ×

आतशे नालये बुलबुल[5] से धुवां होता है।
सैर गुलज़ार से मुझको ख़फ़कां[6] होता है॥
ज़ाहिरे बातिने अय्याम[7] है बातिन[8] से ख़िलाफ़।
दाना होता है अयां दाम[9] निहां होता है॥
बातें करता हूँ निगाहों में परी ज़ादों[10] से।
दीदये शौक़[11] से यां कारे ज़ुबां[12] होता है॥
अब्रूये यार[13] से क़ूवत[14] है मिज़ा[15] को सारी।
तीर के वास्ते सब ज़ोरे कमां होता है॥
फ़र्शे गुल पर वह नज़ाकत से नहीं सो सकते।
तने नाज़ुक[16] में रगे गुल[17] का निशां होता है॥
हुस्न को दाग़ लगावेगी यह सैरे गुलज़ार।
आप पर हूरे बिहिश्ती[18] का गुमां[19] होता है॥

---

(१) घंटा (२) रोते हुए (३) प्रेमिका की ऊँचाई (४) एक ऊँचा पेड़ (५) बुलबुल की आहों का धुंवा (६) क्रोध (७) संसार की वास्तविकता का ऊपरी रूप (८) वास्तविकता (६) जाल (१०) सुन्दरियां (११) इच्छा रूपी आँख (१२) जुबान का काम (१३) प्रेमिका की भवें (१४) ताक़त (१५) पलकें (१६) कोमल शरीर (१७) फूलों की नसें (१८) स्वर्ग की सुन्दरी (१६) संदेह ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

.खुदा महफ़ूज़[1] रखे दिल को उस उफ़ईये काकुल[2] से ।
नहीं मुमकिन सलामत छूटना मूज़ी[3] के चंगुल से ॥
चमन की सैर से नफ़रत हमारे दिल को होती है ।
तबीयत को खफ़ा करती है सुहबत ख़ार की गुल से ॥
.खुदा पर रख नज़र तालिब[4] अगर है दीन[5] व दुनियां का ।
यक़ीं है दौलते कूनैन[6] हासिल हो तवक्कुल[7] से ॥
ज़रर[8] पहुँचाती है माशूक़ को बेताबिये आशिक़[9] ।
फटे हैं परदा हाये गोश गुल[10] फ़रियाद बुलबुल[11] से ॥
निहायत मुश्त ख़ाके[12] आतशे बेकस[13] को हसरत है ।
किसी दामन तलक पहुँचे सबा[14] तेरे तवस्सुल[15] से ॥

× × ×

.जेरे ज़मीं भी चैन की सूरत नहीं कोई ।
आसूदगाने ख़ाक[16] की मिट्टी ख़राब है ॥
फ़स्ले बहार आके ख़िज़ां बारहा[17] हुई ।
अंगूर में हुनूज़[18] हमारे शराब है ॥
ख़ातिर[19] न इसकी तोड़िये जामे शराब[20] से ।
मेहमान चंद रोज़ा यह अहदे शबाब[21] है ॥
टलते नहीं हैं सामने से अश्क एक दम ।
आतश हमारा तिश्नये दीदार आब[22] है ॥

---

(१) सुरक्षित (२) सांपों जैसे बाल (३) अत्याचारी (४) चाहने वाला (५) धर्म (६) दोनों दुनियाँ की दौलत (७) भरोसा (८) हानि (९) प्रेमी की बेचैनी (१०) फूलों के कान का परदा (११) बुलबुल की प्रार्थना (१२) मुट्ठी भर मिट्टी (१३) गरीब कवि आतश (१४) हवा (१५) जरिया (१६) मिट्टी में आराम करने वाले (१७) अक्सर (१८) अब भी (१९) तबियत (२०) शराब का प्याला (२१) जवानी के दिन (२२) मिलन के प्यासे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूरत से उसकी बेहतर सूरत नहीं है कोई।
दीदार यार सी भी दौलत नहीं है कोई॥

आँखों को खोल अगर तू दीदार का है भूका।
चौदह तबक़[१] से बाहर न्यामत नहीं है कोई॥

यह क्या समझ के कड़के होते हैं आप हमसे।
पी जायगा किसी को शरबत नहीं है कोई॥

हम क्या कहें किसी से क्या है तरीक़[२] अपना।
मज़हब नहीं है कोई मिल्लत[३] नहीं है कोई॥

हम शायरों का हल्क़ा[४] हल्क़ा है आरिफ़ों[५] का।
नाआशनाये मानी[६] सूरत नहीं है कोई॥

नाज़ां[७] न हुस्न पर हो मेहमां है चार दिन का।
बे एतबार[८] ऐसी दौलत नहीं है कोई॥

जां से अज़ीज़ दिल को रखता हूँ आदमी हूँ।
क्योंकर कहूँ कि मुझको हसरत नहीं है कोई॥

मा व शुमा[९] कह व मह[१०] करता है ज़िक्र तेरा।
इस दास्तां[११] से ख़ाली सुहबत[१२] नहीं है कोई॥

शहरे बुतां[१३] है आतश अल्लां को करो याद।
किसको पुकारते हो हज़रत नहीं है कोई॥

× × ×

---

(१) सम्पूर्ण संसार (२) ढंग (३) धर्म मंड़ली (५) साधुओं का (६) अर्थ से अपरिचित (७) गर्व करना (८) झूठी (९) हम तुम (१०) छोठा वड़ा (११) कहानी (१२) साथ (१३) सुन्दरियों की वस्ती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाज़ार दहर[१] में तेरी मंज़िल[२] कहां न थी।
यूसुफ़ न जिस में हो कोई ऐसी दुकां न थी॥
मंज़िल ही दूर है जो यह पहुँचे नहीं हुनूज़[३]।
दम लेने वाली राह में उम्रे खां[४] न थी॥
दिखलाये सैर आंखों को बादे मुराद[५] की।
ऐसी कोई कमंद कोई नर्दबां[६] न थी॥
आगाह[७] जज़्बे इश्क़ ज़ुलेखा[८] से था न हुस्न।
यूसुफ़ को चाह[९] में खबरे कारवां[१०] न थी॥
रह जाना पीछे जिस्म का जां से अजब[११] नहीं।
किस कारवां की गर्द पसे कारवां[१२] नहीं॥
बांगे जरस[१३] के आगे हर एक का क़दम रहा।
गर्द अपने कारवां की पसे कारवां न थी॥
अफ़सोस क्या जवानिये रफ़्ता[१४] का कीजिये।
वह कौन सी बहार थी जिसको ख़ज़ां न थी॥
तालों से एक दिन न किये गर्म गोशे यार[१५]।
आतश मगर[१६] तुम्हारे दहन[१७] में ज़ुबां न थी॥

× × ×

---

(१) दुनिया का बाज़ार (२) स्थान (३) अभी तक (४) बीतने वाली उम्र (५) इच्छा रूपी छत (६) सीढ़ी (७) परिचित (८) ज़ुलेखा [एक प्रेमिका] के प्रेम का खिंचाव (९) कुंवा (१०) क़ाफ़ले की ख़बर (११) आश्चर्य (१२) कारवां के पीछे (१३) घंटे की आवाज़ (१४) बीती जवानी [१५) प्रेमिका के कान (१६) शायद (१७) मुँह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लख़्ते जिगर[1] को क्योंकर मिज़गाने तर[2] संभाले।
यह शाख़ वह नहीं जो बारे समर[3] संभाले॥
दीवाना होके कोई फाड़ा करे गरेबां।
मुमकिन नहीं कि दामन वह बेख़बर संभाले॥
तकिया में आदमी को लाज़िम[4] कफ़न है रखना।
बैठा रहे मुसाफ़िर रख़ते सफ़र[5] संभाले॥
वह नख़्ले खुश्क[6] हूँ मैं इस गुलशने जहाँ[7] मैं।
फिरता है बाग़बां भी मुझ पर तबर[8] संभाले॥
दर्दे फ़िराक़[9] आतश तड़पा रहा है हमको।
इक हाथ दिल संभाले है इक जिगर संभाले॥

× × ×

जिसे देखा वह दीवाना है तेरा बाग़े आलम[10] में।
बरंगे बूये गुल[11] फिरते हैं मर्दुम[12] पैरहन[13] भूले॥
लहद[14] में जाके बज़्मे दहर[15] फिर हमको न याद आई।
मज़ा पाया यह ख़िलवत[16] में कि लुत्फ़े अंजुमन[17] भूले॥
उठा पर्दा दूई का शाहिदे तौहीद[18] के रुख़[19] से।
हुये हम दम बख़ुद[20] ऐसे कि सारी मा व मन[21] भूले॥

---

(१) हृदय का टुकड़ा (२) भीगी आंख (३) फलों का बोझ (४) जरूरी (५) सफ़र का सामान (६) सूखा पेड़ (७) संसार रूपी बगीचा (८) कुदाल (६) विरह का दर्द (१०) बाग़ रूपी संसार (११) फूलों के सुगंध की तरह (१२) आदमी (१३) कपड़े (१४) क़ब्र (१५) संसार (१६) एकांत (१७) संसार का आनंद (१८) एक प्रेमिका (ईश्वर) (१६) मुख (२०) चुप (२१) हम तुम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुले रूख़सारये सय्याद[१] से जो इश्क़ कामिल[२] हो।
क़फ़स में आशियाने की हवा मुर्ग़े चमन[३] भूले॥
तमाशा गोशा गीरी[४] दश्त ग़ुरबत[५] का दिखाती है।
वतन में हूँ मगर मुझको हैं याराने वतन[६] भूले॥

× × ×

मौत को समझे रहें गिब्र व मुसलमां[७] आई।
रूह[८] क़ालिब[९] में है दोरोज़ को मेहमां आई॥
यह सफ़ा तन में कहां कतमे अदम[१०] से बाहर।
जिस्म की तरह तेरी रूह है उरियां[११] आई॥
गुलशने दहर भी है कोई सराये मातम[१२]।
शबनम इस बाग़ में जब आई तो गिरियां आई॥
ख़त[१३] का आग़ाज़[१४] हुआ उस रूख़े नूरानी[१५] पर।
चल बसी सुबहे वतन शामे ग़रीबां[१६] आई॥
आईना ने रूख़े अनवर[१७] पे इजारा बांधा[१८]।
शाना[१९] के हिस्से में वह ज़ुल्फ़े परेशां आई॥
इश्क़े बुलबुल में असर है तो क़फ़स में आतश।
बूये गुल[२०] फांद के दीवारे गुलिस्तां आई॥

× × ×

(१) प्रेमिका के फूल जैसे गाल (२) सच्चा प्रेम (३) बाग़ के पक्षी (४) एकांत वास (५) परदेस (६) स्वदेश निवासी (७) सब धर्म वाले (८) आत्मा (९) शरीर (१०) परलोक का देश (११) नंगी (१२) रोने की जगह (१३) बाल (१४) आरम्भ (१५) चमकदार चेहरा (१६) परदेश की संध्या (१७) चमकीला चेहरा (१८) अधिकार जमाया (१९) कंघा (२०) फूल की सुगंध।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौ जवानी की है पीरी[1] में तमन्ना बाक़ी।
मौसमे गुल के गये पर भी है सौदा[2] बाक़ी॥
आख़िरे कार[3] है मेले से जहां के चलना।
सैर कर ता[4] न रहे कोई तमाशा बाक़ी॥
इस क़दर सीना ग़मे इश्क़ से मामूर[5] हुआ।
न रही दिल में मेरे हसरते दुनियां[6] बाक़ी॥
दिल को इक़ सरो से क़द[7] की है तमन्ना बाक़ी।
रूह को है हवसे आलमे बाला[8] बाक़ी॥
यही आतश की दुआ है यही आतश की दुआ।
मग़फ़रत[9] होवे मेरी बादे फ़ना[10] या बाक़ी[11]॥

× × ×

कुछ नज़र आया न फिर जब तू नज़र आया मुझे।
जिस तरफ़ देखा मुक़ामे हू[12] नज़र आया मुझे॥
तू वह गुल है बाग़ आलम में कि जिसके वास्ते।
गुल भी आवारा बरंगे बू[13] नज़र आया मुझे॥
दिल शबे फ़ुर्क़त[14] रहा सीना में मुर्दे की तरह।
गोर[15] का पहलू मेरा पहलू नज़र आया मुझे॥

× × ×

---

(१) बुढ़ापा (२) पागलपन (३) परिणाम (४) ताकि (५) भरा (६) संसार की इच्छा (७) ऊंचा क़द वाला (८) दूसरी दुनियां की इच्छा (९) क्षमा (१०) मरने के बाद (११) जो कुछ बाक़ी हो (१२) ईश्वर का स्थान (१३) सुगंध की तरह (१४) विरह की रात (१५) क़ब्र।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आंख आईना से तुमने जो लड़ाई होती ।
रात भर मेरी तरह नींद न आई होती ॥
तार संबुल[1] कोई कहता है रगे गुल[2] कोई ।
कमर यार जो होती तो दिखाई होती ॥
साहबे ज़र्फ़[3] जो होता न हमारे दिल सा ।
दो जहां में न मुहब्बत की समाई होती ॥
चश्मे बुलबुल से जो अहबाब[4] नज़ारा[5] करते ।
बूये गुल[6] पैरहने यार[7] से आई होती ॥
सहल छुटना नहीं उस राहते जां[8] का आतश ।
रूह व क़ालिब[9] में है मुश्किल से जुदाई होती ॥

× × ×

गोश[10] अफ़साने सुने तो तुझसे ख़ुशरू[11] यार के ।
आंख दे अल्लाह तो क़ाबिल तेरे दीदार के ॥
चश्म वहदत बीं[12] से लाज़िम है तमाशाये चमन[13] ।
ख़ार व गुल[14] दोनों बग़ल परवरदा[15] हैं गुलज़ार के ॥
बुलबुलों का निकहते गुल[16] से मुअत्तर[17] है दिमाग़ ।
गुंचे क्या चटके हैं शीशे टूटे हैं अत्तार के ॥

(१) एक प्रकार की घास (२) फूलों की नस (३) उदार (४) मित्र (५) देखना (६) फूल की सुगंध (७) प्रेमिका का कपड़ा (८) प्रेमिका (९) शरीर व आत्मा (१०) कान (११) सुन्दर (१२) ईश्वर को देखने वाली आंख (१३) बाग़ का तमाशा (१४) फूल व कांटे (१५) एक साथ पाले हुए (१६) फूलों की सुगंध (१७) भरा हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काम है अल्लाह से आलम[1] से कुछ मतलब नहीं।
मुश्तरी[2] यूसुफ़ के हैं ख़्वाहां[3] नहीं बाज़ार के॥
वाक़या मंसूर[4] का सुनकर खुला हमको यह राज़।
हक़[5] कहे से आदमी होता है क़ाबिल दार[6] के॥

× × ×

नाफ़हमी[7] अपनी परदा है दीदार के लिये।
वरना कोई नक़ाब नहीं यार के लिये॥
क़ौल[8] अपना है यह सहबा व ज़ुन्नार के लिये।
दो फन्दे हैं यह काफ़िर व दींदार के लिये॥
दश्ते अदम[10] से आते हैं बाग़े जहाँ में हम।
बे दाग़ लाला[11] व गुले बे ख़ार[12] के लिये॥
कुफ़्त व शुनीद[13] में हों बसर दिन बहार के।
गुल के लिये है गोश[14] ज़ुबां ख़ार के लिये॥
बुलबुल ही को बहार के जाने का ग़म नहीं।
हर वर्ग[15] हाथ मलता है गुलज़ार के लिये॥
अंधेर है जो दम की न उसके हो रोशनी।
यूसुफ़ मेरा चिराग़ है बाज़ार के लिये॥
एहसां जो इब्तदा[16] से है आतश वही है आज।
कुछ इंतहा[17] नहीं करम यार[18] के लिये।

× × ×

(१) संसार (२) ग्राहक (३) चाहने वाले (४) मंसूर की कहानी (५) सच (६) फांसी (७) नासमझी (८) कथन (९) माला या जनेऊ (१०) परलोक का जंगल (११) बिना दाग़ का लाना (१२) बिना कांटे का फूल (१३) कहना सुनना (१४) कान (१५) पत्ता (१६) आरम्भ (१७) अंत (१८) प्रेमिका की कृपा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो कुछ अज़ाब[1] ज़ेरे ज़मीं[2] हो अजब[3] नहीं।
साथ अपने गोर में भी हमारे अमल[4] चले॥
की वलवलों ने शौक़ की तकलीफ़ कूये यार[5]।
लेकर मुझे बहिश्त में हुस्ने अमल[6] चले।
उठते ही तेरे होने लगे मुंतशर[7] हवास[8]।
दो कोह[9] थे जो सबर व तहम्मुल[10] वह टल चुके॥
दिल भर के सैर की न ख़राबात दहर[11] की।
सैलाब[12] की तरह से हम आज आये कल चले॥
आँखे तुम्हारी फिर गईं आईना देखकर।
आख़िर ग़रूरे हुस्न से तेवर बदल चले॥
आसूदा सैर[13] होके हुए अपनी जान से।
ख्वाने फ़लक[14] से हम ग़म व ग़ुस्सा निगल चले॥

× × ×

चहकारते हैं मुर्ग़ ख़ुश अलहां[15] नये-नये।
दिखला रहा है रंग गुलिस्तां नये-नये॥
सौदाये ज़ुल्फ़ यार में यह चाहता है शौक़।
आँखें हों और ख्वाब परेशां[16] नये-नये॥
क्योंकर चबा-चबा के बातें करे वह शोख़।
निकले हैं मुंह में यार के दंदा नये-नये॥

× × ×

(१) कष्ट (२) ज़मीन के नीचे (३) आश्चर्य (४) कर्म (५) प्रेमिका की गली (६) शुभ कर्म (७) बिखरना (८) इंद्रियां (९) पहाड़ (१०) संतोष व सहन (११) संसार (१२) बाढ़ (१३) जी भरके (१४) आस्मानी दस्तर-ख्वान (१५) गाने वाले पक्षी (१६) चिंता में डालने वाले सपने।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहती है फ़िक्र[1] ताज़ा मज़ामीं[2] की मुंतज़र[3] ।
इस घर में आ निकलते हैं मेहमां नये-नये ॥
क़ैदे[4] नक़ाब व क़ैद हया व हिजाब व शर्म ।
यूसुफ़ हमारा रखता है ज़िंदा[5] नये-नये ॥
क्या बाग़ कूचे यार[6] है सैर उसकी कीजिये ।
आतश शगूफ़े[7] फूलते हैं यां नये-नये ॥

× × ×

शीशे शराब के रहें आठों पहर खुले ।
इंसाफ़ को हैं दीदये अहले नज़र[9] खुले ।
ऐसा घिरे कि फिर न कभी अब्र तर[8] खुलें ॥
परदा उठा कि परदये शमस व क़मर खुले[10] ॥
हैवां[11] पे आदमी को शरफ़[12] नुत्क़[13] से हुआ ।
शुक्रे ख़ुदा करे जो ज़ुबाने बशर खुले[14] ॥
कट जाये वह ज़ुबां न हो जिससे दुआये ख़ैर[15] ।
फूटे वह आँख जो कि न वक़्ते सहर[16] खुले ॥
कोता[17] है इस क़दर मेरे क़द पर खाये एश[18] ।
ढाँकूं जो पाँव को तो यक़ीं है कि सर खुले ॥

× × ×

(१) कल्पना (२) नये विषय (३) प्रतीक्षा (४) बन्धन (५) क़ैदख़ाना (६) प्रेमिका की गली (७) फूल (८) भीगे बादल (६) देखने वालों की आंखें (१०) चांद सूरज का परदा (११) जानवर (१२) महानता (१३) बोलने की ताक़त (१४) आदमी की ज़बान (१५) प्रार्थना (१६) सुबह के समय (१७) छोटा (१७) सुख की चादर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निगहते गुल[1] से मुझे यार की बू आती है।
ख़ार से याद उलझ पड़ने की ख़ू[2] आती है॥

शर्म मुझको बहुत ए आईना रू[3] आती है।
मेरी सूरत से मगर[4] इश्क़ की बू आती है॥

फ़स्ले गुल बाक़ी है कर लूंगा गरेबां फिर चाक[5]।
आने दो सोज़न[6] अगर बहरे रफ़ू[7] आती है॥

पाक दामानिये माशूक़[8] का सौदा है जिन्हें।
नींद उनको नहीं बे क़ैद वज़ू[9] आती है॥

ख़ूने दिल आँखों में इस तरह से भर जाता है।
जाम में जैसे कि सहबाये सुबू[10] आती है॥

ख़ुश क़िमाशी[11] वह नहीं जामये उरियानी[12] की।
इसमें कब नौबते पैवन्द व रफ़ु[13] आती है॥

यार जाना[14] का ज़रा भेस बदल लें ए मौत।
क़ब्ज़ करने को मेरी रूह जो तू आती है॥

मैं से करता नहीं लबरेज़ इसे तू साक़ी।
क़ालिबे जाम[15] में यह रूह सुबू आती है॥

सुबह तक दीदये तर[16] से नहीं थमते आँसू।
पानी करने को शबे हिज्र[17] लहू आती है॥

× × ×

---

(१) फूल की सुगन्ध (२) आदत (३) सुन्दरी ४) शायद (५) फाड़ना (६) सुई (७) सीने के लिए (८) प्रेमिका की पवित्रता (९) बिना हाथ मुँह धोए (१०) शराब (११) अच्छी चाल चलन (१२) फटे कपड़े (१३) सिलने का मौक़ा (१५) प्रेमिका (१५) शरीर रूपी प्याला (१६) भीगी आँख (१७) विरह की रात।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हज़ार तरह से साबित है वह दहां[1] होता।
कलाम[2] करते हम उससे जो राज़दां[3] होता॥

बुतों के हुस्न से है रम्ज़ हक़[4] अयां[5] होता।
मजाज़[6] पर भी हक़ीक़त[7] का है गुमां[8] होता॥

फ़गां व आह[9] से है सोज़े दिल[10] अयां होता।
दलील आग के होने की है धुंवां होता॥

न पूछ इल्मे मुहब्बत से क्या खुला तुझको।
यक़ीं हुआ वह कि जिसका न था गुमां होता॥

उदास क़ालिबे ख़ाकी[11] में रूह रहती है।
मकां से तंग है मुश्ताक़[12] लामकां[13] होता॥

फ़राग़ हाल[14] है दुश्वार खुशनवाइयों[15] का।
क़फ़स से तंग है बुलबुल का आशियाँ होता॥

ज्याद चश्म से लाज़िम है रोशनी दिल में।
ख़याल यार है इस घर में मेहमां होता॥

गुलों से नालये बुलबुल की वजह क्या पूछूं।
ज़ुबां का दर्द नहीं गोश से बयां होता॥

ख़ुदा के ख्वाने करम[16] से हो सैर[17] जो चाहे।
न मुहर होती है उस पर न है निशां होता॥

× × ×

---

(१) मुँह (२) बात (३) भेद रखने वाला (४) सत्य का भेद (५) प्रकट (६) झूठ (७) सच (८) सन्देह (९) रोना चिल्लाना (१०) हृदय की जलन (११) मिट्टी का शरीर (१२) इच्छुक (२३) जिसका कोई स्थान न हो (१४) चैन से बीतना (१५) गाने वाले (१६) कृपा का भोजन (१७) जी भरना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न्याज़ मन्द[1] न होता तो पूछता हूँ मैं।
यह नाज़ आप जो करते हैं फिर कहाँ होता॥
सदा जरस[2] की है ग़ुंचों के खुलने से आती।
ख़ाना निकहते गुल[3] का है कारवाँ होता॥
बक़द्रे हौसला[4] जो चाहे ले ले दाग़े जुनूँ[5]।
बहारे ग़ुल में यह सौदा नहीं गरां[6] होता॥
यह नागवार तबीयत[7] है न्यामते दुनियाँ।
निवाला[8] हलक़ में अपने है इस्तख्वाँ[9] होता॥
यक़ीं है आबले पड़-पड़ के फूट बहते तो।
बयान हाल जो आतश का ए ज़ुबां होता॥

× × ×

हुस्न से दुनियाँ में दिल को इश्क़ पैदा हो गया।
आके इस बाज़ार में यूसुफ़ का सौदा हो गया॥
सच है जो जैसा करे वैसा ही आ जाता है पेश[10]।
इश्क़ को बदनाम करके हुस्न रुसवा हो गया॥
फ़िल हक़ीक़त[11] आईना को रोशन करता है ग़ुबार[12]।
ख़ाकसारी[13] से हमारा दिल मुसफ़्फ़ा[14] हो गया॥

× × ×

---

(१) प्रेमी (२) घंटे की आवाज़ (३) फ़ूल की सुगन्ध (४) हौसले के अनुसार (५) पागल पन का दाग़ (६) मंहगा (७) मन को न भाने वाली (८) भोजन का टुकड़ा (९) हड्डी (१०) सामने (११) वास्तव में (१२) धूल (१३) नम्रता (१४) साफ़।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इश्क़ का आईनये दिल को है जौहर[१] मिलता।
तन को सौदे के लिए यार के है सर मिलता !!

वहशते दिल[२] जो कभी सहरा को ले जाती है।
हर बगोला है गले से मेरे उठकर मिलता॥

वाह री पस्त व बलन्द रहे उल्फ़त[३] उसमें।
कोई तख़्ता जो ज़मीं का हो बराबर मिलता॥

दिल बहुत सीना में बेताब है इस पर रखते।
सब्र से भी कोई भारी सा जो पत्थर मिलता॥

वहशते दिल का तक़ाजा[४] है निकल चलने का।
तंग[५] हूँ गुंबदे गर्दूं[६] का नहीं दर[७] मिलता॥

धज्जियाँ खूब हीं लेता मैं बहारे गुल में।
मुझको आतश जो गरेबाने रफ़ूगर[८] मिलता॥

× × ×

ख़ुदा ने बर्क़ तजल्ली[९] तुझे जमाल[१०] दिया।
हमारी आँखों को दीदार का ख़याल दिया॥

किसी को मुल्क दिया है किसी को माल दिया।
फ़क़ीर हूँ मुझे अल्लाह ने है हाल[११] दिया॥

लबों तक आई हुई बात पी गये सौ बार।
ज़ुबां को दिल ने न इज़्ने बयान हाल[१२] दिया॥

× × ×

---

(१) चमक (२) हृदय का पागलपन (३) प्रेम की राह (४) मांग (५) परेशान (६) आकाश (७) दरवाज़ा (८) सीने वालों के कपड़े (९) चमकदार बिजली (१०) सौंदर्य (११) मस्ती (१२) हाल कहने की आज्ञा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चखा के ख्वान[1] का अपने नमक तवक्कुल[2] ने।
ज़ुबां को मज़ये लुक़मये हलाल[3] दिया॥
सरूरे यार[4] से हासिल हुआ सरूर तुझे।
मलाले दोस्त[5] ने दिल को मेरे मलाल दिया॥
शबे विसाल में उस चेहरये मुनव्वर[6] से।
हटा के ज़ुल्फ़ को आतश बला को टाल दिया॥

× × ×

ग़ज़ल जो हमसे वह महबूब नुक्ता दां[7] सुनता।
ज़मीने शेर[8] का अफ़साना आसमां सुनता॥
फ़िराक़ रंज[9] से है बाद मर्ग[10] भी दुश्वार।
ज़मीं के नीचे भी हूँ मैं तो आसमां सुनता॥
ज़बान कौन सी मशग़ूल ज़िक्रे ख़ैर[11] नहीं।
कहाँ-कहाँ नहीं मैं तेरी दास्तां[12] सुनता॥
कुछ एहतियाज[13] नहीं मुझको हर्ज़ बाज़ू[14] की।
अजल[15] को अपनी हूँ अपना निगाहबां[16] सुनता॥
यह चल रही है हवा बाग़े दहर में कैसी।
न गुल सा रुख़[17] न तो गुंचा सा हूँ दहां[18] सुनता॥

× × ×

(१) भोजन (२) भरोसा (३) ईमानदारी का भोजन (४) प्रेमिका का नशा (५) मित्र का दुःख (६) चमकदार मुख (७) बुद्धिमान (८) कविता की पृष्ठ भूमि (९) विरह का दुख (१०) मरने के बाद (११) तेरी चर्चा में व्यस्त (१२) कहानी (१३) आवश्यकता (१४) ताक़त (१५) मौत (१६) रक्षक (१७) चेहरा (१८) मुँह।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख़राब फिरते थे आलम में दिल को भूले हुए।
मकान यार की दीवार दरमियां निकला॥

वह .ज़ुल्फ़ हो गई .जंजीर अपने सौदे को।
कहां से जाके है यह सिलसिला कहां निकला॥

शबाब खो के गई जान रंज पीरी[1] से।
बहार लूट के गुलशन से बाग़बां निकला॥

दिखाई देती हैं आंखों को सूरतें हर सू[2]।
यह गुंबदे फ़लक[3] आईना का मकां निकला॥

मुक़ाम शुक्र[4] है दे आस्मां जो ख़रक़ये फ़क्र[5]।
कफ़न पहन के है इस घर से मेहमां निकला॥

करेगा क्या कोई दुनियां में सरकशी[6] आतश।
यह वह मुक़ाम है झुक कर है आसमां निकला॥

× × ×

तू रोशनीये आलमे ईजाद[7] हो गया।
वीराना तेरे जलवे से आबाद हो गया॥

अल्लाह के सिवा न किसी ने कभी सुना।
नाला मेरा ग़रीब की फ़रियाद हो गया॥

---

(१) बुढ़ापे का दुःख (२) चारों ओर (३) आसमान (४) धन्यवाद देने की बात (५) फकीरों के कपड़े (६) अत्याचार (७) संसार में रोशनी करने वाला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खुरशीद[1] से ज़्यादा हुई उसमें रोशनी।
जो ज़र्रा तेरी राह में बर्बाद हो गया॥

तहसील इल्मे रूह[2] की शायक़[3] हुई जो रूह।
शागिर्द करके मुझको दिल उस्ताद हो गया॥

× × ×

सामने जो पड़ गया दीवानये बेबाक[4] था।
फाड़ कर आंखें जिसे देखा गरेबां चाक[5] था॥
दीदये आरिफ़[6] से जब देखा तो यह रोशन[7] हुआ।
मज़हरे नूरे इलाही[8] हुस्ने मुश्ते ख़ाक[9] था॥
चश्में नामुहरम[10] को बर्क़े हुस्न[11] कर देती थी बन्द।
दामने असमत[12] तेरा आलूदगी[13] से पाक[14] था॥
कर गई जब रूह मर्ज़ा[15] की तरफ़ अपने रूजू[16]।
ख़ाक में वह मिलगया जो जिस्म आतश ख़ाक था॥

× × ×

इश्क़ के सौदे से पहले दर्द सर[17] कोई न था।
दाग़े दिल ख़ंदांज़न[18] ज़ख़्मो जिगर कोई न था॥
मेरे नालों ने जो शब की थी क़यामत आशकार[19]।
जागता था फ़ितना[20] जो था बेख़बर कोई न था॥

(१) सूर्य (२) ज्ञान का प्राप्त करना (३) इच्छुक (४) निडर प्रेमी (५) फटे कपड़े (६) दार्शनिक की आंख (७) प्रकट (८) ईश्वरीय प्रकाश प्रकट करने वाला (९) मानवीय सौंदर्य (१०) अज्ञानी की आंख (११) सौंदर्य की बिजली (१२) इज्ज़त (१३) बुराइयां (१४) पवित्र (१५) केंद्र (१६) घूमना (१७) परेशानी (१८) हंसते हुए दिल के दाग़ (१९) प्रकट (२०) बुराई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोस्त दुश्मन यार रखता ख़ातिर[१] अपनी क्या अज़ीज़[२] ।
ऐब उल्फ़त के सिवा हम में हुनर कोई न था ॥

अहदे पीरी[३] में जवानी थी न उसके वलवले[४] ।
महफ़िले शब[५] में से हंगामे सहर[६] कोई न था ॥

ले चले हस्ती से दाग़े इश्क़ आतश शुक्र है ।
मंज़िले मुल्के अदम का हम सफ़र[७] कोई न था ॥

× × ×

इक साल में दस दिन भी जिसे ग़म नहीं होता ।
वह शहर है जिसमें कि मुहर्रम नहीं होता ॥

इक जाम में खुलता है तिलिस्मात जहां[८] का ।
मस्ती में किसे मरतबये जम[९] नहीं होता ॥

पैदा करे गो[१०] मोम की वह जिस्म गुदाज़ी[११] ।
ज़ख़्मे दिले अहबाब[१२] का मरहम नहीं होता ॥

अफ़सोस है इंसान न हो इल्म का जोया[१३] ।
वह माल है यह सर्फ़[१४] से जो कम नहीं होता ॥

उस बाग़ के नाज़िर[१५] निगहे पाक[१६] से हैं हम ।
गुल जिसमें कि आलूदये शबनम[१७] नहीं होता ॥

साबित क़दम फ़क़र[१८] को है नफ़्स कुशी[१९] शर्त ।
बे देव के मारे हुए रुस्तम नहीं होता ॥

---

(१) अपने मन में (२) प्रिय (३) बुढ़ापा (४) जोश (५) रात की बैठक (६) प्रातःकाल के समय (७) साथी (८) संसार का जादू (९) जमशेद बादशाह के बराबर (१०) यद्यपि (११) शरीर पिघलाना (१२) मित्रों के हृदय का घाव (१३) ढूढ़ने वाला (१४) ख़र्च (१५) देखने वाला (१६) पवित्र दृष्टि (१७) ओस में सना हुआ (१८) सच्चा साधु (१९) इच्छाओं का दमन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह नुक्ता[१] हमारा है सख़ुन चीं[२] को नसीहत।
इल्ज़ाम[३] जो देता नहीं मुल्ज़िम[४] नहीं होता॥
ता चंद[५] बहार आती नहीं देखिये आतश
कब तक शर्फ़ नय्यरे आज़म[६] नहीं होता॥

× × ×

वस्फ़ कीजे जो तेरी क़ामत[८] का।
कहिये उसको अलिफ़ क़यामत[९] का॥
मर्द मैदां[१०] का हाल क्या जाने।
राह रू कूचये सलामत[११] का॥
हुस्न से इश्क़ है हमें अज़ली[१२]।
हम भी दम भरते हैं क़दामत[१३] का॥
वाह री आशिकों की दिलजूई[१४]।
किसी से वादा नहीं क़यामत का॥
घर बनाते अगर यक़ीं होता।
इस ख़राबा में इस्तक़ामत[१५] का॥

× × ×

तेरी जो याद ए दिल ख़्वाह[१६] भूला।
वल्लाह[१७] भूला वल्लाह[१८] भूला॥

---

(१) सिद्धांत (२) तार्किक (३) दोष (४) अपराधी (५) कब तक (६) सूरज का सौभाग्य (७) गुणगान करना (८) ऊँचाई (९) प्रलय का आरम्भ (१०) बहादुर (११) सुरक्षा की राह में चलने वाले (१२) आरम्भ से (१३) प्राचीनता (१४) दिला सा (१५) मज़बूती (१६) मन को पसन्द आने वाला (१७) ईश्वर की सौगंध (१८) या ईश्वर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख़ूर[1] ने गिराया उसको नज़र से।
जो ज़र्रा तेरी दरगाह भूला॥
देखे से तेरा रूये मुनव्वर[2]।
हम[3] महर भूला हम माह भूला॥
शर्त वफ़ा की किस बेवफ़ा से।
आतश सा आरिफ़ आगाह[3] भूला॥

× × ×

न तो भूखे हुए थे हम न तो प्यासे पैदा।
हो गये रोग यह दुनियां की हवा से पैदा॥
चाहिये अश्क भी हों नाला के पीछे पीछे।
आमदे क़ाफ़ला[4] है बांगे दरा[5] से पैदा॥
पा बरहना[6] सर उरियां[7] व तन गर्द आलूद[8]।
है करामाते गदा[9] हाले गदा[10] से पैदा॥
हुस्ने बुत[11] से जो बनी जान पे अपनी तो खुला।
हाल होता है यही इश्क़े ख़ुदा[12] से पैदा॥
बन्दा आलम[13] नहीं हो सकने का बेदिल जूई[14]।
बुते गुमराह[15] करें राह[16] ख़ुदा से पैदा॥

× × ×

(१) सूर्य (२) चमकता मुँह (३) ज्ञानी (४) कारवां का आगमन (५) आवाज़ (६) नंगा (८) मिट्टी में लिपटा हुआ शरीर (९) फ़क़ीर के काम (१०) फ़क़ीर का हाल (११) प्रेमिका का सौंदर्य (१२) ईश्वर का प्रेम (१३) संसार का प्रिय (१४) दिल को आराम पहुँचाना (१५) अज्ञानी प्रेमिका (१६) प्रेम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लबे शीरीं[1] तक उनके आई बात।
बन गई क़ंद[2] की मिठाई बात॥

दहने यार[3] में न आई बात।
शायरों ने बहुत बनाई बात॥
खेल ज़ुल्फ़ों को है उलझ पड़ना।
उनकी आंखों को है लड़ाई बात॥

दर्दे दिल कहने में है क्या पस व पेश[4]।
कही जाती है मुंह तक आई बात॥
यह सदा[5] आती है ख़मोशी से।
मुंह से निकली हुई पराई बात॥

× × ×

एक से एक है तमाशा रंग।
दीदनी[6] है जहान रंगा रंग[7]॥
सामने तेरे रूये रङ्गी के।
लाला व गुल ने भी न पकड़ा रङ्ग॥
आँखें हैं और ज़ुल्फ़े यार का ध्यान।
कुछ न कुछ लायगा यह सौदा[7] रङ्ग॥
हुस्न ने गेसुओं को तेरे दिया।
मुश्क की बू[8] के साथ काला रङ्ग॥

(१) मीठे होंठ (२) शक्कर (३) प्रेमिका का मुँह (४) हिचक (५) आवाज (६) देखने योग्य (७) पागलपन (८) कस्तूरी की सुगंध।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़िक्र रङ्गी[1] ने तेरी एक आतश।
कैसे कैसे किये हैं पैदा रङ्ग॥

× × ×

मुहब्बत कौड़ियों के हो अगर मोल।
बनी आदम[2] न ले यह दर्द सर मोल॥
अजब दौलत है यह एहसान इससे।
बशर[3] को भी ले लेता है बशर मोल॥
यह हुस्ने यार ने क़ीमत बढ़ाई।
न था यूसुफ़ का वरना इस क़दर मोल॥
पसन्द दिल हुआ है हुस्न सूरत।
फ़लक बेचे तो ले लें शम्स व क़मर[4] मोल॥
भरोसा ज़िंदगानी का नहीं कुछ।
कफ़न ले रख ए आतश बशर मोल॥

× × ×

आरज़ू है मुझे सिजदे सहर व शाम करें।
हमा तन[5] होके ज़ुबां दर्द तेरा नाम करें॥
गिरियये शादिये मीना[6] से है ज़ाहिर होता।
हाल पर सूफ़ियों[7] के ख़ंदाज़नी[8] जाम करें॥

(१) कल्पना (२) मनुष्य (३) इंसान (४) चांद सूरज (५) सम्पूर्ण शरीर (६) बोतल की ख़ुशी (७) दार्शनिक (८) हंसी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मस्त रखती है तेरी गरदिशे चश्म[१] ए साक़ी ।
वह नहीं हम कि जो तुझ से तलब जाम करें[२] ॥

मेरे मातम में वह कपड़े न सियह फ़ाम[३] करें ।
.खुद भी रूसवा[४] न हो मुझको भी न बदनाम करें ॥

बैठ कर गोशये अज़लत[५] में न बोल इतना झूठ ।
क़स्द[६] फट पड़ने का आतश न दर व बाम करें ॥

× × ×

हम फ़क़ीरों को है दीवार का साया काफ़ी ।
.खुश रहें वह जो कि ख़स ख़ाना[७] में आराम करें ॥

गाह बे गाह[८] तो दीदार के भूखे भी हों सैर[९] ।
कोई तो राहे .खुदा[१०] का भी यह बुत काम करें ॥

हम तो कहते हैं वह होगा जो .खुदा ने चाहा ।
वह भी सुनते हैं मुनजम[११] जो कुछ अहकाम[१२] करें ॥

बाग़बां ख़ैरे चमन[१३] का भी कोई काम करें ।
सरो .कुमरी[१४] को अनादिल[१५] को गुल इनाम करें ॥

यही ए काबये मक़सूद[१६] तमन्ना है हमें ।
सिजदये शुक्र[१७] तेरी राह में हर गाम[१८] करें ॥

× × ×

(१) आंख की चंचलता (२) शराब मांगें (३) काला (४) बदाम (५) एकांत (६) इरादा (७) खस का घर (८) कभी-कभी (९) संतुष्ट (१०) ईश्वर की राह में (११) ज्योतिषी (१२) आज्ञा (१३) बाग़ के हित में (१४) सरो का पेड़ क़ुमरी पक्षी (१५) बुलबुल (१६) इष्ट स्थान (१७) धन्यवाद देना (१८) हर पग पर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहारे लाला व गुल से लगी है आग गुलशन में।
गरेबां फाड़ के चल बैठिये सेहरा[1] के दामन में॥

खिज़ां में बुलबुलों से रखिये बहसे नाला[2] गुलशन में।
शिराकत[3] :कीजिये मातमज़दों[4] की चलके शवन[5] में॥

यह सौदाये शहादत[6] है हमारे सर को ए कातिल।
तेरी तलवार का दम भरती है[7] जो रग[8] है गरदन में॥

जुबान व चश्म का उस गुल के धोखा खा चुके आशिक़।
न बीनाई[9] है नरगिस[10] में न गोयायी[11] है सोसन[12] में॥

तरीक़े इश्क़[13] में आतश क़दम मुझसा न गुज़रेगा।
गरेबां में बुझी है जब लगी है आग दामन में॥

अज़ाबे गोर[14] का वां सामना यां रंज दुनिया का।
न घर में चैन ज़िंदों को न मुर्दों को है मदफ़न[15] में॥

× × ×

रहा करता है दर्द इक रात दिन बे यार पहलू में।
दिले नालां हुआ है ख़ानये बीमार[16] पहलू में॥

तपे हिज्रां[17] की गरमी दूर ही से फुंके देती है।
ठहर सकता नहीं दम भर कोई ग़मख्वार[18] पहलू में॥

अजब[19] क्या है ख़ते नौरस[20] का गिर्द उस रूये रंगीं के।
वह गुल है कौनसा रखता नहीं जो ख़ार पहलू में॥

---

(१) जंगल (२) रोने पर बहस (३) भाग लीजिये (४) दुखियों (५) दुख का स्थान (६) मरने की इच्छा (७) प्रशंसा करती है (८) नस (९) देखने की शक्ति (१०) आँख जैसा फूल (११) बोलने की शक्ति (१२) जुबान जैसी घास (१३) प्रेम का ढंग (१४) क़ब्र की तकलीफ़ (१५) क़ब्र (१६) बीमारों का घर (१७) विरह की गरमी (१८) सहानुभूति (१९) आश्चर्य (२०) नया उगा बाल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुआएँ मांग कर अल्लाह से तुझको जगाया है।
सुला दे यार को ए तालये बेदार[१] पहलू में॥
परी सी शक्ल उन्होंने आयना में जब से देखी है।
लगाये रखते हैं दीवाने भी दो चार पहलू में॥
उड़ा देता है बेताबिये दिल[२] से ताकियये पहलू[३]।
फ़िराक़े यार[४] बन बैठा है क्या मुख़्तार[५] पहलू में॥

× × ×

ख़ुरशीद हश्र से है सीना का दाग़ रोशन।
अंधेर है जो कहिये इसको चिराग़े रोशन॥
बुलबुल हज़ारहा[६] है जब तक बहार गुल है।
परवाने भी हैं हाजिर ता[७] है चिराग़ रोशन॥
परवाने बन के मज़मूं आते हैं अर्श[८] पर से।
रहती है शमा फ़िक्रे आली दिमाग़[९] रोशन॥
मरने से अपने पहले जी भर गये हैं उनको।
क़ैदे हयात[१०] में है हाले फ़राग़[११] रोशन॥
आतश के इस्तख़्वां[१२] को खाया तो देख लेना।
मशाल की तरह होगी मिनक़ारे ज़ाग़[१३] रोशन[१४]॥

× × ×

(१) जागता हुआ भाग्य (२) हृदय की बेचैनी (३) बग़ल की तकिया (४) प्रेमिका का विरह (५) स्वतंत्र (६) हज़ारों (७) जब तक (८) आकाश (९) ऊंची बुद्धि की कल्पना (१०) जीवन का बंधन (११) फ़ुर्सत का हाल (१२) हड्डी (१३) कौवे की चोंच (१४) प्रकट, चमकदार।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रुख़[1] हो ख़ते रुख़सार[2] से क्या काम है हमको।
गुल से है ग़रज़[3] ख़ार से क्या काम है हमको ॥
गुलज़ार तेरा तुझको मुबारक रहे बुलबुल।
बुलबुल तेरे गुलज़ार से क्या काम है हमको ॥
दीवाने हैं सहराये जुनूं ख़ेज़[4] महल है।
बाम व दर व दीवार से क्या काम है हमको ॥
ख़्वाहां[5] से तेरे इश्क़ है ए ग़ैरते यूसुफ़[6]।
यूसुफ़ की ख़रीदारी से क्या काम है हमको ॥
जब जोशे जुनं ने हमें घर ही से निकाला।
फिर सायये दीवार से क्या काम है हमको ॥
मरता हूँ जो कहता हूँ तो कहते हैं वह हंसकर।
ईसा नहीं बीमार से क्या काम है हमको ॥

× × ×

हसरते शादी[7] नहीं जाने ग़म आलूद[8] को।
लाला समझता है दिल दाग़े नमक सूद[9] को ॥
दाग़े ग़मे इश्क़ को दिल में जगह दीजिये।
ढूढ़िये लेकर चिराग़ शाहिदे मक़सूद[10] को ॥

× × ×

---

(१) मुख (२) गालों के बाल (३) मतलब (४) पागल बनाने वाला जंगल (५) चाहने वाला (६) यूसुफ़ की लज्जा (७) ख़ुशी की इच्छा (८) दुख से भरी (९) नमक से भरे हुए (१०) मन चाही प्रेमिका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुल की क़बा[१] व लाले की दस्तार[२] ले चले ।
उरियाँ कफ़न[३] वह लाये जो बे यार ले चले ॥

सर में हवाये कूचये दिलदार[४] ले चले ।
वालो जहाँ[५] से हसरते गुलज़ार[६] ले चले ॥

करते हैं ग़ैर चश्म क़वीमार[७] से सवाल[८] ।
यूसुफ़ मिला तो कूद के बाज़ार ले चले ॥

सौदा बना न यार के हुस्न व जमाल का ।
दम [illegible] न का [illegible] बेमार ले चले ॥

बोली वह लब जो के [illegible][९] जिस्म का ।
मानी है गोल कौन वह बेमार ले चले ॥

आ जायें जोश पर तो अभी [illegible] [illegible][१०] हैं ।
सैलाब[११] अश्क तोड़ के दीवार ले चले ॥

मैके शराब[१२] ने दो जहाँ का है गम ग़लत ।
बहरैन[१३] से वह कश्तियें बहर[१४] पार ले चले ॥

ऐसी रसाई[१५] कीजिये पैदा कि [illegible] का ।
खिलवत[१६] से अंजुमन[१७] में हमें यार ले चले ॥

[illegible] फ़िराक़ व हसरते दीदार व [illegible] [illegible] ।
दुनिया से हम यह आयसते कार[१८] ले चले ॥

x x x

(१) फूल की पोशाक (२) लाल फूल की पगड़ी (३) नंगा शरीर [illegible] (४) प्रेमिका के गली की इच्छा (५) संसार (६) बाग़ की इच्छा (७) [illegible] ढके वाले की दृष्टि (८) [illegible] (९) [illegible] (१०) प्रेमिका का [illegible] (११) बाढ़ (१२) शराब का नशा (१३) दोनों संसार (१४) [illegible] नाव (१५) पहुँच (१६) एकान्त (१७) [illegible] (१८) [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परदये ग़फ़लत[1] उठा पेशे नज़र यार है।
दैर व हरम[2] में न जा ढूढ़ने मौजूद को॥
सिजदा[3] के इनकार से फ़ौक़[4] न हो जायगा।
ख़ाकी मक़बूल[5] पर नारी मरदूद[6] को॥
सुबह थी शेब हिज्र की नाला किया जिस घड़ी।
एक शरारा[7] है बस तोदये बारूद[8] को॥
सीनये वे मारफ़त[9] हल्क़ा में अपने नहीं।
रह[10] नहीं इस बज़्म में मुजरिमे बेऊद[11] को॥
साहेब इक़बाल[21] को ख़ूब है पहचानता।
आँख ख़ुदा ने है दी कोकिबे मसूद[13] को॥
झाड़ दिये मग्ज़[14] से किब्र[15] के कीड़े जो थे।
ख़ाक बराबर किया पिश्शे[16] ने नमरूद[17] को॥
हिज्र की ईज़ा[18] से छुट दिल को जला बहरे वस्ल[19]।
दाग़ के अच्छा कर ज़ख्मे नमक सूद को।
राह की आफ़त[20] का कीजिये आतश बयां।
सामने आने तो दे मंज़िले मक़सूद को॥

× × ×

(१) बेखुधी का परदा (२) मस्जिद मन्दिर (३) सर झुकाना (४) ऊंचा (५) लोकप्रिय मिट्टी पूजने वाला (६) आग पूजने वाला दुष्ट (७) चिनगारी (८) बारूद का ढेर (६) बिना भक्ति का (१०) रास्ता (११) बिना सुगन्ध की (१२) प्रतापी व्यक्ति (१३) भाग्य का सितारा (१४) मस्तिष्क (१५) बड़प्पन (१६) मच्छर (१७) एक दुष्ट राजा (१८) तकलीफ़ (१६) मिलन के लिए (२०) कष्ट।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुल की क़बा[१] न लाले की दस्तार[२] ले चले।
उरियाँ वदन[३] वह लाये जो थे ख़ार ले चले॥

सर में हवाये कूचये दिलदार[४] ले चले।
बाग़े जहाँ[५] से हसरते गुलजार[६] ले चले॥

करते हैं सैर चश्म ख़रीदार[७] से मदाम[८]।
यूसुफ़ मिला तो लूट के बाज़ार ले चले॥

सौदा बना न यार के हुस्न व जमाल का।
उस लाला रू का दाग़ ख़रीदार ले चले॥

बोली यह रूह फेंक के पुश्तारा[९] जिस्म का।
भारी है बोझ कौन यह बेगार ले चले॥

आ जाये जोश पर तो अभी क़स्र यार[१०] में।
सैलाब[११] अश्क तोड़ के दीवार ले चले॥

कैफ़े शराब[१२] से दो जहाँ का हो ग़म ग़लत।
बहरैन[१३] से यह कशितये मय[१४] पार ले चले॥

ऐसी रसाई[१५] कीजिये पैदा कि खींच कर।
ख़िलवत[१६] से अंजुमन[१७] में हमें यार ले चले॥

दाग़े फ़िराक़ व हसरते दीदार :व शौक़े वस्ल।
दुनिया से हम यह आक़बते कार[१८] ले चले॥

× × ×

(१) फूल की पोशाक (२) लाल फूल की पगड़ी (३) नंगा शरीर (४) प्रेमिका के गली की इच्छा (५) संसार (६) बाग़ की इच्छा (७) ख़रीदने वाले की दृष्टि (८) हमेशा (९) बोझ (१०) प्रेमिका का महल (११) बाढ़ (१२) शराब का नशा (१३) दोनों संसार (१४) शराब रूपी नाव (१५) पहुँच (१६) एकान्त (१७) महफिल (१८) परिणाम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हम चश्म तर[1] को सामने करते हैं 'अब्र[2] के।
तुम हंस पड़ो तो बर्क़[3] का क़िस्सा तमाम है॥

बेमानी[4] है वह इश्क़ कि जिसमे कशिश[5] नहीं।
दिलचस्प हो न हुस्न तो सूरत हराम[6] है॥

इक दिन हुजूरे क़ल्ब[7] से होती नहीं अदा।
ज़ाहिद तेरी नमाज़ को मेरा सलाम है॥

बुतख़ाना[8] खोद डालिये मस्जिद को ढ़ाइये।
दिल को न तोड़िये यह .खुदा का मुक़ाम है॥

आतश बुरा न मानियो हक़ हक़[9] जो पूछिये।
शायर हैं हम दरोग़[10] हमारा कलाम है॥

× × ×

फ़र्शे गुल[11] बुलबुल की नीयत से बिछाया चाहिये।
शमा परवानों की ख़ातिर से जलाया चाहिये॥

इश्क़ में हद्दे अदब[12] से आगे रखता है क़दम।
शाख़े गुलबन[13] पर से बुलबुल को उड़ाया चाहिये॥

हो गया है एक मुद्दत से दिले नालां[14] ख़मोश।
बाग़ में चल कर उसे बुलबुल सुनाया चाहिये॥

.खुम[14] में जोशे मय[16] से मुझको यह सदा[17] है आ रही।
ज़र्फ़ मस्ती[18] हो तो कैफ़ियत[19] उठाया चाहिये॥

---

(१) भीगी आँख (२) बादल (३) बिजली (४) बिना अर्थ (५) खिंचाव (६) ख़राब सूरत वाला (७) हृदय से (८) मंदिर (६) सच-सच (१०) झूठ (११) फूलों का बिछौना (१२) शिष्टाचार से बाहर (१३) फूल की डाल (१४) रोता हुआ हृदय (१५) मटका (१६) शराब का नशा (१७) आवाज़ (१८) मस्ती की योग्यता (१६) नशा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख़ातिरे आतिश[1] से कहिये चंद जुज़ शेर[2] और भी।
बे निशां का नाम बाक़ी छोड़ जाया चाहिये॥

× × ×

दिल बहुत तंग रहा करता है।
रङ्ग बे रङ्ग रहा करता है॥
सुलह की दिल से हैं यां मसलहतें[3]।
वां सरे जंग[4] रहा करता है॥
आरसी[5] आर[6] है मुफ़ मजनूं को।
नंग[7] से नंग[8] रहा करता है॥
मंज़िले गोर के दीवानों के।
सीना पर संग[9] रहा करता है॥
तेरे गोश शुनवा[10] का मुश्ताक़।
हर ख़ुश आहंग[11] रहा करता है॥
बंदिशे चुस्त[12] से तेरी आतश।
क़ाफ़िया[13] तंग रहा करता है॥

× × ×

ज़ख़्मे दिल से तेरी फ़ुरक़त[14] में जिगर में दाग़ है।
एक घर में गुल मुहब्बत[15] एक घर में दाग़ है॥

(१) आतश कवि के मन से (२) कुछ थोड़े से शैर (३) नीति (४) लड़ाई को तैयार (५) एक जेवर (६) लज्जा (७) नंगा (८) शर्म (९) पत्थर (१०) सुनने वाले कान (११) अच्छा गाने वाला (१२) अच्छी कविता (१३) कविता का अंतिम शब्द (१४) विरह (१५) प्रेम का फ़ूल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इश्क़ की दिल सोज़ियों[1] से बहर व बर[2] में दाग़ है।
यह वह आतश है कि जिससे ख़ुश्क़ व तर में दाग़ है॥
नाकसों[3] से अहले इज्ज़त[4] को है लाज़िम एहतराज़[5]।
मेल तांबे का हुआ जिस सीम व ज़र[6] में दाग़ है॥
इशतियाक़े गोर[7] में देती है ईज़ा[8] तूले उम्र[9]।
मंज़िले मक़सूद की दूरी सफ़र में दाग़ है॥
वां तलाश ईज़ा है देती और यां शौक़े विसाल।
जख्म बाहर अपनी क़िस्मत का हैं घर में दाग़ है॥
नागवार[10] अपने सिवा है यार दिल क़ो दख़्ल ग़ैर[11]।
साया का भी साथ तेरे रह गुज़र[12] में दाग़ है॥
ऐब शायर को लगा देता है आतश नुक़्से शैर[13]।
दाग़ जब फल में लगा ऐने शजर[14] में दाग़ है॥

× × ×

चमनिस्तां[15] की गई नशो नुमा[16] फिरती है।
रूत बदलती है कोई दिन में हवा फिरती है।
ख़ाल मुश्कीं[17] कोतेरे करते हैं फ़ितने[18] सिजदे[19]।
अंबरी गेसुओं[20] के गिर्द बला[21] फिरती है॥
ख़ाक छनवा रही है कूचये क़ातिल की तलाश।
साथ साथ अपने खराब अपनी क़ज़ा[22] फिरती है॥

(१) दिल जलाना (२) जल व स्थल (३) दुर्जन :(४) प्रतिष्ठित वर्ग (५) परहेज आवश्यक है (६) चांदी सोना (७) क़ब्र की इच्छा (८) तकलीफ़ (९) लम्बी उम्र (१०) नापसन्द (११) दूसरे का बीच में आना (१२) रास्ता (१३) कविता का दुर्गुण (१४) मुख्य पेड़ (१५) बाग़ (१६) बढ़ना (१७) सुन्दर तिल (१८) झगड़े मुसीबतें (१९) झुकाना (२०) सुगंधित बाल (२१) मुसीबत (२२) मौत।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नशा मय[1] ने नक़ाबे रूख़े ज़ेबा[2] उल्टा।
ठोकरें खाती उन आँखों की हया फिरती है॥

क़त्ल किस-किसको करे देखिये हंगामें फ़िराक़[3]।
यह क़दम से जो लगी उनके हिना[4] फिरती है॥

पाँव तक यार के पहुँचेगो लटक कर सर से।
फेरने से कोई वह ज़ुल्फ़े रसा[5] फिरती है॥

अपने जामा से हूँ मैं मैकशे मुफ़लिस[6] बाहर।
रहन[7] होती हुई दस्तार व क़बा[8] फिरती है॥

× × ×

जबीं साई[9] को संगे आस्ताने यार[10] बेहतर है।
कमर तकिया[11] को क़सरे दोस्त[12] की दीवार बेहतर है।

निगाहें मर्दुमे दीदा[13] को हर दम यह समझाती हैं।
मिले लूटे से जितनी दौलते दीदार बेहतर है॥

बहारे बे ख़िज़ां ऐसी नहीं कोई चमन रखता।
ख़ुदा जो फ़िक्र रंगीं दे तो यह गुलज़ार बेहतर है॥
अतब्बा[14] देख कर बीमार को तेरे यह कहते हैं।
बहम[15] पहुँचे जो उसको शरबते दीदार बेहतर है॥

× × ×

---

(१) शराब का नशा (२) सुन्दर मुँह का परदा (३) विरह के समय (४) मेंहदी (५) लम्बे बाल (६) ग़रीब शराबी (७) गिरवी (८) पगड़ी पोशाक (६) माथा रगड़ना (१०) प्रेमिका के घर का चौखट (११) सहारा (१२) प्रेमिका का घर (१३) आंख की पुतलियां (१४) चिकित्सक (१५) मिले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनाबे लब[१] का अपने मज़ा कुछ न पूछिये।
किस दर्द के हैं आप दवा कुछ न पूछिये॥
रंगी किये हैं यार ने जैसे कि दस्त व पा[२]।
क्या रंग ला रही है हिना कुछ न पूछिये॥
नाज़[३] व नमाज़[४] आशिक़ व माशूक़ क्या कहूँ।
इज्ज़[५] व ग़रूर[६] शाह व गदा[७] कुछ न पूछिये॥
ना गुल्फ़नी[८] है इश्क़े बुताँ[९] का मुआमला।
हर हाल में है शुक्र ख़ुदा कुछ न पूछिये॥
आतश गुनाहे इश्क़ की ताज़ीर[१०] क्या कहूँ।
मुशफ़िक[११] जो कुछ है उसकी सज़ा कुछ न पूछिये॥

× × ×

दो दिन की ज़िन्दगी में रहे हम मरे हुए।
जोशे जुनूं[१२] ने ज़र्द[१३] किया जब हरे हुए॥
नाक़ौस[१४] में से आई सदाये हूअलग़फ़ूर[१५]।
हम बुतकदे[१६] गये जो ख़ुदा से डरे हुए॥
बादे फ़ना[१७] भी इश्क़ का आतश असर रहा।
तुरबत[१८] से अपनी बेद मुअल्ला[१९] हरे हुए॥

× × ×

(१) होठों का शरबत (२) हाथ पैर (३) नख़रे (४) नम्रता (५) नम्रता (६) घमन्ड (७) फ़कीर (७) न कहने योग्य (९) सुन्दरियों का प्रेम (१०) सज़ा (११) प्रिय (१२) पागलपन (१३) पीला (१४) शंख ध्वनि (१५) या ईश्वर की आवाज (१६) मन्दिर (१७) मरने के बाद (१८) क़ब्र (१९) एक पेड़ का नाम।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहार आई मुरादे चमन[1] ख़ुदा ने दी।
शिगुफ़्ता गुंचा[2] हुये बूये गुल सबा ने दी॥
कफ़न की फ़िक्र हमारे लिये भी वाजिब[3] है।
नक़ाब की जो तुम्हें मशविरत[4] हया ने दी॥
दमे अख़ीर[5] तसव्वर[6] बंधा तेरे रूख़[7] का।
तरफ़ को काबा की करवट मुझे क़ज़ा ने दी॥
जहाँ[8] से हसरते मंज़िल का दाग़ लेके गया।
तुम्हारी राह में जान एक शिकस्ता पाने[9] दी॥
रहे अदम[10] में सब आवाज़ अपनी भूल गये।
सदा[11] न क़ाफ़लये अश्क में दरा ने दी॥
मरीज़े इश्क़ को है मर्ग[12] ज़ीस्त[13] से औला[14]।
गले को काटिये सेहत[15] अगर दवा ने दी।
अज़ीज़ दाग़े मुहब्बत को रखते हो आतश॥
निशानी अपनी है किस लाला गूं क़बा[16] ने दी।

× × ×

तंग आकर जिस्म को ए रूह छोड़ा चाहिये।
तिफ़्ल तबओं[17] के लिये मिट्टी का घोड़ा चाहिये॥
बादये गुलगूं[18] के शीशे का हूँ सायल[19] साक़िया।
साथ कैफ़ियत[20] के उड़ता मुझको घोड़ा चाहिये॥

× ×

(२) बाग़ की इच्छा (२) कलियों का खिलना (३) ठीक (४) राय (५) अन्तिम समय (६) कल्पना (७) चेहरा (८) संसार (९) टूटे पैर वाला (१०) परलोक की राह (११) आवाज (१२) मौत (१३) जीवन (१४) अच्छी (१५) स्वास्थ्य (१६) लाला के रङ्ग की पोशाक (१७) लड़कपन के स्वभाव वाले (१८) लाल शराब (१९) मांगने वाला (२०) नशा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह सदा आती है रफ़्तारे समन्दे उम्र[१] से।
वह भी घोड़ा है कोई जिसको कि कोड़ा चाहिये॥
बाग़बाँ से छिप के गुल चीनी[२] जो की तो क्या किया।
आँख़ बुलबुल की बचा कर फूल तोड़ा चाहिये॥
इश्क़ को मुश्किल पसन्दी[३] से हुआ यह आशकार[४]।
ख़ूबसूरत को ग़रूरे हुस्न[५] थोड़ा चाहिये॥
पीर[६] हो आतश कफ़न का सामना है अनक़रीब[७]।
तोबा कीजे दामने तर[८] का निचोड़ा चाहिये॥

× × ×

मगर[९] उसको फ़रेबे नरगिसे मस्ताना[१०] आता है।
उलटती हैं सफ़ें[११] गरदिश में जब पैमाना[१२] आता है॥
निहायत दिल को है मरग़ूब बोसा ख़ाले मुश्कीं[१४] का।
दहन[१५] तक अपने कब तक देखिये यह दाना आता है॥
खुशी से अपनी रुस्वाई[१६] गवारा हो नहीं सकती।
गरेबाँ फाड़ता है तंग जब दीवाना आता है॥
फ़िराक़े यार में दिल पर नहीं मालूम क्या गुज़री।
जो अश्क आँखों में आता है सो बेताबाना[१७] आता है॥

---

(१) आयु के घोड़े की चाल (२) फूल तोड़ना (३) कठिनांई का प्रिय होना (४) प्रकट (५) सौंदर्य का घमन्ड (६) बूढ़ा (७) निकट (८) पाप से सना हुआ वस्त्र (९) शायद (१०) मस्त आंखों का सा धोखा देना (११) पंक्तियाँ (१२) बोतल (१३) पसन्द (१४) काला तिल (१५) मुँह (१६ वदनामी (१७) वहुत तेजी से।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बगोले की तरह किस-किस .खुशी से ख़ाक उड़ाता हूँ।
तलाशे गंज[1] में जो सामने बीराना आता है॥

समझते हैं मेरे दिल की वह क्या नाफ़हम व नादां[2] हैं।
हुज़ूरे शमा[3] बे मतलब नहीं परवाना आता है॥

तलब[4] दुनिया की करके ज़न मुरीदी[5] हो नहीं सकती।
ख़याज़े आबरूये हिम्मते मरदाना[6] आता है॥

हमेशा फ़िक्र[7] से यां आशिकाना शैर[8] ढ़लते हैं।
.ज़ुबां को अपनी बस इक हुस्न का अफ़साना आता है॥

तमाशा गाहे हस्ती[9] में अदम का ध्यान है किसको।
किसे इस अंजमन[10] में याद ख़िलवत ख़ाना[11] आता है॥

सबा की तरह हर इक ग़ैरते गुल[12] से हैं लग चलते।
मुहब्बत है सरिश्त[13] अपनी हमें याराना[14] आता है॥

ज़्यारत[15] होगी काबे की यही ताबीर[16] है इसकी।
कई शब से हमारे ख्वाब में बुतख़ाना आता है॥

ख्याल आया है आईना का मुँह उसमें वह देखेंगे।
अब उलझे बाल सुखलाने के ख़ातिर शाना[17] आता है॥

फंसा देता है मुर्ग़े दिल को दामे .ज़ुल्फ़े पेचां[18] में।
तुम्हारे ख़ाले रूख़[19] को भी फ़रेबे दाना[20] आता है॥

---

(१) ख़ज़ाने की तलाश (२) नासमझ (३) शमा के सामने (४) चाह (५) सुन्दरियों का प्रेम (६) पुरुषोचित स्वभाव का ध्यान (७) कल्पना (८) शृङ्गार रस की कवितायें (९) जीवन के खेल का मैदान (१०) चहल पहल (११) एकांत (१२) फूल की लज्जा (१३) आदत (१४) मित्रता (१५) दर्शन (१६) फल (१७) कंघी (१८) पेचदार बालों का जाल (१९) मुँह पर का तिल (२०) दाना का सा धोखा देना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अताब व .ज़ुल्म[1] जो फ़रमाओ हर सूरत[2] से राज़ी हैं ।
शिकायत से नहीं वाक़िफ़[3] हमें शुकराना[4] आता है ॥

.खुदा का घर है बुतख़ाना हमारा दिल नहीं आतश ।
मुक़ामे आशना है यां नहीं बेगाना आता है ॥

× × ×

जां बख़्श[5] लब के इश्क़ में ईज़ा उठाइये ।
बीमार होके नाज़ मसीहा[6] उठाइये ॥
अब की बहार में जो हमें ले चले जुनूं ।
चुन चुन के दाग़ लालये सहरा[7] उठाइये ॥
ख़ामा[8] से काम लीजिये हंगामे फ़िक्र शैर[9] ।
मैदाने कारज़ार[10] में घोड़ा उठाइये ॥
दिखलाये हुस्न यार का जलवा[11] हमें जो इश्क़ ।
किस किस तरह से लुत्फ़ तमाशा[12] उठाइये ॥
तुझ सा हसीं हो यार तो क्योंकर न उसके फिर ।
नाज़े बजा व ग़मज़ये बेजा[13] उठाइये ॥
मुफ़लिस[14] हूँ लाख पर यही दिल को बंधी है धुन ।
यूसुफ़ को क़र्ज़ लेके तक़ाज़ा उठाइये ॥
सख्तीये राह[15] खींचिये मंज़िल के शौक़ में ।
आराम की तलाश में ईज़ा उठाइये ॥

(१) क्रोध व अत्याचार (२) प्रकार (३) परिचित (४) धन्यवाद (५) प्राणदायक (६) चिकित्सक के नख़रे (७) जङ्गल के फूल का दाग़ (८) क़लम (९) कविता के विषय में सोचते समय (१०) लड़ाई के मैदान (११) प्रकाश (१२) तमाशा का आनन्द (१३) उचित व अनुचित नख़रे (१४) ग़रीब (१५) राह की कठिनाई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़स्ले बहार आई पियो सूफ़ियो शराब।
बस हो चुकी नमाज़ मुसल्ला[1] उठाइये॥
आवाज़ को सुना के किये कान मुस्तफ़ीज़[2]।
रहम आंखों पर भी कीजिये पर्दा उठाइये॥
शमशीर ज़न[3] हो यार बहादुर जवान हो।
आतश जेहाद[4] इश्क़ पर बीड़ा उठाइये[5]॥

× × ×

दहन[6] पर हैं उनके गुमां[7] कैसे कैसे।
कलाम[8] आते हैं दरमियां कैसे कैसे॥
ज़मीने चमन[9] गुल खिलाती है क्या क्या।
बदलता है रंग आस्मां कैसे कैसे॥
तुम्हारे शहीदों[10] में दाख़िल हुए हैं।
गुल व लाला व अरग़ंवा[11] कैसे कैसे॥
अजब[12] क्या छुटा रूह से जामये तन[13]।
लुटे राह में कारवां कैसे कैसे॥
तपे हिज्र[14] की काहिशों[15] ने किये हैं।
जुदा पोस्त[16] से इस्तख़्वां[17] कैसे कैसे॥
न मुड़ कर भी बेदर्द क़ातिल ने देखा।
तड़पते रहे नीम जां[18] कैसे कैसे॥

---

(१) वह कपड़ा जिस पर नमाज़ पढ़ते हैं (२) लाभपाये हुए (३) तलवार चलाने वाले (४) धार्मिक लड़ाई (५) तैयारी कीजिये (६) मुँह (७) संदेह (८) बात (६) बाग़ की भूमि (१०) मारे हुए (११) रङ्ग बिरंगे फूल (१२) आश्चर्य (१३) शरीर रूपी कपड़ा (१४) विरह की गर्मी (१५) कष्टों ने (१६) खाल (१७) हड्डी (१८) घायल।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न गोरे सिकंदर[१] न है क़ब्र दारा[२]।
मिटे नामियों के निशां कैसे कैसे॥
बहारे गुलिस्तां की ही आमद आमद[३]।
.ख़ुशी फिरते हैं बाग़बां कैसे कैसे॥
दिल व दीदये अहले आलम[४] में घर है।
तुम्हारे लिये हैं मकां कैसे कैसे॥
ग़म व गुस्सा व रंज व अन्दोह[५] व हुरमां[६]।
हमारे भी हैं मेहरबां कैसे कैसे॥
करे जिस क़दर शुक्र न्यामत[७] वह कम है।
मजे लूटती है .ज़ुबां कैसे कैसे॥

× × ×

सांप का ज़हर वह गेसू[८] हैं उगलने वाले।
आहुए चश्म[९] छलावे[१०] को हैं छलने वाले॥
कुश्ता[११] हम भी तेरी नैरंगी[१२] के हैं याद रहे।
ओ ज़माने की तरह रङ्ग बदलने वाले॥
कशिशे इश्क़[१२] में बारे[१३] असर इतना तो हुआ।
फिर खड़े होते हैं मुंह फेर के चलने वाले॥
गोश ज़द[१४] हो तो कहीं कोस सफ़र[१५] की आवाज़।
चल खड़े होंगें कमर बांध के चलने वाले॥

(१व२) बादशाहों के नाम (३) आने की तैयारी (४) संसार वालों की आँख व दिल (५) व (६) दुःख (७) देनों के लिये धन्यवाद (८) बाल (९) हिरनों की जैसी आँख (१०) धोखा (११) मारे हुए (१२) विभिन्नता (१३) आख़िर (१४) कान में पड़ना (१५) यात्रा के बाजे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाग़ आलम[1] में यही अपनी दुआ है हर सुबह।
रहें सर सब्ज़[2] शजर[3] फूलने फलने वाले॥
उनसे कह दो नहीं आहिस्ता जो रखते दो गाम[4]।
गिर भी पड़ते हैं बहुत दौड़ के चलने वाले॥
बस क़लम सफ़हये हस्ती[5] से उठा ए आतश।
ढल चुके शैर जो थे फ़िक्र से ढलन वाले॥

× × ×

हवाये दौर मये खुशगवार[6] राह में है।
ख़िज़ां चमन से है जाती बहार राह में है॥
गदा नवाज़[7] कोई शहसवार[8] राह में है।
बलन्द आज निहायत ग़ुबार राह में है॥
शबाब[9] तक नहीं पहुँचा है आलमे तिफ़ली[10]।
हुनूज़[11] हुस्न जवानीये यार राह में है॥
अदम के कूच की लाज़िम है फ़िक्र हस्ती में।
न कोई शहर न कोई दयार[12] राह में है॥
तरीक़े इश्क[13] में ए दिल असाये आह[14] है शर्त।
कहीं चढ़ाव किसी जा[15] उतार राह में है॥
समन्दे उम्र[16] को अल्ला रे शौक़ आसाइश[17]।
अनान गश्ता[18] व बे अख़्तियार[19] राह में है॥

× × ×

(१) संसार (२) हरे भरे (३) पेड़ (४) दो पग (५) जीवन पृष्ठ (६) मस्त शराब का नशा (७) फ़क़ीरों को दान देने वाले (८) यात्री (९) जवानी (१०) लड़कपन (११) अभी तक (१२) देश (१३) प्रेम का ढंग (१४) आह रूपी डंडा (१५) जगह (१६) उम्र का घोड़ा (१७) आराम की इच्छा (१८) ढीली लगाम (१९) बे क़ाबू।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तलाशे यार में क्या ढूंढ़िये किसी का साथ।
हमारा साया हमें नागवार राह में है॥

सफ़र है शर्त मुसाफ़िर नवाज़ बहुतेरे।
हज़ारहा शजर सायादार[२] राह में है॥

कोई तो दोश[३] से बारे सफ़र[४] उतारेगा।
हज़ार राहज़न[५] उम्मीदवार राह में है॥

मुक़ाम तक भी हम अपने पहुँच ही जायेंगे।
ख़ुदा तो दोस्त है दुश्मन हजार राह में है॥

बहुत सी ठोकरें खिलवायेगा यह हुस्न उनका।
बुतों का इश्क़ नहीं कोहिसार[६] राह में है॥

बलाये जान मुसाफ़िर[७] है ख़्वाबे शीरीं[८] भी।
यही वह शहद है जो ज़हर मार[९] राह में है॥

तरीक़े इश्क़ का सालिक[१०] है वाअज़ों[११] की सुन।
ठगों के कहने का क्या एतबार राह में है॥

पयादा पा[१२] हूँ ख़ां[१३] सूये कूचये क़ातिल[४१]।
अजल[१५] मेरी मेरे सर पर सवार राह में है॥

थकें जो पांव तो चल सर के बल न ठहर आतश।
गुले मुराद[१६] है मंज़िल में ख़ार राह में है।

× × ×

---

(१) यात्रियों को आराम देने वाले (२) हज़रों साया दार पेड़ (३) कंघा (४) यात्रा का सामान (५) डाकू (६) पहाड़ (७) यात्री की जान की मुसीबत (८) मीठे स्वप्न (९) ज़हर फैलाने वाली (१०) चाहने वाला (११) उपदेशक (१२) पैदल (१३) चलता फिर[illegible] की ओर (१५) मौत (१६) अभिलाषाओं का फल

SPS
891.431 D 96 AA

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE